स्वाधीनता का संग्राम

[छ रूपको मे आजादी की लडाई का इतिहास]

विष्णु प्रभाकर

सूर्य प्रकाशन मंदिर
बीकानेर

स्कूल में पढ़नेवाले
अपने बालमित्रों
को

निवेदन

आज हमारा देश स्वाधीन है। यह स्वाधीनता हमे ऐसे ही नही मिल गई है। इसके लिए हमारे देशवासियो ने वर्षो घोर सघर्ष किया है। इस पुस्तक म उसी सघर्ष की कहानी है। यह सच्चे अर्थो म तो इतिहास नही है, परन्तु उस गौरवमय इतिहास की झाँकी अवश्य है। जैसा कि स्पष्ट है, यह झाकी रूपक के रूप मे प्रस्तुत की गई है, वह भी रेडियो रूपक के रूप म। रेडियो रूपक की एक सीमा होती है। उसका सम्बन्ध केवल शब्द से होता है। उसमे दिखाया कुछ नही जाता, सब कुछ कहा जाता है और इस प्रकार कहा जाता है कि सुनने वालो पर उसका उचित प्रभाव पडे। ये रूपक इसी प्रकार के है। नाटक से ये बिलकुल भिन्न हैं। इसीलिए इनम सूत्रधार की भरमार है और रगमच के लिए निर्देश नही दिये गये हैं, परन्तु यदि इन्हे रगमच पर खेलना ही हो तो इनमे या तो उचित परिवर्तन किया जा सकता है या सूत्रधार वाला भाग सभव हो सके मूक अभिनय के रूप म दिखाया जा सकता है।

ये रूपक ऑल इण्डिया रेडियो के दिल्ली स्टेशन के लिए लिखे गये थे और उसके स्कूल-विभाग मे अक्तूबर १९४९ से लेकर मार्च १९५० तक छ भागो म प्रसारित किये गये थे। विद्यार्थी-समाज मे इनका विशेष स्वागत हुआ था और उसी स्वागत को देखते हुए इनको पुस्तक के रूप म प्रकाशित किया जाता है। फिर भी कुछ और उचित परिवर्तन सुझावेंगे तो अगले सस्करणो म उन पर अवश्य विचार किया जावेगा।

इन रूपको के लिखने मे जिन ग्रथो से सहायता ली गई है, उनके

लेखको के हम आभारी है, विशेषकर स्व० डा० राजेन्द्रप्रसाद, स्व० प० जवाहरलाल नेहरू, प० सुन्दरलाल, स्व०डा० पट्टाभिसीतारामैया, स्व० प० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, स्व० सर सी०वाई० चितामणि, श्री मन्मथनाथ गुप्त, श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन', स्व० श्री राहुल साकृत्यायन की पुस्तको से हमे बडी सहायता मिली है। युग का प्रतिनिधित्व करने वाले उन दिवगत तथा उन जीवित कवियो के विशेषकर सर्वश्री चिरजीत, गोपालप्रसाद व्यास, शिवसिंह सरोज तथा राजीव सक्सेना के तो हम बहुत कृतज्ञ है, जिनकी कविताएँ इन रूपको मे स्थान-स्थान पर दी गई है।

ऑल इण्डिया रेडियो के दिल्ली स्टेशन, विशेषकर बन्धुवर श्री गोपालदास के तो हम विशेष रूप से आभारी है जिनकी प्रेरणा और सुझाव पर ये रूपक लिखे गये।

और अन्त मे क्या स्वाधीनता-सग्राम के उन असख्य सेनानियो का आभार मानना उचित न होगा जिनके कारण यह गौरवमय इतिहास पुस्तक रूप मे आने का अधिकारी बना? हम उनकी स्मृति को प्रणाम करते है।

—विष्णु प्रभाकर

सूची

प्रथम अंक

[१८५७ तक]

कवि : सिंहासन हिल उठे राजवंशो ने भृकुटी तानी थी
बूढे भारत मे भी आई फिर से नई जवानी थी
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगी को करने की सबने मन मे ठानी थी
चमक उठी सन् सत्तावन मे वह तलवार पुरानी थी
बुन्देले हरबोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी

सूत्रधार : सन् सत्तावन का नाम सुनकर कौन भारतवासी है, जो फडक नही उठता ? कौन है, जिसका मस्तक गर्व से ऊंचा नही उठ जाता, और क्यो न उठे ? उसी वर्ष तो पहली बार पराधीन भारत ने खोई हुई आजादी को प्राप्त करने के लिए, शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार से लोहा लिया था। उसी वर्ष पहली बार बूढे भारत मे नई जवानी उमड उठी थी···और उमड उठी थी अंग्रेजो को देश से निकाल देने की चाह। इस चाह का ही यह परिणाम था कि देश के कोने-कोने से आवाज उठ रही थी।

स्वर १ : आज हम प्लासी का बदला चुकाने वाले है।

स्वर २ : आज हम अंग्रेजी राज्य का नाश करके रहेंगे।

स्वर ३ — आज हम विदेशियों को हिन्दुस्तान की सर-जमीन से निकाल देंगे।

स्वर ४ — आज से हिन्दुस्तान आजाद है। आजाद हिन्दुस्तान की जय! मुगल सम्राट बहादुरशाह की जय!

सूत्रधार — सुनी आपने यह आवाजें। इन्ही आवाजो ने वह क्रान्ति पैदा कर दी थी जिसकी प्रचण्ड ज्वाला मे एक बार तो अंग्रेजी साम्राज्य भस्मीभूत होता जान पडा था—वह अंग्रेजी साम्राज्य जिसकी नीव इस विप्लव से सौ वर्ष पहले प्लासी के युद्ध मे पडी थी। सच तो यह है कि वह साम्राज्य की नीव नही थी, साम्राज्य को नष्ट कर देने वाले विप्लव की नीव थी। अत्याचार के आरम्भ मे ही उसका नाश छिपा रहता है। सन् १७८० मे नाना फडनवीस ने हैदरअली से मिलकर उसी साम्राज्य को नष्ट करने का प्रयत्न किया था और सन् १८०६ का वेलौर विद्रोह भी इसी चाह का प्रमाण था और इस विप्लव का कारण थे ये अत्याचार।

स्वर १ — ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपनी प्रतिज्ञाओ और सन्धि-पत्रो की कभी परवाह नही की।

स्वर २ — उसने बेईमानी, धोखाबाजी और मक्कारी से एक के बाद एक रियासत को अंग्रेजी राज्य मे शामिल किया।

स्वर ३ — उसने असहाय बेगमो और रानियो के महलो मे घुसकर उन्हे लूटा और अपमानित किया।

स्वर ४ — उसने लाखो किसानो को उनकी पुश्तैनी जमीनो से बाहर निकालकर उन्हें बेघर बना दिया।

स्वर ५ — उसने इस देश के प्राचीन उद्योग-धन्धो का नाश कर के लाखो भारतवासियों से उनकी जीविका छीनी।

स्वर ६ — उसने भारतवासियो को ईसाई बनाना अपना ...

बनाया।

स्वर ७ . उसने हर प्रकार देश को पददलित और अपमानित करने की चेष्टा की।

दृश्य एक

(घोडो की टाप)

अंग्रेज ए हिन्दुस्तानी काला आदमी, टुम घोडे पर चढटा है ?

हिन्दुस्तानी . क्यो ! क्यो न चढ़ें ? घोडा चढने के लिए होता है।

अंग्रेज टुम इस माफिक बोलता है ! टुम घोडे पर नही चढने सकटा। टुम नही चढने सकटा। उटरो।

हिन्दुस्तानी मैं नही उतरूँगा।

अंग्रेज . क्या बोलना माँगटा है, नही उटरेगा ?

हिन्दुस्तानी नही।

अंग्रेज (क्रोध) नही, टुम्हारा इटना मजाल, टुम नही उटरटा! हम टुम्हारा हन्टर से खाल उटार देगा। (हन्टर से पीटता है। हिन्दुस्तानी चिल्लाता है। भीड इकट्ठी होती है)

हिन्दुस्तानी ओ · ओ···क्या करता है ? हाय···हाय···! मार डाला। माफ करो। अभी उतरता हूँ।

अंग्रेज · (अट्टहास) अभी उटरटा है। (हंसी) देखा ··(और दूसरे आदमी से) टुम बन्दर की माफिक क्या देखटा है ? टुमने हमको सलाम किया ?

हिन्दुस्तानी २ सलाम, हुजूर सलाम।···

अंग्रेज (तीसरे से) और टुम नहीं बोलटा ! गूगा है·· ए क्या उल्लू की माफिक टाकटा है ? ठहरो ··
(हन्टर चलाता है। हिन्दुस्तानी चिल्लाता है)

हिन्दुस्तानी ३ . हुजूर सलाम। हुजूर, माफ कर दें···हुजूर ··हुजूर

अंग्रेज — सलाम…हुजूर सलाम…

(अट्टहास) टुम लोग शैटान है, पिटकर आदमी बनना माँगटा है। कोई डर नहीं, हम टुमको आदमी बनाकर रहेगा…अपने माफिक आदमी…देखो, हमने टुमारे वास्टे होस्पीटल, समझा हस्पटाल, जहाँ बीमारो का दवा होटा है, बनाया है। अब टुम लोग इधर इलाज कराना माँगटा है?

हिन्दुस्तानी — हुजूर, हम लोग तो हकीम और वैद्य से दवा लेते है।

अंग्रेज — नही नही, वह सब बन्द होगा। अब टुम सबको इसी अस्पटाल से दवा लेना होगा, टुम सबको, टुम्हारा औरत लोग को भी।

हिन्दुस्तानी — क्या…क्या?…हमारी औरतें यहाँ आएँगी?

अंग्रेज — हाँ, सब लोग आएगा।

हिन्दुस्तानी — नहीं-नहीं, यह नहीं होगा।

अंग्रेज — यही होगा और जरूर होगा। (जाता है)

हिन्दुस्तानी १ — कैसे होगा? हम हस्पताल मे कभी नही आएँग।

हिन्दुस्तानी २ — हाँ, कभी नही आएँगे। यह हमें ईसाई बनाने का षड्यन्त्र है।

हिन्दुस्तानी ३ — इस अस्पताल को बन्द करो। हम ईसाई नही बनेंग।

समवेत स्वर — इसे बन्द करो ‥अभी बन्द करो ‥हम इसे तोड देंगे।

(कोलाहल)

सूत्रधार — इस प्रकार अंग्रेजो के अत्याचार बढ़ने थे और उनके साथ ही विद्रोह के स्वर भी बढ़ने थे। अंग्रेजी राज्य बढ़ना था, अंग्रेजों का हौसला भी बढ़ता था। जो अंग्रेज मुगल सम्राट् के फिदवी-ए-खास थे, जो उसे सदा खिराज देते रहे और साधारण दरबारियों की तरह आदाब बजा लाते रहे, उन्हीं अंग्रेजों के [illegible]

लार्ड वेल्सली ने शाह आलम के सामने एक तजवीज रक्खी।

दृश्य दो

वजीर — जहापनाह ! कम्पनी के गवनर लार्ड वेलसली ने कुछ तजवीजें भेजी हैं।

शाह आलम — कैसी तजवीजें ? हम सुनना चाहते हैं।

वजीर — (अटकता है) जहांपनाह !

शाह आलम — क्यो क्या बात है पढते क्यो नहीं ?

वजीर — जहांपनाह ! गुस्ताखी माफ हो। गवर्नर वेलसली ने लिखा है कि जहापनाह और शाही दरबार को…

शाहआलम — फिर रुके जहांपनाह और शाही दरबार

वजीर — हुजूर जहांपनाह गवर्नर जहांपनाह और शाही दरबार को मुंगेर के किले में रहने की तजवीज करते हैं।

शाह आलम — (कापकर) क्या कहा ? हम दिल्ली मे नही रहेंगे ? मुगेर मे रहेगे

वजीर — खता माफ हो जहापनाह। यह गवर्नर की तजवीज है।

शाह आलम — (अतिशय क्रोध से) गवनर की तजवीज गवर्नर मुझे दिल्ली से हटाना चाहता है ! गवर्नर मुगलिया सल्तनत को दारउल-खिलाफे से हटाना चाहता है ! गवर्नर हिन्दुस्तानी हुकूमत पर कब्जा करना चाहता है ! जो दिल्ली मे हुकूमत करता है वह हिन्दुस्तान पर हुकूमत करता है। नही नही यह कभी नही होगा। मैं बूढा हूँ तो क्या, मेरी रगो मे तैमूरी खून भरा हुआ है। मैं दिल्ली से बाहर नही जाऊँगा। यह मेरी बेइज्जती है, यह हिन्दुस्तान के बादशाह की बेइज्जती है।

सूत्रधार — तजवीजो को फाडकर फेंक दो और और और ·
बूढा बादशाह क्रोध से पागल हो उठा। लार्ड वेलसली को अपनी तजवीज वापस लेनी पडी, परन्तु उसके बाद अकबर शाह और बहादुरशाह के समय मे बादशाही स्वय एक बेइज्जती बन गई। अग्रेजो ने मिरजा कोयास को गद्दी पर बैठाने का वादा इन शर्तों पर किया।

अग्रेज का स्वर १ — तुम्हे बादशाह नहीं, शाहजादा कहा जाया करेगा।

अग्रेज का स्वर २ — तुम्ह दिल्ली का किला खाली करना होगा।

अग्रेज का स्वर ३ — तुम्ह एक लाख के स्थान पर पन्द्रह हजार मासिक मिलेगा.

सूत्रधार — और यही क्यो, अवध के अपहरण की कहानी सुनकर आज भी हृदय कांप उठता है। नाना साहब और रानी लक्ष्मीबाई के साथ की गई गद्दारी की याद करके आज भी आँखों मे खून उतर आता है। निस्सदेह अपराध हमारा भी था। हम अपने को भूल गए थे। ऐश्वर्य और विलास ने, ईर्षा और द्वेष ने अंधा कर दिया था। पर जिस धोखेबाजी और मक्कारी से अग्रेजो ने अवध, सितारा, पन्ना, झांसी, नागपुर, पगू, सिक्कम और सम्बलपुर इत्यादि का अपहरण किया, राजमहलो को लूटा, बेगमो और रानियों का अपमान किया, उसकी ससार मे कोई मिसाल नहीं है।

कवि — रानी रोई रनवासों म बेगम गम स थीं बेजार
उनके गहने कपडे बिकते थ कलकत्ते के बाजार
सरे आम नीलाम छापते थे अंग्रेजो के अखबार
नागपूर के जेवर ले लो, लखनऊ का लो नौलखहार
यों परदे की इज्जत परदसी के हाथ बिकानी थी।
बुन्देले हरबोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी।

सूत्रधार : ऐसी हालत मे यदि किसी का रक्त न उबल उठे तो वह इंसान इंसान नहीं हो सकता, वह पशु भी नही हो सकता, वह कुछ भी नही हो सकता। वे हमारी रोटी छीन लेते और हम देखते रहते! वे स्पंज की तरह गंगा के किनारे से धन खींचकर उसे टेम्स नदी के किनारे निचोड देते और हम बोलते भी नहीं! वे हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ईसामसीह का विजयी झंडा फहराने की योजना बनाते और हम स्वीकार कर लेते! (स्वयं उन्ही के शब्दो मे)

अंग्रेज का स्वर : निस्संदेह यदि इस तरह की हालत मे अंग्रेजो के विरुद्ध भारतवासियो के भाव न भडक उठते तो भारतवासियो को मनुष्यत्व से गिरा हुआ कहा जाता।

सूत्रधार : निस्सन्देह सन् सत्तावन मे भारतवासी मनुष्यत्व से इतना गिरे हुए नहीं थे। उन्होंने अंग्रेजो को चुनौती स्वीकार की और विद्रोह का बिगुल बजा दिया। इस विद्रोह की योजना का जन्म नानासाहब के नगर बिठूर मे हुआ। लन्दन में उस पर अमल करने के उपाय सोचे गए। सेठ-साहूकारो ने उसके लिए थैलिया खोल दी। बैरकपुर से पेशावर तक, लखनऊ से सतारा तक हजारो राष्ट्रीय फकीर और सन्यासी घूम-घूम कर एक-एक ग्राम और एक एक पलटन में स्वाधीनता के युद्ध का प्रचार करने लगे और उसके नेता बने।

स्वर १ : राजनीति के प्रसिद्ध खिलाडी नाना साहब, धुंधुपन्त पेशवा, रंगोजी बापू और अजीमुल्ला खां।

स्वर २ : वीरता की अनुपम प्रतिमाएं रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, शाहजादा फीरोज और राव साहब।

स्वर ३ — मुगल सम्राट् बहादुरशाह और उनकी बुद्धिमती मलिका जीनत महल।

स्वर ४ — बायें हाथ से दाहिने हाथ को काटकर हरे झडे की शान रखनेवाला बूढ़ा कुँवरसिंह।

स्वर ५ — क्रांति का अवतार अवध की बेगम हजरत महल और वजीर आला अली नक्की।

स्वर ६ — जबान का जादूगर, शोले उगलने वाला जनता का प्यारा नेता अहमदशाह।

स्वर ७ — और वे अनगिनत देश-दीवाने, जिनका नाम कोई नहीं जानता, पर जिनका काम कण-कण मे भासमान् है।

स्वर ८ — और वे अगनित नारियाँ, जिन्होंने आत्म-समर्पण करने के स्थान पर तोप से उड जाना अच्छा समझा।

सूत्रधार — और इस क्रांति के चिह्न थे कमल और चपाती। कमल सेना मे सन्देश पहुँचाता था और रोटी गाँव मे। यानी सिपाही की स्वीकृति मिलती थी रक्तवर्ण कमल से और जनता की रोटी से। कितने सार्थक चिह्न थे इस क्रांति के। ३१ मई सन् १८५७ को इस क्रान्ति का आरम्भ होना था, परन्तु गाय और सूअर की चरबी से सने हुए कारतूसो के कारण क्रांति उस दिन का इन्तजार न कर सकी और शायद सफलता भी इसीलिए रुकी नही रही। फरवरी मे बैरकपुर मे नये कारतूस बाटे गए। सिपाही उनका रहस्य जानते थे। वे बिगड उठे, परन्तु नेताओ ने उन्हें मई तक रुकने की सलाह दी। उन सिपाहियो म एक सिपाही था मगल पाडे। वह अपने को अधिक न रोक सका और २९ मार्च को जब पल्टन परेड को बुलाई गई तो वह चिल्ला उठा।

दृश्य तीन

पांडे : साथियो, क्या तुम कारतूसो की कहानी नही जानते हो ? क्या तुम अपने धर्म का अपने हाथो से नाश करना चाहते हो ? क्या तुम नही जानते कि अंग्रेज तुम्हें ईसाई बनाना चाहते है ? तुम कब तक राह देखते रहोगे ? धर्म जब एक बार नष्ट हो जाएगा तो फिर क्या होगा ? तुम आगे बढो और अंग्रेजो को इस देश से बाहर कर दो। भाइयो, उठो। देखते क्या हो ? तुम्हारे धर्म पर जहाद बोला गया है। तुम उन जहादियो को नेस्तनाबूद कर दो।

ह्यूसन . क्या है ? टुम इस माफिक क्यो शोर करटा है ?

पांडे . मैं शोर नही करता। *युद्ध का बिगुल बजाता हूँ।*

ह्यूसन . युद्ध ? टुम हमसे युद्ध करेगा ? टुम बागी है। सिपाहियो, इसे गिरफ्टार कर लो। (शान्ति) क्या टुमने सुना नही ? हम बोलटा है, इसे गिरफ्तार कर लो (शान्ति) टुम नही सुनटा ? क्या टुम···

पांडे : (हँसकर) ये नहीं सुनेंगे सार्जेंट साहब। मैं सुनूगा और सुनाऊँगा भी। सुनिये, अब आपका वक्त आ गया। खबरदार, होशियार··· (फायर करता है)

ह्यूसन : (गोली खाकर गिरते गिरते) आह···आह···धोखा··· धोखा···बागी···पकडो ··अह···अह (मृत्यु, शोर और भगदड)

बाघ : *(भागता आता है) क्या है ? किसने फायर किया ?*··· सारजेन्ट मेजर ह्यूसन···टुमको मार डाला···ठहरो··· पकडो···पकडो···

पांडे : (अट्टहास) लेफ्टीनेन्ट साहब, तुम भी आ गए। खूब !

तो लो, तुम भी लो (फायर)।

बाघ : ओ···ओ···हाय···बगावत ··· पकड़ो······दौड़ो···
(संभल कर) ठहर···(पिस्तौल चलाता है)।

पांडे : (अट्टहास) पिस्तौल चलाते हो ? तुम नहीं बच सकते।
लो, संभलो (फायर)।

तीसरा अंग्रेज : ओ·· ओ·· क्या करता है ? ठहर···

पांडे : ठहर। तू ले···(फायर)।

तीसरा अंग्रेज : अह···आ···आ···अभी गोरे सिपाहियों को बुलाओ···
गोरे·· सि···पा···ही···(मृत्यु)।
(गहरा शोर। गोरे सिपाहियों का आना)

ह्वीलर : पकड़ो, इसे गिरफ्तार कर लो। यह बागी है···डाकू
है···पकड़ो···

पांडे : (हँसी) मुझे पकड़ोगे ? मैं एक और तुम इतने, पर
फिर भी तुम मुझे नहीं पकड़ सकते। (फायर)।

ह्वीलर : उसने फायर किया ··पकड़ो···वह गिरने न पाए।
वह बागी है। हम उसे फांसी पर लटकायेगा···(गहरा
शोर, शान्ति)।

शाम को जब वे बाजार गए…

दृश्य चार

(नारियों के स्वर उठते हैं)

स्त्री १ : देखो-देखो, बहन, ये सिपाही सैर करने आये हैं।

स्त्री २ : हाँ हाँ, देख रही हूँ। ये बड़े बहादुर है! अपने भाइयो को जेल भेजकर आए हैं!

स्त्री ३ : क्यों न भेजते? ये ठहरे स्वामिभक्त, कर्तव्य-परायण और वे देशभक्त बागी!

स्त्री १ : छि-छि, तुम्हारे भाई जेल मे है और तुम बाजार मे मक्खियाँ मार रहे हो!

स्त्री २ : लाओ, ये बन्दूकें हमे दो। हम जिन हाथो से मूसल उठाती हैं, उन्ही से बन्दूक भी उठा सकती हैं।

स्त्री ३ : उठा ही नही, चला भी सकती हैं और चलाएँगी भी।

सिपाही १ : नही-नहीं, अब नही सहा जाता। मैं नही रुक सकता।

सिपाही २ : मैं भी नही। मैं ३१ मई तक नहीं रुकूँगा।

सिपाही ३ : तो फिर सोचते क्या हो? विद्रोह का बिगुल बजा दो और हिन्दुस्तान की सर-जमीन से अंग्रेजो को निकाल दो।

सूत्रधार : और यही हुआ। दस मई तक विद्रोह फूट पड़ा। 'दीन-दीन', 'हर-हर महादेव', 'मारो फिरंगी को' की आवाज से भारत का आकाश काँप उठा। आवाजो का शोर बराबर उठता रहा। तार काट डाले गये। रेल की पटरियाँ उखाड दी गईं। अंग्रेजो की चुन-चुनकर हत्या कर दी गई और फिर वे लोग दिल्ली की ओर चले। उन्होने मुगल-सम्राट् बहादुरशाह को एक बार फिर हिन्दुस्तान का बादशाह घोषित कर

२१ तोपो की सलामी दी।

दृश्य पाँच

(तोपो की आवाज)

(भीड का स्वर, नारा का स्वर)

एक सिपाही : आप हिन्दोस्तान के बादशाह हैं। हम आपके सिपाही है। हमे हुकम दीजिये। हम अंग्रेजो को हिन्दुस्तान की सर जमीन से बाहर निकाल दें।

दूसरा सिपाही : हाँ हमे आपके हुक्म की जरूरत है। बस, फिर देखिये, एक भी गोरा हिन्दुस्तान मे दिखाई नही देगा।

बादशाह (बूढा) : मैं आप सबका इस्तकबाल करता हूँ। मुझे खुशी है, हिन्दुस्तान फिर आजाद होने वाला है, लेकिन मेरे पास कोई खजाना नही है। मैं आप लोगो को तनखाह कहाँ से दूँगा।

सिपाही : खजाने की चिन्ता आप न करें। हम हिन्दुस्तान भर के अंग्रेजो के खजाने ला-लाकर आपके कदमो मे डाल देंगे।

बादशाह : लेकिन...

सिपाही : हुजूर! आप कतई फिकर न करें। सब कुछ तैयार है। सिर्फ आपका हुक्म मिलने की देर है। आप हिन्दुस्तान के बादशाह है। आप इशारा कीजिये। आपके साथ दगा करने वाले का निशान भी बाकी नही रहेगा।

बादशाह : तो तो जो खुदा को मजूर है, वही होगा। मैं तुम्हारे साथ हूँ।

समवेत स्वर : सम्राट् बहादुरशाह की जय। अँग्रेजी राज्य की जय। सम्राट् बहादुरशाह की जय! अँग्रेजी राज्य की क्षय..
चलो चलो, अब सारे देश मे आग लगा दो। मेरी

नही किया। हैदराबाद के पास जोरारपुर का बालक राजा, टेलर नामक एक अंग्रेज को बहुत मानता था और उसे अप्पा कहकर पुकारता था। राजा विद्रोही था। वह पकडा गया तो अधिकारियो ने भेद लेने के लिए टेलर को उसके पास भेजा।

टेलर : जो कुछ हुआ, उसे भूल जाओ। मैं तुम्हे सलाह देता हूँ, तुम रेजीडेन्ट से मिलो और सब बातें उसे बता दो।

राजा : नही अप्पा, मैं यह कभी नही बताऊँगा। मैं उसके पास नही जाऊँगा। नही अप्पा, मैं दूसरे की भिक्षा पर कायर की तरह जीना नही चाहता और न मैं कभी अपने देशवासियो के नाम बताऊँगा।

टेलर : सोच लो राजा, फिर सोच लो। अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हें क्षमा कर दिया जायगा।

राजा : क्या। अब मैं मौत के मुँह मे जाने को तैयार हूँ। क्या मैं विश्वासघात करके अपने देशवासियो के नाम प्रकट करूँगा? नही-नही अप्पा! तोप, फाँसी, कालापानी, इनमे से कोई भी इतना भयकर नही, जितना विश्वासघात।

टेलर : तुम्हारा यही फैसला है?

राजा : हाँ, अप्पा।

टेलर : तो···तो ··

राजा : तो क्या अप्पा?

टेलर : तो तुम्हें फाँसी होगी। (करुण स्वर)

राजा : तो क्या डर? ···किन्तु अप्पा!

टेलर : हाँ!

राजा : मुझे एक प्रार्थना करनी है।

टेलर : प्रार्थना? ···क्या ··क्या ··तुम···

राजा : (हँसकर) नहीं अप्पा! मैं रेजीडेंट के पास नही जाऊँगा। मेरी प्रार्थना तो यह है मुझे फाँसी न देना। मैं चोर नही हूँ। मुझे तोप के मुँह से उड़ाना। फिर देखना कि मैं कितना शान्ति के साथ तोप के मुँह पर खडा रह सकता हूँ।

सूत्रधार : और राजा ने कुछ भेद नहीं बताया। टेलर उसे प्रेम करता था, इसलिए उसे फाँसी तो नही, परन्तु काला-पानी की सजा हुई; पर उस बहादुर राजा ने पिस्तौल से अपने प्राण आप ही समाप्त कर डाले। मर गया, परन्तु वीरता को अमर कर गया। इसी प्रकार अजी-मुल्ला, कुँवरसिंह, अहमद शाह, वीरता और शहादत का गौरव बढाते हुए अमर हो गए। नाना नेपाल के जंगलो मे चला गया, परन्तु अन्त तक वह यही कहता रहा . अग्रेजो को मेरे भाग्य का निर्णय करने का कोई अधिकार नही है। बेटो को फाँसी पर चढाकर रगोजी पत कहाँ गया, कोई नही जानता। बेगम हजरत महल सन् १८५८ के बाद भी युद्ध का बिगुल बजाती रही और अन्त मे बेटे के साथ उसे नेपाल दरबार ने शरण दी। देश मे शान्ति छा गई, परन्तु शाहजादा फीरोज और राव साहब के साथ तात्या टोपे अग्रेजो से लुका-छिपी खेल खेलता रहा। स्वय अग्रेजो को कहना पडा :

स्वर : ससार की किसी भी सेना ने कभी कही पर इतनी तेजी के साथ कूच नही किया, जितनी तेजी के साथ कि भारतीय सेना इस समय कूच कर रही थी।

सूत्रधार : अन्त मे थककर जब वह नर्मदा पार करके अपने देश मे सहायता के लिये गया तो मानसिंह ने विश्वासघात करके उसे अग्रेजो के हाथ सौंप दिया और १८ अप्रैल

१८५९ को उस अद्भुत वीर को, ऐसे अनोखे देशभक्त को फाँसी पर लटका दिया गया। उसी दिन···

दृश्य नौ

(धीमी करुण आवाजें)

स्वर १ : चुप-चुप, उधर देखो।
स्वर २ : कितनी सेना है। आज भी वह उससे डरते हैं।
स्वर ३ : वह काल है। मरकर भी उन्हें नहीं छोड़ेगा।
स्वर ४ वह देखो वह आया ··वह आया, हमारा देवता, हमारा आत्मा, हमारा दोस्त· ·
स्वर १ · वह हमारा, हमारा रखवाला, हमारी आजादी का रखवाला।
स्वर २ · देखो, कैसे झूम रहा है।
स्वर ३ अरे-अरे, वे उसकी बेड़ी काट रहे है
स्वर ४ अहा, वह हँस रहा है।···वह चला···उसने फाँसी का फंदा ·हरे राम ··हरे राम—फिरंगी का नाश हो··· फिरंगी का नाश हो ··फिरंगी का नाश हो···(रोतेहैं)
स्वर १ शांत, भाइयो, रोओ मत, स्वर्ग का देवता स्वर्ग जा रहा है। उसे प्रणाम करो।
समवेत स्वर प्रणाम ! · प्रणाम ! आजादी के दीवाने, प्रणाम···। प्रणाम ! गरीबो के रक्षक, तुम्हें बार-बार प्रणाम !
सूत्रधार तात्या ! हाँ, तात्या यानी जो बड़ा था, जो सबसे प्रतिभावान् था, वह भी गया। शाहजादा फीरोज कई साल तक भटकता रहा, फिर अरब चला गया। सन् १८६६ तक वह वहाँ देखा गया। रावसाहब सन् १८६२ मे पकड़े गए और कानपुर मे उन्होने भी फाँसी के फंदे को हँसते-हँसते गले मे डाल लिया। उनके साथ ही उस

द्वितीय अंक

(१८५७ से १९१८ तक)

सूत्रधार : १८५७ की क्रान्ति मद्धम पड गई, पर उस ज्वाला मे से राष्ट्रीयता की जो ज्योति फूटी, वह निरन्तर तेज होती गई। बदले की भावना से प्रेरित होकर शासको ने भारतवासियो पर जो अत्याचार किये, उनके कारण देश मे विदेशियो के प्रति घृणा उमड पडी और यही घृणा आगे चलकर हमारे स्वाधीनता-संग्राम की रीढ़ बनी। अंग्रेजो ने इस सत्य को पहचाना और महारानी विक्टोरिया ने कम्पनी का राज्य समाप्त करके स्वयं शासन सँभालते हुए प्रतिज्ञा की

अंग्रेज का
स्वर १ . कि हिन्दुस्तानियो की गोद लेने की प्रथा आइन्दा से जायज समझी जाएगी और दत्तक पुत्रो को पिता की जायदाद और गद्दी का मालिक माना जाएगा।

स्वर २ . कि देशी नरेशो के साथ कम्पनी ने इस समय तक जितनी सन्धियाँ की हैं, उनकी सब शर्तों का आइन्दा ईमानदारी के साथ पालन किया जाएगा।

स्वर ३ : कि किसी के धार्मिक विश्वासो या धार्मिक नीति-नियमो मे किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही किया जाएगा।

स्वर ४ : कि हिन्दुस्तान की कारीगरी को तरक्की दी जायगी

और ऐसे-ऐसे काम बढाये जायेंगे, जिनसे आम जनता को लाभ हो।

सूत्रधार : लेकिन ये सब प्रतिज्ञाएँ ससार की आँखो मे धूल डालने और भोले-भाले भारतीयो को फुसलाने के लिए थी।

(अंग्रेजो का अट्टहास और स्वर उभरता है।)

स्वर १ : बेशक जो मनुष्य पार्लमेंट के हर काम या हर कानूनो पर विश्वास कर लेता है, वह बालक की तरह भोला है।

स्वर २ : बेशक हमारे लिए हिन्दुस्तान का खून निकालना जरूरी है, इसलिए हम उस हिस्से मे नश्तर लगाएँगे, जहाँ खून अधिक है। उस हिस्से मे नहीं, जो खून के अभाव मे कमजोर हो चुका है।

सूत्रधार : और उन्होने यही किया।···

स्वर १ : उन्होने गोरी सेना की सख्या बढा दी और हथियार कानून बनाकर जनता को निहत्था कर दिया।

स्वर २ : उन्होने आसाम और नीलगिरि मे काफी जमीनें देकर गोरो की बस्तियाँ बसाईं।

स्वर ३ : उन्होंने मुसलमानो को पहले दमन और फिर लालच द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलनो से अलग रखा।

स्वर ४ : उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम वि द्वेष की आग जलाने का निरन्तर प्रयत्न किया।

स्वर ५ : उन्होने धर्म मे हस्तक्षेप न करने की प्रतिज्ञा की; पर साथ ही ईसाई धर्म को सच्चा धर्म कहा और उसके प्रचारको को राज्य का आश्रय दिया।

स्वर ६ : उन्होने भारत-भर मे अंग्रेजी भाषा और शिक्षा का प्रचार करके भारतवासियो को भूरे रग का अंग्रेज बनाने का पूरा प्रयत्न किया।

स्वर ७ : उन्होने तरह-तरह के कर, मालगुजारी और अपने देश का माल हम पर थोपकर हमे गरीब और भूखा बना दिया।

(अट्टहास उठता है और व्यग्यपूर्ण स्वर सुनाई देते हैं।)

स्वर १ : बेशक उन्होने हमे भूखो मारा, लेकिन वे भूल गये कि भूख मे से विद्रोह फूटता है।

स्वर २ : बेशक उन्होने हमे अंग्रेजी पढाई, लेकिन वे भूल गए कि इस भाषा ने हमे यूरोप की जागृति का परिचय दिया।

स्वर ३ : इस भाषा ने हमे राष्ट्रीयता और देश-भक्ति का पाठ पढाया।

स्वर ४ : इस जागृति ने हमारे देश मे सुधार-आन्दोलनो को बल दिया।

स्वर ५ : उन आन्दोलनो से हमने अपने उज्ज्वल भूत और बिगडे हुए वर्त्तमान को समझा और एक शानदार भविष्य बनाने मे जुट पडे।

सूत्रधार : बेशक यही हुआ। सन् १८५७ की क्रान्ति से पूर्व राजा राममोहनराय ने जिस ब्रह्म-समाज की स्थापना की थी, वह बगाल द्रुत गति से बढ रहा था। सन् १८६७ मे भण्डारकर और रानडे ने बम्बई मे प्रार्थना-समाज की नीव डाली। सन् १८७५ मे स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। इन आन्दोलनो ने जहाँ धर्म और समाज का नव-निर्माण किया, वहाँ राष्ट्रीयता की ज्योति को भी विकसित किया। स्वामी दयानन्दजी ने कहा

स्वामी दयानन्द का स्वर : कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम है। अपनी प्रजा पर पिता-माता

के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं होता।

सूत्रधार : इसी काल मे एक ओर महाराष्ट्र मे गणेश और शिवाजी-उत्सवो ने जागरण का सन्देश दिया, दूसरी ओर स्वामी विवेकानन्द ने देश और विदेश मे वेदान्त की स्वर-घोषणा की। उनकी मुख्य देन धर्मों का समन्वय है। उन्होंने कहा :

स्वामी विवेकानन्द का स्वर : मेरे सामने भविष्य के पूर्ण भारत की तसवीर है, जो इस अवस्था और सघर्ष से ऊपर उठेगा और जो प्रतिभावान् और अजेय होगा और जिसमे वेदान्त मस्तिष्क और इस्लाम शरीर होगा।

सूत्रधार : जहा एक ओर यह सुधार-आंदोलन और अंग्रेजी शिक्षा राष्ट्रीयता को बल दे रहे थे, वहाँ सन् १८५७ की क्रातिधारा रह-रहकर चमक उठती थी। शाह वली उल्लाह् का बाहवी आन्दोलन सन् १८६३ मे फिर चेता और अनेक नेताओ को जेल और कालापानी पहुँचाकर सन् १८७२ मे समाप्त हुआ। इसी वर्ष पजाब मे कूका विद्रोह फूट पडा। अग्रेजो के अत्याचार से दुखी होकर नामधारी सिक्खो के गुरु रामसिह ने बगावत का झडा ऊँचा कर दिया। उन्होने अग्रेजी शिक्षा, अदालत, रेल, तार और डाक का बहिष्कार किया। उनके कुछ चेलों ने अग्रेजो के किलो पर हमला बोला। उन्हें विजय भी मिली, पर अन्त मे वे हार गये और उनके ६८ सिपाही गिरफ्तार हो गये। लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर मि० कावेन ने उन्हें तोप से उडवा दिया। उस दृश्य की कल्पना करके भी रोमाच हो आता है। एक के बाद एक सैनिक जयनाद करता हुआ तोप के मुँह मे बँध

जाता एक धडाका उठता, हवा मे कुछ धज्जियाँ उडते और बस । उनमे एक तेरह वर्ष का बालक था। उस भोले बच्चे को देखकर कावेन की पत्नी करुणा से भर उठी ।

दृश्य एक

कावेन की पत्नी — कावेन ! क्या तुम इस बालक को भी तोप से उडा दोगे ?

कावेन — हाँ, यह भी तोप से उडाया जावेगा ।

पत्नी — नही-नही, कावेन ! यह अभी बच्चा है । इसे गुमराह किया गया है । इसे माफ कर दो ।

कावेन — नही, यह नही हो सकता । यह बागी है ।

पत्नी — नही-नही प्यारे कावेन इसे माफ कर दो, यह कुछ नही जानता । इससे पूछो तो ।

कावेन — अच्छा, हम पूछता है । अगर यह कह देगा कि यह बागी रामसिंह का पैरोकार नही है तो हम इसे माफ कर देगा । (पुकारकर) सिपाही, इस लडके को इधर लाओ ऐ लडके ।

लडका — कहो, क्या कहते हो ?

कावेन — देखो हमारी मेम साहब को तुम पर दया आता है । तुम अगर कह देगा कि तुम उस शैतान के बच्चे राम सिंह का पैरोकार नही है तो हम तुम्हें छोड देगा ।

लडका — (कडककर) तू मेरे गुरु को गाली देता है,तू उनका अपमान करता है । मुझे छोड दो, मैं अभी इसे बताता हूँ गुरु का अपमान करने का क्या अर्थ है । छोड दो, छोडो मुझे । (जोर लगाकर छूट जाता है)

सिपाही — ठहर, कहा जाता है ! ठहर···अरेरे—पकडो !

पकडो ! यह छुडाकर भागा⋯पकड़ो !

(लडका दौड कर कावेन की दाढी नोचता है)

कावेन : अरे-अरे, पकडो ! यह हमारी दाढी खीचता है ! ओ-ओ पकडो ।

पत्नी : पकडो, पकडो ! यह लडका तो बडा सरकश है ! शैतान का बच्चा⋯

(हटाने पर भी लडका नही हटता)

कावेन : यह नही हटता । इसके हाथ काट डालो । काटो⋯

सिपाही : जो, अभी काटता हूँ⋯यह लो⋯ऐ यह लो⋯(काट देता है)

कावेन : (हाफकर) अब इसे कुत्ते को तोप से उडा दो ! शैतान का बच्चा हमारी दाढ़ी नोचता है !

लडका : (चीखकर) तुमने मेरे हाथ काट डाले, नही तो बताता, मेरे गुरू को गाली देने का क्या मतलब है ।

कावेन : (चिल्लाकर) क्या देखता है ? उडा दो । (तोप का स्वर, अग्रेज का अट्टहास) और ले जाओ बाकी को कल फाँसी होगा । ये डाकू हैं ! डाकू को फांसी दिया जाता है ।

सूत्रधार : यद्यपि इन प्रान्तीय विद्रोहो के सिवाय उस काल मे कोई बडा विद्रोह नही हुआ, तथापि राजनीतिक चेतना और विदेशी राज्य के प्रति असन्तोप बराबर बढता रहा । तत्कालीन साहित्य मे उसकी छाप मिलती है । बंगाल के बकिम हो चाहे गुजरात के नर्मद, मराठी के चिपलूणकर या उर्दू के हाली, अथवा हिन्दी के हरिश्चन्द्र सभी ने इस असन्तोप को स्वर दिया है⋯

कवि : कहाँ करुणानिधि केशव सोये ।
जागत नेक्हु न यदपि बहुत विधि भारतवासी रोये ।

प्रलयकाल सम जौन सुदर्शन असुर प्राण सहारी।
ताकी धार भई अब कुण्ठित हमरी वेर मुरारी।
हाय सुनत नहिं निठुर भये क्यो परम दयाल कहाई।
सब विधिबूडत निजदेशहिं लखि लेहुँ न अबहिं बचाई।

सूत्रधार भारतेन्दु ने इस प्रकार भगवान के दरबार मे गुहार की तो बंकिम ने काली की वन्दना के बहाने मातृभूमि की वन्दना की

कवि

सुजला सुफला मलयज शीतला।
शस्य श्यामला मातरम्। वन्देमातरम्।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनी।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदलशोभिनी।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्।
सुखदा वरदाम् मातरम्।वन्देमातरम्।

सूत्रधार इस असन्तोष के बावजूद देश मे क्रांति केलक्षण नही थे। उस काल के नेता की देश दरिद्रता और गुलामी से दु खी अवश्य थे, पर वे समझते थे कि अंग्रेज मागने पर अधिकार दे देंगे। परन्तु इन लोगो के अतिरिक्त कुछ ऐसे नेता भी उदय हो रहे थे, जो सशस्त्र क्रान्ति मे विश्वास रखते थे। युद्ध, दुर्भिक्ष, कर और दमन के कारण जनता की दरिद्रता और फाकेकशी को देखकर उनके हृदय पीडा से कराह उठते थे। उन्हे बगावत के सिवाय कोई रास्ता नही दिखाई देता। उस समय कुछ विचारशील अंग्रेजो ने सोचा कि अगर इस असन्तोष के प्रकट होने का कोई रास्ता न निकला तो किसी दिन एकाएक विस्फोट हो जायगा। इसी विस्फोट को रोकने के लिए तत्कालीन वायसराय लार्ड डफरिन की पूरी सहमति से मि० ह्यूम और कुछ भारतीय नेताओ ने बम्बई म

२८ दिसम्बर १८७५ को दिन के बारह बजे, इण्डियन नेशनल काग्रेस की स्थापना की। उसके उद्देश्य थे :

स्वर १ · साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागो मे, देश-हित के लिए लगन से काम करनेवालो की, आपस मे घनिष्ठता और मित्रता बढाना।

स्वर २ · समस्त देशप्रेमियो के अन्दर प्रत्यक्ष मैत्री व्यवहार के द्वारा वश, धर्म और प्रान्त-सम्बन्धी तमाम पूर्वदूषित सस्कारो को मिटाना।

स्वर ३ : राष्ट्रीय ऐक्य की उन तमाम भावनाओ का, जो लार्ड रिपन के चिरस्मरणीय शासन काल मे उद्भूत हुई थी, पोषण और परिवर्द्धन करना।

स्वर ४ : महत्त्वपूर्ण और आवश्यक सामाजिक प्रश्नो पर भारत के शिक्षित लोगो में अच्छी तरह चर्चा होने के बाद जो परिपक्व सम्मतियाँ प्राप्त हो, उनका प्रामाणिक सग्रह करना।

स्वर ५ · उन तरीको और दिशाओ का निर्णय करना, जिनके द्वारा भारत के राजनीतिज्ञ देश हित का कार्य करें।

सूत्रधार : परन्तु तीन साल बाद काग्रेस की बढती हुई लोकप्रियता को देखकर मि० ह्यूम ने उसे इग्लैण्ड मे 'एटी कार्न-ला-लीग' की तरह लोगो मे आन्दोलन करने वाली सस्था का रूप दिया। यहाँ से उसका सरकार से विरोध आरम्भ हुआ। यद्यपि काग्रेस फिर भी कई साल तक राजभक्त और नरम बनी रही, परन्तु महाराष्ट्र मे लोकमान्य तिलक, बगाल मे विपिनचन्द्र पाल और पजाब मे लाला लाजपतराय विद्रोह का स्वर जगाते रहे। विशेषकर अगले कुछ ही सालो मे महाराष्ट्र मे राष्ट्रीय आन्दोलन फूट पडा।

स्वर १ — सन् १८६५ मे तिलक ने महाराष्ट्र मे स्वतन्त्र राष्ट्रीय दल की स्थापना की।

स्वर २ — सन् १८९६ मे तिलक ने अकाल के कारण लगान की माफी का आन्दोलन उठाया।

स्वर ३ — सन १८६७ मे चाफकर बन्धुओ ने गदर के बाद साम्राज्यवाद की छाती मे पहली गोली मारी।

स्वर ४ — सन् १८९७ मे तिलक पर राजद्रोह का प्रसिद्ध मुकदमा चला और वे जेल मे ठस दिये गए।

सूत्रधार — उस काल मे महाराष्ट्र ने धार्मिक और राष्ट्रीय भावना को किस प्रकार एक बना दिया था, यह उनके शिवाजी और गणपति-उत्सव के श्लोको से स्पष्ट होता है।

दृश्य दो

[भीड के सामने एक व्यक्ति करुण स्वर म बोलता है]

स्वर १ — हाय गुलामी म रहकर भी तुमको लाज नहीं आती। इससे अच्छा यह है कि तुम आत्महत्या कर डालो। उफ, दुष्ट हत्यारे कसाइयो की तरह गोवध करते हैं। गो माता को इस दयनीय दशा से छुडा लो। मर जाओ किन्तु पहले अंग्रेजो को मारो तो सही। चुप मत बैठे रहो। बेकार पृथ्वी पर बोझा मत बढाओ। हमारे देश का नाम तो हिन्दुस्तान है, फिर यहाँ अंग्रेज राज क्या करते है ?

सूत्रधार — जिस प्रकार महाराष्ट्र म लोकमान्य उग्र राष्ट्रीयता को गति दे रहे थे, उसी तरह बगाल म विपिनचन्द्र पाल और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी नवीन क्रान्तिकारी भावना का प्रचार कर रहे थे। पाल का स्पष्ट मत था

पाल का स्वर : परतत्र भारतीयो मे हार्दिक साम्राज्यनिष्ठा नही हो सकती। उनकी राजनीति का आधार तो राष्ट्रभक्ति ही हो सकती है।

सूत्रधार : इस समय भारत का वायसराय लार्ड कर्जन था। वह इस उठती हुई क्राति को कुचल देने को आतुर हो उठा और उसने शासन की सुविधा का बहाना करके १६ अक्तूबर १६०५ को बगाल के दो टुकडे कर दिये। लेकिन हुआ यह कि क्राति दबने के स्थान पर दुगने वेग से फूट पडी। बगाल का दबा हुआ क्रोध उमड पडा।

दृश्य तीन

[रगमच पर भाषण देते हैं]

नेता : अग्रेज सरकार ने हमारे सोने के बगाल को काट डाला है। शासन मे सुविधा की बात झूठी है। वह उठती हुई राष्ट्रीयता को कुचलने का बहाना है। वह एक भाग मे मुसलमानो का और दूसरे मे बिहारी और उडियो का बहुमत करके हमे आपस मे लडाना चाहती है। अभी-अभी छोटे से जापान ने विशाल रूस देश को पछाड दिया है। तो क्या बगाली कोई चीज नही है? क्या वे धर्म और देश को प्यार नही करते? (तालियाँ)

जनता : हम देश के लिए जान दे देंगे।

नेता : शाबाश भाइयो! काली माता की उपासना करो। अपनी शक्ति को बढाओ और विदेशी सरकार का सबसे बडा पाया विदेशी वस्तुओ का बायकाट करो। (तालियाँ)

जनता : हम तैयार हैं। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम किसी भी

विदेशी वस्तु का प्रयोग नही करेंगे।

नेता : फुल्लर ने 'वन्दे मातरम्' का पुकारना अपराध ठहराया है। आप सब एक स्वर मे पुकारो—'वन्दे मातरम्।'

जनता : वन्दे मातरम्।

(पुलिस का प्रवेश)

पुलिसअफसर : मैं आप लोगो से कहता हूँ 'वन्देमातरम्' कहना कानून की दृष्टि से अपराध है।

नेता : 'वन्दे मातरम्' कहना अपराध है! माँ को प्रणाम करना अपराध है! साथियो, सुना आपने, 'वन्दे मातरम्' कहने से शान्ति भग होती है! माँ को प्रणाम करने से शान्ति भग होती है! साथियो, पुकारो तो···

जनता : वन्दे मातरम्।

पुलिस अफसर : (क्रुद्ध) तुम नहीं मानोगे? मैं कहता हूँ, तुम चुपचाप चले जाओ।

जनता : वन्दे मातरम्।

पुलिस अफसर : नही मानोगे? सिपाहियो, इस नेता को गिरफ्तार कर लो और इन्हें भगा दो।

जनता : वन्देमातरम्।

पुलिस अफसर : क्या देखते हो? लाठियो से सिर फोड दो। (शोर, लाठियाँ चलती हैं।)

(वन्दे मातरम् के स्वर उठते हैं और मिटते हैं, केवल एक स्वर उठता है।)

युवक : वन्दे मातरम्।
सुजला सुफला मलयज शीतला
शस्यश्यामला मातरम्।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनी
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीं॥

पुलिस अफसर · मैं कहता हूँ बन्द करो, यह गीत अभी बन्द करो···

युवक : सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम
सुखदा वरदाम् मातरम्, वन्दे मातरम् ।

पुलिस अफसर · नही सुनते ?

युवक : त्रिशकोटि कठ कलकल निनाद कराले ।
द्वित्रिशकोटि भुजैर्धृत खर करवाले ।

पुलिस अफसर : नही बन्द करता ? मारो इसके कोडे । देखते क्या हो ?
(कोडो का स्वर उठता है, युवक गाता रहता है)

युवक · के बोले मा तुमि अबले ।
बहु बल धारिणी नमामि तारणी रिपुदल वारिणी,
मातरम्, वन्दे मातरम् ।
(कोडे लगते रहते है)

पुलिस अफसर · लगाये जाओ । जब तक बन्द न हो, कोडे लगाये जाओ ।
(कोडे पडते रहते हैं, गीत के स्वर बढ़ते हैं, सामूहिक स्वर उठता है ।)

समवेत स्वर : तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्व हि प्राण. शरीरे । बाहु से तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति, तोमराई प्रतिमा गडी
मन्दिरे मन्दिरे, वन्दे मातरम् ।
(कोडे पडते रहते हैं, स्वर में वही करुण शान्ति रहती है, मिट जाती है)

सूत्रधार : इस जघन्य अत्याचार मे तपकर सोने का बगाल निखर उठा और देखते देखते समूचे भारत ने बगाल के प्रश्न को अपना प्रश्न बना लिया । महाराष्ट्र मे तिलक सत्याग्रह को लेकर आगे बढे । पजाब मे लाला लाजपतराय ने विद्रोह का स्वर उठाया तो उन्हे माडले में जलावतन कर दिया गया । विपिनबाबू देश मे घूम-घूमकर

राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय शिक्षा और पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रचार करने लगे। यहां तक कि नरम दल के नेता श्रीगोपालकृष्ण गोखले भी बहिष्कार के पक्ष में आ गये। दादाभाई नौरोजी को कहना पड़ा :

दादाभाई नौरोजी: शुरू से लेकर अब तक मुझे इतनी बार निराश होना पड़ा, दूसरा कोई होता तो उसका दिल टूक-टूक हो गया होता और मुझे भय है कि वह बागी बन गया होता।

सूत्रधार : दादाभाई नौरोजी बागी नहीं बने, पर देश में एक ऐसा दल था, *जिसने बंग-भंग की चपत खाकर भीख माँगने*-वालों को पागल और निर्लज्ज समझा। उन्होंने सशस्त्र क्रान्ति का मार्ग अपनाया और देश में बम और हत्याओं का जाल फैल गया। खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी, वारीन्द्र और अरविन्द, यतीन्द्र और सत्येन्द्र, कन्हाई और उल्लासकर, इन सब देश-दीवानों का एकमात्र उद्देश्य विदेशी शासन का अन्त करना था। उन्होंने कहा :

दृश्य चार

[रंगमंच पर दीवाने युवकों का प्रवेश]

युवक १ : हमने प्रतिज्ञा की है कि मातृ-मंत्र की दीक्षा लेकर क्षत्रियों की नई शक्ति के साथ हम देश को विदेशियों के शासन से मुक्त करेंगे।

युवक २ हम कभी भी यह नहीं समझते कि राजनीतिक हत्याओं से आजादी मिल जायेगी। हम हत्याएँ केवल इसलिए करते हैं कि हम समझते हैं कि जनता को इसकी आवश्यकता है।

युवक ३ हम विदेशी सरकार को भगाकर रामचन्द्र या जनक

की तरह का राज्य, जिसमे विश्वामित्र ऐसे ऋषि मन्त्री हो, स्थापित करना चाहते हैं।

युवक ४ : हम ऐसी राज्य पद्धति स्थापित करना चाहते हैं, जिसमे न दुर्भिक्ष हो, न शोक हो, न पाप हो।

सूत्रधार : सुने आपने यह स्वर। ये क्रान्तिकारी पूर्ण धार्मिक पुरुष थे। इनकी प्रतिज्ञाएँ ॐ, वन्दे मातरम् से शुरू होती थी। ये ईश्वर, गुरु, माता, पिता और नेता की शपथ खाते थे। इनकी वीरता को देखकर गोरे अफ्सर श्रद्धा से सिर झुका लेते थे और सिपाही रोने लगते थे। जनता उनकी राख से ताबीज बनाती थी। १९१२ मे वायसराय पर फेंके गये बम के केस मे अवधविहारी एक अभियुक्त थे और उस केस मे किसीका अपराध प्रमाणित नही हुआ, फिर भी मास्टर अमीरचन्द्र और भाई बालमुकन्द के साथ उन्हे फाँसी पर चढ़ा दिया गया। अन्त समय एक गोरे अफ्सर ने पूछा

दृश्य पाँच

गोरा : कहिये, आपकी अन्तिम इच्छा क्या है ?

अवधविहारी : मेरी एक ही इच्छा है कि अंग्रेज़ी राज्य का नाश हो।

गोरा : वही उत्तेजना, वही अकड़ ! अब तो आप शान्ति से मरिये।

अवधविहारी : शान्ति ? अब शान्ति कैसी ! मैं तो चाहता हूँ कि ऐसी प्रचण्ड क्रांति की आग सुलगे, जिसमे तुम भी जलो, हम भी जलें, हमारी गुलामी भी जले और अन्त मे भारत कुन्दन बनकर रह जाय।

सूत्रधार : यह भावना थी, जिसे विदेशी शासन ने पाशविक बल से कुचलना चाहा और विवश होकर इन दीवाने

भक्तों को हथियार उठाने पड़े। स्वयं गोखले ने इस दमन चक्र के विरुद्ध स्वर उठाया। लोकमान्य तिलक ने कहा :

तिलक का स्वर — सरकार की फौजी शक्ति बमों से नहीं टूट सकती। पर बम से सरकार का ध्यान उस अन्धेरखाते की ओर खींचा जा सकता है, जो उसकी सैनिक शक्ति से उत्पन्न मद के कारण उपस्थित है।

सूत्रधार — विद्रोह के उस अग्रदूत के ऐसे ही लेखों को लेकर १९०८ मे एक बार फिर उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। जज ने उन्हे बहुत खरी-खोटी सुनाई और फिर पूछा

दृश्य छ

जज — जूरी आपको दोषी ठहराता है। आपको कुछ कहना है ?

तिलक — जूरी के इस फैसले के बावजूद मैं कहता हूँ कि मैं निरपराध हूँ। ससार मे ऐसी बड़ी शक्तियाँ भी हैं, जो सारे जगत् का व्यवहार चलाती हैं और सभव है, ईश्वरीय इच्छा यही हो कि जो कार्य मुझे प्रिय है, वह मेरे आजाद रहने की अपेक्षा मेरे कष्ट सहने से अधिक फूले-फले।

सूत्रधार — जज ने उन्हें छ वर्ष के लिए जेल भेज दिया, जहाँ उन्होने अपने अमर ग्रथ लिखे। उसी वर्ष बगाल की समितियाँ भी गैरकानूनी करार दी गई, पर आन्दोलन बन्द नही हुआ। तब अग्रेजो ने भारत को शात करने के लिए गोखले के अनथक प्रयत्नो के बाद सन् १९०९ मे मिन्टो मार्ले सुधारो की घोषणा की। इस घोषणा के

अनुसार मुसलमानो के लिए अलग निर्वाचन मान लिया गया। सर सैयद अहमद जो न कर सके, बग-भग द्वारा जिस वात को करने मे अग्रेजो को सफलता नहीं मिली, वही वात अब हो गई। यह एक ऐसा घाव था, जिसका मवाद कभी बन्द नही हुआ। इसी सुधार-योजना मे भारत सरकार मे एक भारतीय को स्थान दिये जाने की बात थी, जिस पर लार्ड सभा मे लार्ड लैंसडाउन ने क्रुद्ध होकर कहा

लार्ड का स्वर मैं आपका ध्यान एक बहुत बडे अन्याय की ओर दिलाना चाहता हूँ। वह यह है कि भारत सरकार मे एक 'विदेशी' को स्थान दिया जा रहा है।

सूत्रधार विदेशी भारत मे भारतीय ही विदेशी ! क्या सूझ थी लार्ड महोदय को ! तभी तो भारत की आत्मा ने उन सुधारो को स्वीकार नही किया और यहाँ-वहाँ क्राति के शोले उठने रहे। लाला हरदयाल यूरोप जाकर क्राति के बीज बोने लगे। मेडम कामा और श्यामजी कृष्ण वर्मा वहाँ पहले ही मौजूद थे। इन्हीसे सावरकर ने दीक्षा ली और कर्जन वायली की हत्या करनेवाला मदनलाल इन्ही सावरकर का शिष्य था। इसी तरह सन् १९११ का साल आ पहुँचा।

स्वर १ : सन् १९१९ मे सम्राट् भारत पधारे और बग-भग रद्द कर दिया गया।

स्वर २ सन् १९११-१२ मे तुर्की को लेकर मुसलमानो मे असन्तोष बढा।

स्वर ३ सन् १९१२ मे वाइसराय पर बम फेंका गया और प्रेस पर कठोरता बढ़ी।

स्वर ४ सन् १९१३-१४ मे अफ्रीका के भारतीयो ने, गाधीजी

	के नेतृत्व मे, जारल स्मट्स से सत्याग्रह का युद्ध लड़ा।
स्वर ५	. सन् १६१४ मे लोकमान्य जेल से छूटे।
स्वर ६	: सन् १६१४ म प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ।
स्वर ७	१६१४ म काग्रेस ने स्वशासन की माँग दोहराई।
स्वर ८	सन् १६१४ म अमरिका की भूमि पर भारतीय स्वाधीनता का युद्ध लडनेवाली गदर पार्टी आगे बढ़ी।
सूत्रधार	गदर पार्टी ! अमेरिका म बस जानेवाली भारतीयो ने इसकी स्थापना की थी। वे 'गदर' नाम का एक अखबार भी निकालते थे। बाबा सोहनसिंह और बाबा केसरसिंह, प० जगतराम और प० परमानन्द, लाला हरदयाल और प० काशीराम, इसके कुछ प्रमुख नेता थे। युद्ध आरम्भ होने पर ये लोग भारतीय स्वतन्त्रता का आन्दोलन चलाने भारत लौटे। इन्ही दिनो बाबा गुरुदत्तसिंह के जहाज 'कामा गाटा मारू' को कनाडा से निष्फल होकर भारत लौटना पडा। यहाँ सरकार ने उन्हे बन्दी बनना चाहा। एक युद्ध छिड गया। कुछ मारे गये, कुछ पकडे गये, कुछ भाग कर फौज मे विद्रोह फैलाने लगे जो पकडे गये उन्हे कालापानी और फासी का दण्ड मिला। उन्ही मे था एक दीवाना देशभक्त करतारसिंह। वह जेल से भाग कर सेना मे विद्रोह करना चाहता था, परन्तु पकडा गया। उस पर मुकदमा चला। उसने कुछ नही छिपाया। हँसते हँसते अपना अपराध स्वीकार कर लिया। जबतक वह बोलता रहा तब तक जज मुँह मे कलम दबाये उसे देखता ही रहा। उसके चुप हो जाने पर जैसे वह चौक पडा। बोला

दृश्य सात

जज : तुम अपना अपराध मानते हो ?

करतारसिंह : अपराध की बात मैं नही जानता, परन्तु जो कुछ मैंने किया है, उससे इन्कार कैसे कर सकता हूँ।

जज : लेकिन इसका परिणाम ?

करतारसिंह : परिणाम फांसी या कालापानी। मैं फाँसी पसन्द करूँगा; क्योकि उसके बाद फिर मैं अपना नया शरीर पाकर अपने देश की सेवा कर सकूँगा। यदि भाग्यवश अगले जन्म मे मैं स्त्री होऊँ तो मैं अपनी कोख से विद्रोही सतान को पैदा करूँगा।

सूत्रधार : उसे फासी ही मिली। वह पिंगले, काशीराम, जगतसिंह हरनामसिंह, बखसीसंसिंह, सरेणसिंह जैसे वीरों के साथ हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर झूल गया। तब जगतराम का कवि-हृदय पुकार उठा।

कवि : सन् उन्नीस सौ बहत्तर माह मगहर दूसरी,
गदर की पल्टन का दस्ता मुक्ति को जाता है आज।
है जगाया हिन्द को करतार तेरी मौत ने,
कसम हर हिन्दी तेरे ही खून की खाता है आज।

सूत्रधार : वे शहीद हो गये, पर जो पीछे रह गये थे, उन्हे अडमन मे जो-जो यातनाएँ झेलनी पडी, उन्हे देखकर परम सत और शान्त पुरुष बाबा विशाखासिंह को गाना पडा।

कवि : अडमन विच सी डाकू तिन वड्डे,
सी सी मरे ते बारी पछाड दिन्नो।
रहे खून निचोड सी कैदियाँ दा,
एक दूसरे तो बेईमान तिन्नो।
जो चावन्दे जुलम सी करी जान्दे,

तैलंग, सब उसमें कूद पडे। श्रीमती बिसेन्ट नजरबन्द कर दी गईं। सरकार का दमन शुरू हो गया। यद्यपि जनता अभी उदासीन थी तो भी मध्यम श्रेणी के अनेक नेता आगे बढे। स्त्रियो ने जुलूस निकाले।

दृश्य आठ

पुलिस १ : कुछ समझ मे नही आता, मुल्क मे एकाएक यह कैसा तूफान आ गया!

पुलिस २ कुछ समझ में नही आता, जितना इनको नजरबन्द करते हैं, उतनी ही तेजी से आन्दोलन बढता है!

पुलिस ३ : कुछ समझ मे नही आता कि खुफिया पुलिस के रहते हुए भी श्रीमती बिसेन्ट अपने पत्र के लिए कैसे लेख लिख लेती हैं!

पुलिस ४ · कुछ समझ मे नही आता, स्त्रियाँ भी जुलूस निकालने लगी हैं।

(स्त्रियो के जलूस का शोर)

स्त्री १ : श्रीमती बिसेन्ट को छोड दो।

स्त्री २ : सब नेताओ को रिहा कर दो।

स्त्री ३ : स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

स्त्री ४ : देश हमारा है। हम राज करेंगे।

स्त्री ५ : स्वदेशी का व्रत धारण करो।

स्त्री ६ : प्रत्येक विदेशी वस्तु का बहिष्कार करो।

सूत्रधार : एक ओर यह आन्दोलन तीव्र हो रहा था, दूसरी ओर क्रान्ति का स्वर भी क्षीण नहीं पडा था। यूरोप मे सन् १९१६ मे होने वाला रेशमी चिट्ठियो वाला षड्यन्त्र साधारण षड्यन्त्र नही था। इस्लामी भावना अब राष्ट्रीय बन गई थी और मौलवी अब्दुल्ला तथा

बेरहम, बेतुरुम, शैतान तिन्नो।
अवखो देख्या सच, वसाख लिखदा,
जान कैदिया दी उत्थे खाण तिन्नो।

सूत्रधार
सन् १६१५ मे जहाँ एक ओर भारत के दो तपे हुए नेता फीरोजशाह मेहता और गोपालकृष्ण गोखले भारत भूमि को रुलाकर स्वर्ग सिधारे, वहाँ भारत के भावी राष्ट्रपिता गांधी ने अफ्रीका का युद्ध जीत कर कांग्रेस की राजनीति मे प्रवेश किया। इसी वर्ष मौलाना आजाद और अलीबन्धुओं को नजरबन्द किया गया और इसी वर्ष तिलक ने कांग्रेस मे एकता और होमरूल का स्वर उठाया। सन् १६१३ मे श्रीमती एनीबिसेन्ट युद्धभूमि मे उतरीं। सन् १६१६ मे ही एक बार फिर हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रयत्न हुए और लखनऊ का प्रसिद्ध समझौता हुआ।

स्वर १
वह दृश्य, जैसे स्वतन्त्रता की देवी जाग उठी थी।

स्वर २
वह दृश्य, जिसने तिलक और जिन्ना, सुरेन्द्रनाथ और मजहरुल हक, रासबिहारी और महमूदाबाद के राजा, श्रीमती बिसेन्ट और गांधी को एक स्थान पर ला बैठाया।

स्वर ३
वह दृश्य, जो क्रान्तिकारियों के बलिदानो को सार्थक करने चला था।

स्वर ४
वह दृश्य, जो देश की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक था।

सूत्रधार
इसी दृश्य का परिणाम था कि जब अगले वर्ष श्रीमती बिसेन्ट ने होमरूल-आन्दोलन शुरू किया तो सारे देश मे बिजली-सी दौड गई, एक तूफान आ गया। बिसेन्ट और अरडेल, वाडिया और जिन्ना, तिलक और

तैलंग, सब उसमें कूद पड़े। श्रीमती बिसेन्ट नजरबन्द कर दी गईं। सरकार का दमन शुरू हो गया। यद्यपि जनता अभी उदासीन थी तो भी मध्यम श्रेणी के अनेक नेता आगे बढ़े। स्त्रियों ने जुलूस निकाले।

दृश्य आठ

पुलिस १ — कुछ समझ मे नहीं आता, मुल्क मे एकाएक यह कैसा तूफान आ गया!

पुलिस २ — कुछ समझ में नहीं आता, जितना इनको नजरबन्द करते हैं, उतनी ही तेजी से आन्दोलन बढ़ता है!

पुलिस ३ — कुछ समझ मे नहीं आता कि खुफिया पुलिस के रहते हुए भी श्रीमती बिसेन्ट अपने पत्र के लिए कैसे लेख लिख लेती हैं!

पुलिस ४ — कुछ समझ मे नहीं आता, स्त्रियाँ भी जुलूस निकालने लगी हैं।

(स्त्रियों के जलूस का शोर)

स्त्री १ — श्रीमती बिसेन्ट को छोड दो।

स्त्री २ — सब नेताओ को रिहा कर दो।

स्त्री ३ — स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

स्त्री ४ — देश हमारा है। हम राज करेंगे।

स्त्री ५ — स्वदेशी का व्रत धारण करो।

स्त्री ६ — प्रत्येक विदेशी वस्तु का बहिष्कार करो।

सूत्रधार — एक ओर यह आन्दोलन तीव्र हो रहा था, दूसरी ओर क्रान्ति का स्वर भी क्षीण नहीं पड़ा था। यूरोप मे सन् १६१६ मे होने वाला रेशमी चिट्ठियों वाला षड्यन्त्र साधारण षड्यन्त्र नहीं था। इस्लामी भावना अब राष्ट्रीय बन गई थी और मौलवी अब्दुल्ला तथा

बरकतअली के साथ राजा महेन्द्रप्रताप और सूफा अम्बाप्रसाद भी काम कर रहे थे। इनके साथ तारकनाथ दास, हरदयाल, शरद चटर्जी, रासबिहारी और सोहनलाल पाठक आदि के नाम नहीं भुलाये जा सकते। लाला हरदयाल तुर्की तक पहुँचे थे और सोहनलाल पाठक बर्मा में सेना को भड़का रहे थे। अन्त में ये पकड़े गए और जब फांसी की सजा हुई तो स्वयं बर्मा के गवर्नर ने कहा

दृश्य नौ

गवर्नर : तुम माफी माँग लो। मैं तुम्हारी फाँसी अपनी कलम से रद्द कर दूँगा।

सोहनलाल : (हँसकर) महाशय! यह अच्छी रही! मैं आपसे माफी माँगूँ! माफी तो आपको माँगनी चाहिये। मुल्क हमारा है और आप उस पर राज कर रहे हैं। उसे हम आजाद करना चाहते हैं और आप उसमें रोड़े अटकाते हैं और फिर अब उल्टा मुझ ही से माँफी माँगने को कहते हैं। यह खूब रही! लाट साहब, इंसानियत का तकाजा तो यह है कि आप मुझसे माफी माँगें।

सूत्रधार : इन सब आन्दोलनों और क्रान्तियों का यह परिणाम हुआ कि भारत-मंत्री मान्टेग्यू ने घोषणा की कि ब्रिटिश नीति का अन्तिम ध्येय भारत को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन देना है। और यह कि वह इस ओर ठोस रूप से कदम उठाने जा रहे हैं। उन्होंने भारत का दौरा किया। वे सभी नेताओं से मिले। जिस समय यह सब कुछ हो रहा था, उस समय महात्मा गांधी बिहार में निलहे गोरों के अत्याचार से पीड़ित किसानों के आँसू

पोछ रहे थे।

दृश्य दस

(किसानो का स्वर—आँसुओ से भीगा हुआ और करुण)

किसान १ : महाराज, गोरे साहब हमसे जबरदस्ती काम लेते हैं। वे हमारे बच्चो को भी नही छोडते।

किसान २ उन्होंने हमारा लगान बढा दिया है। हम उसे नही दे सकते तो वे हमारे गोरू बेच देते हैं। खेत छीन लेते हैं।

किसान ३ : वे हमे नील की खेती करने पर मजबूर करते है। हम कुछ और बो नही सकते।

किसान ४ : महाराज, उन्होने मेरी रबी की फसल अदावत से लुटवा दी।

स्त्री ५ : महाराज, मैं विधवा हूँ। ठेकेदार ने मुझे बाल पकड-कर घसीटा। फिर मुझे और मेरे छोटे बच्चो को जबरदस्ती काम पर लगा दिया।

किसान ६ : हमे कुल १४-१५ रुपये बीघा दिया जाता है। साहब तीन सौ रुपये तक कमाते हैं।

किसान ७ : वे हमारा घी दो आना सेर खरीदकर ले जाते हैं।

सूत्रधार : इसी दुख-दर्द की कहानी सुनता हुआ गाधी दोपहर की कडी धूप मे गाँव-गाँव घूमा। १६००० किसानो से मिला। जिलाधीश ने उसका प्रवेश वर्जित कर दिया, पर सत्य के खोजी को प्रतिबन्ध नही रोक सकते। गाधी ने अन्यायी कानून की सीमा लाँघ दी। सरकार झुकी, यहाँ तक कि उसे कमीशन का मेम्बर भी बना दिया। अन्त मे वह जीता। बिहार मे निलहे गोरों का राज समाप्त हो गया। भारत मे भारतीय

नेता की यह पहली विजय थी। फिर तो कोने-कोने से उसकी पुकार हुई। वीरमगाम ने पुकारा। अहमदाबाद के मजदूरों ने पुकारा। खेडा के किसानों ने पुकारा। वह सब जगह गया और सब ही जगह उसका सत्याग्रह सफल हुआ। देश जय-जयकार कर उठा

जय जय सद्गुन सदन अखिल भारत के प्यारे।
जय जग मधि अनवधि कीरति कल विमल उज्यारे॥
जयति भुवन विख्यात सहन प्रतिरोध सुमूरति।
सज्जन सम भ्रातृत्व शांति की सुखमय सूरति॥
जय कर्मवीर त्यागी परम आतम त्यागी विकास कर।
जय यश सुगन्धि वितरन करन गांधी मोहनदास वर॥

सूत्रधार

इधर नवम्बर १६१८ में युद्ध समाप्त हो गया। मोण्ट-फोर्ड स्कीम को कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया और शांति सम्मेलन में भाग लेने की मांग की तथा तिलक और हसन इमान के साथ गांधी को अपना प्रतिनिधि चुना। गांधी को प्रतिनिधि चुनकर मानो देश ने उनका नेतृत्व स्वीकार किया, मानो उनसे प्रार्थना की

आर्य आपके मन्त्र ले भारत हो स्वाधीन।
शुभ स्वराज्य भोगें सभी हो दुख दैन्य विहीन॥

तृतीय अंक

जलियानवाला बाग से चौरीचौरा तक

[१६१६-१६२२]

सूत्रधार : नवम्बर १६१८ में पहला 'विश्व युद्ध' समाप्त हो चुका था और भारत ने मोण्टफोर्ड रिपोर्ट को, जो ब्रिटिश सरकार ने असन्तुष्ट देश को सन्तुष्ट करने के लिए पेश की थी, अस्वीकार कर दिया था। दिल्ली कांग्रेस ने, जिसमे ४८६५ प्रतिनिधि आये थे, जहाँ एक ओर युद्ध की सफलतापूर्वक समाप्ति पर प्रसन्नता प्रकट की तथा सेना को बधाई दी, वहा नागरिक स्वतन्त्रता का अपहरण करनेवाले कानूनो, आर्डिनेन्सों और रेगूलेशनो को उठा लेने की प्रार्थना की तथा प्रातो को पूर्ण उत्तरदायी शासन देने की माग की, परन्तु इस माग के उत्तर मे जो कुछ मिला, वह यह था कि फरवरी मे रौलट बिल ने देश को अपना दर्शन दिया। उसने मानो पुकार कर कहा :

स्वर १ : किसी क्रांतिकारी अपराध के सदेह मे किसी भी व्यक्ति को पकड या पकड़वा सकेगी।

स्वर २ : किसी भी व्यक्ति को, जिसपर राज्य के विरुद्ध अपराध

करने का सदेह है, बिना वारंट के गिरफ्तार किया जा सकेगा।

स्वर ३ : क्रांतिकारियो के मुकदमे हाईकोर्ट के तीन जजो की विशेष अदालत मे पेश होगे और उनका निर्णय शीघ्र होगा।

स्वर ४ : जहाँ अपराध बहुत होगे, वहाँ अपील नही हो सकेगी।

स्वर ५ : जो अपराधी पहले से ही जेल मे हैं, उन्हें लगातार जेल मे रोका जा सकेगा।

स्वर ६ : यानी न वकील

स्वर ७ : न अपील

स्वर ८ : न दलील।

सूत्रधार : और जब नेताओ की प्रार्थना के बावजूद यह बिल मार्च के तीसरे सप्ताह मे कानून बना दिया गया तो जनता ने इसके विरुद्ध आन्दोलन का स्वर उठाया। नरम और गरम दल के नेता एक बार फिर अपना विरोध भूलकर कांग्रेस के मंच पर इकट्ठे हुए। ठीक इसी समय भारत के राजनैतिक क्षितिज पर जो एक छोटा-सा बादल प्रकट हुआ था, तेजी से आगे बढा और देखते-देखते उसने सारे आकाश को ढक लिया। वह बढता हुआ बादल, वह नया तत्त्व था—मोहनदास कर्मचन्द गाधी। उसकी आवाज दूसरो से अलग थी।

स्वर १ : वह शान्त और धीमी थी।

स्वर २ : परन्तु सदा जनता के शोर के ऊपर सुनाई देती थी।

स्वर १ : वह कोमल और नम्र थी।

स्वर २ : परन्तु उसमे फौलाद की शक्ति छिपी हुई थी।

स्वर १ : वह मीठी और अपील से भरी हुई थी।

२ : परन्तु उसमें कोई दृढ और डरावनी वस्तु थी।

स्वर १ . निस्सदेह उसका प्रयोग किया हुआ हरेक शब्द अर्थ से भरा हुआ था।

स्वर २ : निस्सन्देह उस सचाई के पीछे शक्ति और क्रिया की कांपती हुई छाया थी।

स्वर ३ . निस्सन्देह उस शक्ति और क्रिया के पीछे गलती के आगे न झुकने का पूर्ण निश्चय था।

सूत्रधार : यही गांधी, जिसने चम्पारन, वीरमगाम और खेडा मे अपूर्व विजय पाई थी, अपने अस्त्र लेकर आगे बढ़ा और उसने रौलट कानून के विरुद्ध सत्याग्रह की घोषणा की। उसके प्रतिज्ञा-पत्र पर लोग पहले ही लाखों की सख्या मे हस्ताक्षर कर चुके थे।

(इस प्रतिज्ञा-पत्र को पहले एक आदमी पढ़े, फिर धीरे-धीरे सख्या बढती रहे और अन्त होते-होते समूह का स्वर उठे)

शुद्ध भाव से यह जानकर कि १६१६ का पहला इडियन क्रिमिनल ला (अमेडमेट) बिल तथा १६१६ का दूसरा क्रिमिनल (इमरजन्सी पावर्स) बिल, ये दोनो न्याय-शून्य, न्याय और स्वतन्त्रता के सिद्धान्त तथा व्यक्तियो के उन मूल अधिकारो के नाशक हैं, जिन पर कुल, जाति तथा स्वय राज्य का कुशल अवलम्बित है। हम लोग शपथ करते हैं कि यदि ये बिल कानून बना दिये जायेंगे तो जब तक वे लौटा न लिये जायगे तबतक हम नम्रता-पूर्वक इन कानूनो को तथा उन सब अन्य कानूनो का पालन करने से इकार करेंगे, जिन्हें नियुक्त की जाने-वाली कमेटी निश्चित करेगी। हम यह भी शपथ करते हैं कि इस सत्याग्रह की लडाई मे हम निष्कपट भाव से सत्य मार्ग पर चलेंगे और किसी की जान व

करने का संदेह है, बिना वारंट के गिरफ्तार किया जा सकेगा।

वर ३ क्रांतिकारियों के मुकदमे हाईकोर्ट के तीन जजों की विशेष अदालत में पेश होंगे और उनका निर्णय शीघ्र होगा।

स्वर ४ जहाँ अपराध बहुत होंगे, वहाँ अपील नहीं हो सकेगी।

स्वर ५ जो अपराधी पहले से ही जेल में है, उन्हें लगातार जेल में रोका जा सकेगा।

स्वर ६ यानी न वकील

स्वर ७ न अपील

स्वर ८ न दलील।

सूत्रधार और जब नेताओं की प्रार्थना के बावजूद यह बिल मार्च के तीसरे सप्ताह में कानून बना दिया गया तो जनता ने इसके विरुद्ध आन्दोलन का स्वर उठाया। नरम और गरम दल के नेता एक बार फिर अपना विरोध भूलकर कांग्रेस के मंच पर इकट्ठे हुए। ठीक इसी समय भारत के राजनैतिक क्षितिज पर जो एक छोटा-सा बादल प्रकट हुआ था, तेजी से आगे बढ़ा और देखते-देखते उसने सारे आकाश को ढक लिया। वह बढ़ता हुआ बादल, वह नया तत्त्व था—मोहनदास कर्मचन्द गांधी। उसकी आवाज दूसरों से अलग थी।

स्वर १ वह शान्त और धीमी थी।

स्वर २ परन्तु सदा जनता के शोर के ऊपर सुनाई देती थी।

स्वर १ वह कोमल और नम्र थी।

स्वर २ परन्तु उसमें फौलाद की शक्ति छिपी हुई थी।

स्वर १ वह मीठी और अपील से भरी हुई थी।

२ परन्तु उसमें कोई दृढ़ और डरावनी वस्तु थी।

सिद्धिदायक, बुद्धिदायक, एक वन्दे मातरम्।

(नारे उठते हैं)

भीड़ — वन्दे मातरम्! हमारे नेता कहाँ हैं? डा० सत्यपाल कहाँ हैं? डा० किचलू कहाँ हैं? महात्मा गाधी की जय!

(पुलिस का प्रवेश)

पुलिस अफसर — ठहरो, कहाँ जाते हो?

जनता — हम नेताओ को ढूँढने जा रहे हैं।

अफसर — लेकिन तुम आगे नही बढ सकते।

जनता — हम बढ़ेंगे।

अफसर — मैं कहता हूँ कि तुम लौट जाओ।

जनता — हम नेताओ को लिये बिना नही लौटेंगे। (सहसा एक स्वर उठता है)

एक स्वर — अरे अरे, ईंटें, लोग ईंटें फेंक रहे हैं!

अफसर — ईंटें! क्या पुलिस पर ईंटें फेंकी जा रही हैं? मैं अभी ठीक बताता हूँ। सिपाहियो, फायर! (शोर बढ़ता है, मिट जाता है)

सूत्रधार — जैसे बारूद मे चिंगारी लग गई, देशभर मे उपद्रव हुए, गोलियाँ चली, हत्याएँ हुई। गाधीजी बम्बई मे प्रेस एक्ट तोड रहे थे। पजाब मे होनेवाली दुर्घटनाओ की बात सुनकर उधर चले परन्तु गिरफ्तार कर लिये गए। उपद्रव और भी बढ़ गये, परन्तु १३ अप्रैल को अमृतसर के जलियानवाला बाग मे जो भयकर और रोमाचकारी हत्याकाड हुआ, वह बेमिसाल है। वह नव-वर्ष अर्थात् वैशाखी का दिन था। २०,००० मनुष्य, लाला हसराज का व्याख्यान सुनने को इकट्ठे हुए थे। इसी समय जनरल डायर अपने हथियारबन्द सैनिकों को

सिद्धिदायक, वृद्धिदायक, एक वन्दे मातरम् ।

(नारे उठते हैं)

भीड़ : वन्दे मातरम् ! हमारे नेता कहाँ हैं ? डा० सत्यपाल कहाँ हैं ? डा० किचलू कहाँ हैं ? महात्मा गांधी की जय !

(पुलिस का प्रवेश)

पुलिस अफसर : ठहरो, कहाँ जाते हो ?

जनता : हम नेताओं को ढूंढने जा रहे हैं।

अफसर : लेकिन तुम आगे नहीं बढ़ सकते।

जनता : हम बढ़ेंगे।

अफसर : मैं कहता हूँ कि तुम लौट जाओ।

जनता : हम नेताओं को लिये बिना नहीं लौटेंगे। (सहसा एक स्वर उठता है)

एक स्वर : अरे अरे, ईंटें, लोग ईंटें फेंक रहे हैं !

अफसर : ईंटें ! क्या पुलिस पर ईंटें फेंकी जा रही हैं ? मैं अभी ठीक बताता हूँ। सिपाहियो, फायर ! (शोर बढ़ता है, मिट जाता है)

सूत्रधार : जैसे बारूद में चिंगारी लग गई, देशभर में उपद्रव हुए, गोलियाँ चलीं, हत्याएँ हुई। गांधीजी बम्बई में प्रेस एक्ट तोड़ रहे थे। पंजाब में होनेवाली दुर्घटनाओं की बात सुनकर उधर चले, परन्तु गिरफ्तार कर लिये गए। उपद्रव और भी बढ़ गये, परन्तु १३ अप्रैल को अमृतसर के जलियानवाला बाग में जो भयंकर और रोमांचकारी हत्याकांड हुआ, वह बेमिसाल है। वह नव-वर्ष अर्थात् बैसाखी का दिन था। २०,००० मनुष्य, लाला हंसराज का व्याख्यान सुनने को इकट्ठे हुए थे। इसी समय जनरल डायर अपने हथियारबन्द सैनिकों को

लेकर वहाँ पहुँचा। उसने २५ सैनिकों को दाई ओर तथा २५ सैनिकों को बाई ओर खड़ा किया। उसके बाद वहाँ क्या हुआ, यह हंटर कमेटी के सामने बयान देते हुए उसने स्वयं बताया था

दृश्य दो

कमीशन हाँ, जनरल डायर, तुम वहाँ पहुँचे तो तुमने क्या किया?

डायर मैंने वहाँ पहुँचते ही गोलियाँ दागनी आरम्भ कर दी।

कमीशन *क्या तुरन्त?*

डायर हाँ, तुरन्त। मैंने इस पर पहले ही विचार कर लिया था और अपना कर्तव्य सोचने के लिए मुझे ३० सैकण्ड से *अधिक न लगे।*

कमीशन तुमने अभी कहा था कि तुमने सभा न करने की चेतावनी दी थी। क्या यह सम्भव नहीं है कि उस सभा में *उपस्थित बहुतेरे मनुष्यों ने तुम्हारी आज्ञा न सुनी हो?*

डायर बहुत सम्भव है, न सुनी हो।

कमीशन लेकिन यह जानकर भी तुमने भीड़ को पहले तितर-*बितर होने के लिए सावधान नहीं किया?*

डायर नहीं, उस समय मैंने यह नहीं सोचा था। मैंने यही समझा कि मेरी आज्ञा नहीं मानी गई और सभा करके *जनता ने मार्शल ला की उपेक्षा की है।* इसीलिए मैंने गोलियाँ चलाना जरूरी समझा।

कमीशन तुमने कितनी गोलियाँ चलाई?

डायर *मैंने दस मिनट तक धुआँधार गोलियाँ चलाई और* तभी बन्द की जब वे खत्म हो गई।

कमीशन क्या तुम बिना गोली चलाये भीड़ को नहीं हटा

सकते थे ?

डायर : क्यों नही हटा सकता था, पर यदि मै ऐसा करता तो लोग मेरी हँसी उड़ाते और मुझे कायर समझते।

कमीशन : क्या तुमने घायलो को उठाने और उनकी मदद करने का कोई प्रबन्ध किया था?

डायर : नही, उस समय घायलों की मदद करना मेरा कर्तव्य नही था।

सूत्रधार : इस प्रकार जनरल डायर की कृपा से लगभग ४०० मृत और ८०० घायल व्यक्तियो ने अपने खून से सीचकर जलियावाले बाग को सदा के लिए राष्ट्रीय तीर्थ बना दिया; लेकिन जलियावाला बाग ही क्यों, मार्शल-ला ने तो सारी पचनद भूमि को ही खून से सीचा था। शरीर के इस प्रकार क्षत-विक्षत हो जाने पर भी वीरो की भूमि पंजाब की आत्मा नही झुकी। अत्याचार उसके तेज को नही कुचल सका। मार्शल-ला के समाप्त हो जाने पर जब देश के नेता पचनद भूमि के घाव पर मरहम लगाने दौड़े तब पं० मोतीलाल नेहरू के एक नौजवान साथी से अमृतसर मे एक बूढ़े *मुसलमान की मुलाकात हुई :*

दृश्य तीन

वृद्ध : आदावर्ज है साहबजादे।

युवक : आदावर्ज़ जनाब।

वृद्ध : खुदाबंदताला तुम्हारा भला करे। हम पं० मोतीलाल नेहरू का अहसान कभी नही भूल सकते। जब खुदा भी हमे भूल गया था तब प० मोतीलाल हमारी मदद को आये।

युवक — यह उनका फर्ज है बुजुर्गवार। पजाब की खिदमत करना देश की खिदमत करना है।

वृद्ध — ठीक है साहबजादे, ठीक है, इसीलिए तो मैं भी कुछ अर्ज करना चाहता हूँ।

युवक — फरमाइये, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ ?

वृद्ध — (धीरे से) जरा तकलीफ गवारा करके गली मे चले आइये !

युवव — जी, चलिये।

वृद्ध : (चलते-चलते) बेटा, तुम बहादुर हो। मेरा भी एक ऐसा ही बहादुर बेटा था, इकलौता बेटा।

युवक — इकलौता बेटा ! उसे क्या हुआ ?

वृद्ध . वह आज़ादी की लडाई मे शहीद हो गया। जलिया-वाले बाग मे जनरल डायर की गोली ने उसे हमेशा के लिए सुला दिया। (गला भर आता है)

युवक . सब्र कीजिये, सब्र कीजिये, बुजुर्गवार ! आप बहादुर बेटे के बहादुर बाप हैं।

वृद्ध — नही-नही, मैं घबराता नही हूँ। आइये, मेरे गरीबखाने पर चलिये। मैं आपको एक पोशीदा चीज दिखलाऊँगा। यह सामने ही मेरा घर है।

युवक — मैं तो यहाँ आया ही इसलिए हूँ। चलिये।

वृद्ध — आइए, (किवाड खोलता है) आ जाइये, (पुकारता है) मुमताज, बेटी मुमताज !

मुमताज — जी, (दूर से आती आवाज)

वृद्ध — बेटी वह पोटली तो लाना। वही

(मुमताज का प्रवेश)

मुमताज — ज , लाती हूँ।

(जाना)

वृद्ध — तशरीफ रखिये, साहबजादे। क्या बताऊ ••

युवक — कोई डर नही, मैं ठीक हूँ।

(मुमताज पोटली लेकर आती है)

मुमताज — जी, यह लीजिये, यह पोटली।

वृद्ध — अच्छा बेटी। देखा साहबजादे, यह पोशीदा चीज है। मैं इसे किसी को नही दिखाता। तुम हमारे मेहरबान हो। तुम्हे दिखाता हूँ, देखो। (सगीत उठता है) (गठरी खोलता है)

युवक — (कांपकर) यह क्या है ?

वृद्ध — (कांपती आवाज) यह मेरे प्यारे बेटे के खूनी कपडे हैं।

(उठाकर उन रक्त के भरे कपडो को खोलता है)

मुमताज — (रोकर) अब्बा

युवक — यह आपने क्यो रख छोडे है ? नही नही, इन्हे फेंक दीजिये। ये आपको बराबर तकलीफ देंगे।

वृद्ध — और बराबर याद दिलाएँगे कि आजादी कैसे हासिल की जाती है।

युवक — बुजुगवार !

वृद्ध — साहबजादे, मैंने इन्हे जानकर रक्खा है। उधर देखते हो ! ये दोनो मासूम बच्चे, ये मेरे पोते हैं, मेरे बेटे की याद ! जब ये बडे होगे तो मैं इन्हे ये कपडे दिखाऊँगा और बताऊँगा कि आजादी हासिल करने के लिए मादरे वतन की सर जमीन को अपने खून से सीचा जाता है ! और और •

(वृद्ध का स्वर भर्राता है। सगीत मे तेजी आती है। क्षणिक सन्नाटे के बाद सगीत का स्वर उठता है और समाप्त होता है।)

सूत्रधार : इस प्रकार सन् १९१९ के अप्रैल मास से भारत के इतिहास में एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। आज भी उन्हीं दिनों की याद में ६ ता० से १३ ता० तक राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जाता है। इस वर्ष कांग्रेस का अधिवेशन भी अमृतसर में हुआ और इसकी कमेटी ने जोरदार शब्दों में मांग की

स्वर १ : रौलट एक्ट मसूख कर दो।

स्वर २ . सर माइकेल को शासन-विभाग में कोई जिम्मेदारी का पद न दो।

स्वर ३ जनरल डायर और कर्नल जॉनसन आदि को हटा दो।

स्वर ४ . लार्ड चेम्सफोर्ड को वापस बुला लो।

स्वर ५ जुरमाने वापस लौटा दो।

स्वर ६ : ताजीरी पुलिस उठा लो।

सूत्रधार . विदेशी सरकार ने इसके उत्तर में निहत्थे और निरपराध नागरिकों पर गोली चलाने वाले जनरल डायर की प्रशंसा की और उसे साम्राज्य का रक्षक कहा, यहाँ तक कि उसने सरकारी नौकरों की रक्षा के लिए एक विशेष बिल पास किया। इसी समय टर्की और खिलाफत के प्रश्न पर मुसलमान उससे बहुत क्रुद्ध हो उठे। यह भारत की प्रतिष्ठा को चुनौती थी। गांधी जी के नेतृत्व में देश ने असहयोग की वाणी बुलन्द की। यद्यपि कुछ पुराने नेता इसके विरोधी थे, पर जनता ने गांधी जी की जय के नारों से आसमान गुंजा कर अहिंसात्मक असहयोग के सिद्धान्त के प्रति अपनी मंजूरी जाहिर की। अलीभाइयों के नेतृत्व में मुसलमान भी अपूर्व उत्साह से भरे हुए थे। इन सबने मिलकर एक स्वर में पुकारा .

समवेत स्वर : नई कौंसिलो का बहिष्कार कर दो।
अपने बच्चो को सरकारी स्कूलो मे मत भेजो।
सरकारी अदालतों को बायकाट कर दो।
सरकार को किसी प्रकार का ऋण न दो।
मेसोपोटामिया मे किसी प्रकार की मुल्की और फौजी नौकरी न करो।
स्वदेशी का व्रत ग्रहण करो।
हर कही हर समय अहिंसा का पालन करो।

सूत्रधार : इस प्रकार गाधीजी ने तरुणाई के प्राणों में छटपटाते हुए तूफानों का बह निकलने का मार्ग दिखा दिया। उसकी भावनाएँ धधक उठी और देश सत्याग्रह की लपटो मे कूद पडने को आतुर हो उठा। लेकिन ठीक १ अगस्त १९२० के दिन, जिस दिन सत्याग्रह का श्री-गणेश होनेवाला था, भारतीय अरमानो की मूर्तिमती प्रतिभा, गीता के कर्मयोगी, भारतीय ज्ञानगरिमा के गौरव, 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', इस मन्त्र के जन्मदाता, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक धरतीमाता से हमेशा के लिए विदा लेकर स्वर्ग जा विराजे। उस दिन क्रान्ति की वह ज्योति, जिसे उन्होने स्वार्थ का हवन करके जगा रखा था, उनके शरीर-बन्धन से मुक्त होकर सारे देश मे फैल गई। देखते-देखते वकीलो ने वकालत छोड दी, विद्यार्थी स्कूलो से बाहर आ गए, खिताब, पद, तमगे लौटा दिये गए और विदेशी वस्त्रो की होली की उठती हुई लपटो से आसमान प्रकाश से जगमगा उठा।

दृश्य चार

(भीड का कोलाहल उठता है, 'वन्देमातरम्' और 'अल्ला हो अकबर' के नारे)

एक वकील — भाइयो, मैं वकील हूँ। मैं आपके सामने प्रतिज्ञा करता हूँ, आज से विदेशी सरकार के साथ कोई सम्बन्ध नही रखूगा। मैं उनकी अदालतो म नही जाऊँगा। मैं राष्ट्रीय पचायत म वकालत करूँगा। (तालियाँ)

दूसरा व्यक्ति — और मैं प्रतिज्ञा करता हूँ मैं अपने बच्चो को सरकारी स्कूल म नही भेजूँगा। मैं उन्ह राष्ट्रीय पाठशाला म पढाऊँगा। (तालियाँ)

तीसरा व्यक्ति — भाइयो, मैं एक सरकारी खिताबधारी हूँ। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने मुझे रास्ता दिखा दिया है। मैं अभी गुलामी की निशानी इस खिताब को लौटा दूंगा। (तालियाँ)

(शोर बढता है, स्वर उठते हैं) मैं भी वकालत नही करूँगा, मैं सरकारी स्कूल म नही जाऊँगा, मैं खद्दर पहनूँगा, मैं खिताब लौटा दूंगा। (शोर मिट जाता है और एक नारी का स्वर उठता है)

नारी — क्या-क्या, आप वकालत नही करेगे?

पुरुष — हाँ, गाधीजी की यही आज्ञा है।

नारी — लेकिन खच कौन देगा? बच्चे कैसे पढेंगे? हम खाएँगे क्या?

पुरुष — जब तक स्वराज्य नही मिल जाता तब तक हम इन बातो की चिन्ता नही कर सकते।

बालक — (भागता आता है) पिताजी, पिताजी, मे आज से सरकारी स्कूल मे नही जाऊँगा।

पुरुष . बेशक, नही जाओगे। देखा तुम्हारा बेटा कितना बहादुर है! आओ बेटे, हमारे पास आओ। हम अब तुम्हे राष्ट्रीय पाठशाला मे ले चलेंगे।

बालक : लेकिन पिताजी, इसी बात पर रामू के पिता ने उसे बहुत पीटा। देखो तो, उसका मुंह कैसा लाल हो गया है!

दूसरा बालक · नही नही, मुझे पिटने का बिलकुल अफसोस नही। मैं सरकारी स्कूल म कभी नही जाऊँगा। मैं आपके स्कूल म पढ़ूँगा।

पुरुष शाबाश, तुम बहादुर हो। डरो नही, मैं तुम्हे अपने राष्ट्रीय विद्यालय मे ले चलूंगा।

बालक पर पिताजी, वहाँ मास्टर तो बहुत कम हैं।

पुरुष (आता हुआ) कम क्यो हैं? एक मैं आ गया हूँ।

पुरुष १ तुम?

पुरुष २ हाँ, मैंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया है। गाधीजी ने कहा था न, हरएक हिन्दुस्तानी का यह कर्तव्य है कि वह इस सरकारसे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर ले।

पुरुष . सच! खूब किया। बधाई!

नारी · क्या सचमुच तुमने नौकरी छोड दी? अब तुम कैसे करोगे? तुम्हारा परिवार इतना बडा है!

पुरुष : (हसकर) पूरे पैंतीस करोड इन्सान हैं, पर जानती हो · वे अपनी वाणी नही बोल सकते, वे अपने हाथों से काम नहीं कर सकते, वे अपने पैरो पर खडे नही हो सकते, वे अपने मन से सोच नही सकते, वे कायर हैं, कायरो को जीने का अधिकार नहीं होता। इस जिल्लत की जिन्दगी से तो आजादी की राह मे तडप तडप प्राण

दे देना यहीं अच्छा है। हम तो भाभी, अब बस यही गाते डोलेंगे

गुंचे हमारे दिल के इस बाग म खिलेंग।
इस खाक से उठे हैं इस खाक मे मिलेंग।

स्त्री . तुम तो दीवाने हो रहे हो कृष्ण।

पुरुष २ आज सारा देश दीवाना है, भाभी। इस गांधी ने सबको पागल बना दिया है। सुन नही रही हो, उसकी जयनाद से *आकाश कांप रहा है।*
(जयनाद के स्वर उठते हैं, मिटते हैं। एक बालक का स्वर उठता है)

बालक भाइयो, मैं खद्दर पहनता हूँ। आप भी खद्दर पहनिये और विदेशी कपडे जलाने के लिए गांधीजी को दे दीजिए।

(जयनाद उठता है)

पहला स्वर कपडे लाइये, और लाइये।

दूसरा स्वर : लीजिये, मैं ये कपडे लाया हूँ।

तीसरा स्वर : मेरा कोट लीजिये।

चौथा स्वर · मेरी कमीज लीजिये।

पांचवा स्वर मैं भी देती हूँ। मैं आज से खद्दर पहनूंगी।

(फिर जयनाद, कपडे देनेवालो के कई स्वर)

पहला स्वर . देखो देखो, गाधीजी ढेर के पास आ गये।

दूसरा स्वर कितना बडा ढेर है! दस गज ऊंचा होगा। लो होली सुलग गई।

तीसरा स्वर *अहाहा, ये लपटें उठने लगी! ऐसा लगता है, मानो हमारे पाप जल रहे हैं!*

चौथा स्वर और स्वराज्य आ रहा है। अहाहा, कपडो की कैसी वर्षा हो रही है। महीन साडिया, बारीक कमीजें, रग

बिरगे रूमाल, मानो पतंग उड रही है !

पांचवां स्वर सुनो-सुनो, कोई गा रहा है !

(गाने का स्वर उठता है)

विदेशी वस्त्र मत पहनो ये गुलामी की निशानी है,
अगर गौरव है कुछ तुम मे अगर कुछ तुम मे पानी है।
तुम्हें खद्दर चिकन है जामदानी कामदानी है,
किसी सूरत से नैया पार यह खेवर लगानी है।
समय है वीरता का बुजदिली का राग जो छेडा,
नही फिर बच सकोगे, है पडा मझधार मे बेडा।

सूत्रधार . इस प्रकार असहयोग का तूफान तीव्र से तीव्र होने लगा। लोगो ने शराब पीनी छोड दी। सरकार ने उसके गुण ढूढ निकाले, पर भावना जिधर वह गई थी, उधर ही बहती चली गई। इसी बीच बादशाह के चाचा भारत आये और लौट गये। सरकार ने दमनचक्र को और भी तीव्रता से चलाना शुरू कर दिया, परन्तु असहयोग की गति धीमी नही पडी। गांधीजी ने ३० जून १६२१ तक तिलक स्वराज्य फड के लिए एक करोड रुपये की अपील निकाली। देश ने निश्चित तिथि से पहले ही एक करोड १५ लाख रु० इक्ट्ठा कर दिया। गांधीजी जहां भी जाते वही उन पर रुपयो, नोटो और जेवरो की बौछार होने लगती और सभाए सवेरे के ६ बजे से रात के १० बजे तक चलती रहती।

दृश्य पांच

(भीड का कोलाहल। वन्देमातरम् और अल्लाहो अकबर के नारे)

सभापति भाइयो, शान्त होइए और धीरे धीरे स्वराज्य फड के लिए चन्दा देते जाइये। एक-एक आइये।

एक स्वर	लीजिये, मेरे पाँच सौ रुपये लीजिये।
दूसरा	मेरे एक हजार।
तीसरा	मेरे तीन सौ।
चौथा	: जी, मैं सौ देता हूँ।
एक वृद्ध	मेरे पास एक ही रुपया है। दया करके ले लीजिये।
सभापति	क्यों नहीं, तुम्हारा रुपया बड़ा कीमती है। यह तुम्हारा सर्वस्व है।
एक स्वर	हटो-हटो, यह जर्जर बुढ़िया मंच पर आ रही है।
सभापति	क्यों भाई, क्या बात है ?
वृद्धा	मैं चाहती हूँ बेटा, महात्मा गांधी मेरे ये पैसे ले लें। मैं भिखारिन हूँ। ये ही माँग सकी हूँ। मेरे कोई नहीं है। (धन्य हो, धन्य हो, महात्मा गांधी की जय के स्वर)
सभापति	माई, तुम क्या चाहती हो, सारा देश तुम्हारा है। तुम्हारे पैसे पाकर फंड पवित्र हो गया।
वृद्धा	भगवान् तुम्हें खुश रखे बेटा! महात्माजी को स्वराज्य मिले!
एक युवती	सभापतिजी, मैं अपना हार देती हूँ।
सभापति	तुम हार देती हो!
युवती	जी हाँ।
सभापति	तुमने अपने पति से पूछ लिया है ?
युवती	जी हाँ, इसमें उनकी भी इच्छा है।
सभापति	पर महात्माजी कहते हैं कि तुम यह हार देकर दूसरा तो नहीं बनवा लोगी।
युवती	जी नहीं, मैं अब गहने नहीं पहनूँगी। खद्दर पहनकर पति के साथ देश की सेवा करूँगी।

(जय, महात्मा गांधी की जय)

सूत्रधार : गाँधीजी तूफानी दौरा कर रहे थे, अलीबन्धु उनके साथ थे। लालाजी, नेहरूजी, राजेन्द्रप्रसाद, देशबन्धु, सभी मजे हुए खिलाडी अपने-अपने प्रान्तो मे जागृति का बिगुल वजा रहे थे। मालवीजयी, श्री शकराचार्य, योगी अरविंद और मुसलमान उलेमा, सब गाँधीजी का समर्थन कर रहे थे। ये हिन्दू-मुसलमान एकता के अपूर्व दिन थे। कोने-कोने से स्वर उठ रहा था .

सुनो सुनो भारत संतान।
हिन्दू मुसलमान सब गाओ निज नवीन जय गान।
हरी-भरी जिस पुण्य भूमि पर बहती है गगा की धार।
वैष्णव-बौद्ध-जैन आदिक हम उसपर हिंसा करें कि प्यार।
सत्याग्रह है कवच हमारा, कर देखे कोई भी वार।
हार मानकर शत्रु स्वय ही यहाँ करेंगे मित्राचार।
नही मारने मे मरने मे है विक्रम यश मान।
सुनो-सुनो भारत संतान।

सूत्रधार : ऐसे ही अवसर पर पाँच नवम्बर को सत्याग्रह का बिगुल वजा और १८ नवम्बर को युवराज भारत पधारे, परन्तु उस दिन देश भर मे 'न भूतो न भविष्यति' वाली हडताल हुई। कोई भी स्वाभिमानी भारतवासी स्वागत के जुलूसो, रोशनी और आतिशबाजी मे शरीक नही हुआ; लेकिन देश का दुर्भाग्य कि उसी दिन बम्बई मे झगडा हो गया। आगे वह इतना बढा कि गाँधीजी को उपवास करना पडा। उन्होने दुखी होकर कहा—'मेरे नथुनो से हिंसा की दुर्गन्ध आ रही है।' कुछ देर के लिए सत्याग्रह स्थगित हो गया। इस बीच मोपला-विद्रोह, मिदनापुर मे करबन्दी आन्दोलन और पजाब मे अकाली आन्दोलन चल रहे थे। गिरफ्तारियाँ भी हो

रही थी। समझौते की चर्चा भी चली। सरकार ने *पजाब की घटनाओ पर खेद प्रकट किया*, स्वराज की आशा दिलाई, परन्तु देश सन्तुष्ट नही हुआ, उलटे अहमदाबाद कांग्रेस ने स्वयसेवक संस्था का निर्माण करके सत्याग्रह पर अपनी मोहर लगा दी। प्रत्येक स्वयसेवक को यह प्रतिज्ञा लेनी पडती थी :

प्रतिज्ञा

स्वर १ : मैं जब तक सघ का सदस्य रहूँगा तब तक वचपन और कर्म से अहिंसात्मक रहूँगा और मन से भी अहिंसात्मक रहने का प्रयत्न करूँगा।

स्वर २ : मुझे समस्त जातियो की एकता में विश्वास है।

स्वर ३ : मेरा विश्वास है कि भारत के आर्थिक, राजनैतिक और नैतिक उद्धार के लिए स्वदेशी *का प्रयोग आवश्यक* है।

स्वर ४ : मैं हाथ का कता और बुना खद्दर पहनूँगा।

स्वर ५ : मैं हिन्दू होने की हैसियत से छूतछात को मिटाने में विश्वास करता हूँ।

स्वर ६ : मैं धर्म और देश के लिए बिना विरोध जेल जाने, आघात सहने और मरने के लिए तैयार हूँ।

सूत्रधार : सत्याग्रह का वेग फिर बढा। गांधी जी को छोडकर सब नेता जेल मे ठूस दिये गए, परन्तु १३ जनवरी सन् १९२२ को मद्रास मे फिर दगा हुआ। ५ फरवरी को चौरीचौरा के स्थान पर भीड ने थानेदार और सिपाहियों को थाने में बन्द करके जला डाला। गांधी जी के लिए यह असह्य था। उन्होने १२ फरवरी को सत्याग्रह स्थगित कर दिया। सब आन्दोलन बन्द हो गए और इसी समय १२ मार्च को सरकार ने साबरमती आश्रम

मे राजद्रोह के अपराध मे गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया। श्रीमती सरोजिनी नायडू ने लिखा है :

स्त्री स्वर : जिस समय गांधी जी की कृश, शात और अजय देह ने अपने भक्त, शिष्य और सहबन्दी शकरलाल बैंकर के साथ अदालत मे प्रवेश किया तो कानून की निगाह मे इस कैदी और अपराधी के सम्मान के लिए सब एक साथ उठ खडे हुए।

सूत्रधार : इसी अदालत मे एक हृदयस्पर्शी बयान देते हुए महात्मा ने जजा से कहा था .

स्वर : यदि आप लोग हृदय से समझते हैं कि जिस कानून का आप लोग प्रयोग कर रहे हैं, वह अनुचित है और मैं निर्दोष हू तो आप लोग अपने-अपने पदो से इस्तीफा दे दें। और यदि आप समझते हो कि जिस कानून का मेरे खिलाफ प्रयोग किया जा रहा है, वह प्रजा के लिए हितकर है तो मुझे कडे से कडा दण्ड दें।

सूत्रधार . जज ने अपराध स्वीकार करने पर गांधी जी को धन्यवाद दिया और उनकी महानता को स्वीकार किया। उसने लोकमान्य तिलक का उदाहरण देते हुए उन्हें छ वर्ष की सजा दी और आशा प्रकट की कि यदि सरकार आपको मुक्त कर दे तो उस दिन जितना आनन्द मुझे होगा, उतना शायद ही और किसी को हो। गांधी जी ने इस विचारशील दण्ड और लोकमान्य तिलक के नाम के साथ अपना नाम जोडने पर जज का आभार माना।

स्वर : उस महान् पुरुष के नाम के साथ मेरा नाम जोडा जाना मैं बडे-से-बडा भाग्य और बडी-से-बडी इज्जत समझता हूँ। और मुझे जो सजा दी गई है, वह तो मुझे हलकी-

गांधी टोपी वालो को देखा करते थे।

दृश्य एक

अहमद	बनवारी ! ओ बनवारी ! उधर तो देखो।
बनवारी	उधर ! उधर क्या है ? ओ—गांधी टोपी वाला है भाई। चुप बैठा रह। क्या जमाना आ गया है !
अहमद	जमाने की बात कहते हो ! बिलकुल उलटा हो गया है, उलटा !
बनवारी	हाँ भाई, इससे पहले जबकि राजा और नवाब मेम्बर होते थे तब वे हुक्कामो से मिलने आते थे।
अहमद	मिलने नही सलाम झुकाने आते थे।
बनवारी	अरे यार, हुक्कामो को क्या सलाम झुकाते ! अन्दर जाने से पहले हजार बार हमारी खुशामद करते थे और दस-दस रुपये बख्शीश देते थे तब कही मिल पाते थे।
अहमद	और अब ये स्वराजी लोग चिक उठाकर सीधे बड़े से बड़े हुक्काम के दफ्तर मे दनदनाते हुए घुस जाते है।
बनवारी	और हुक्काम भी चूँ नही करते। तभी तो कहते है—'टोपधरो को मात किया इन गाधी टोपी वालों ने।'
अहमद	(धीरे से) अबे आहिस्ता बोल, आहिस्ता ! कोई सुन लेगा।
सूत्रधार	यही नही, ये स्वराजी लोग कौंसिल मे जाकर सरकार के विरुद्ध जी जान से लड़ रहे थे। कभी वे सरकारी बजट को नामजूर करते और कभी काले कानूनो को रद्द करने का प्रस्ताव पेश करते थे। इसके विपरीत कांग्रेस का एक प्रभावशाली दल रचनात्मक कार्य पर जोर दे रहा था। यह मनमुटाव बहुत दिन तक चलता रहा, परन्तु अन्त म समझौता हो गया और ये दोनों

बल सन् १९२८ तक अपने-अपने ढग से स्वराज्य की लडाई लडते रहे। इस बीच साम्प्रदायिक दगो के कारण सन् १९२४ मे गाधीजी ने लम्बा अनशन किया, पर दगे बन्द नही हुए। १९२४ मे देशबन्धु चल बसे। सन् १९२५ मे काकोरी षड्यन्त्र केस हुआ। रामप्रसाद बिस्मिल और उनके साथी हँसते-हँसते फासी के तख्ते पर चढ गये। सन् १९२६ मे स्वामी श्रद्धानन्द साप्रदायिकता की वेदी पर शहीद हो गए। नवयुवक जान हथेली पर रख कर आतकवाद के परीक्षण करते रहे। उनके लिए

कवि — यूँही लिक्खा था किस्मत मे चमन पैराये आलम ने,
कि फस्लेगुल म गुलशन छूटकर है कैद जिन्दाँ की।
उसे यह फ़िक्र है हरदम नया तर्ज जफा क्या है
हमे यह शौक देखें तो सितम की इन्तिहा क्या है।

सूत्रधार — यह आग प्रचण्ड तो नही थी, पर जनता के हृदय मे असन्तोष अवश्य सुलग रहा था। इसी समय ब्रिटेन की सरकार ने साइमन कमीशन को नियुक्त करके यह चर्चा शुरू की कि माटेग्यू-सुधारो मे कुछ परिवर्तन किया जाय या नही। इसम एक भी भारतीय नही लिया गया था। भारतीयो के आत्म-निर्णय के अधिकार पर यह जबर्दस्त कुठाराघात था। यह देख कर नरम दल सहित सब दलों ने उसके बहिष्कार की आवाज बुलन्द की। देश-भर मे जोर की हडताल मनाई गई। जहाँ भी कमीशन गया, काले झडा और 'लौट जाओ' के नारो से उसका स्वागत हुआ। सरकार ने विरोधियो को खूब कुचला। लाठियाँ चली और

गोलीबारी की भी नौबत आई। लाहौर मे पजाब के शेर लाला लाजपतराय एक विशाल जलूस का नेतृत्व करते हुए डडो से पीटे गये।

दृश्य दो

(भीड का शोर-गुल=तुमुल ध्वनि)

समवेत स्वर : *'साइमन गो बैक ' 'साइमन गो बैक !' 'साइमन वापस चले जाओ !' 'साइमन वापस चले जाओ !' 'भारत !' 'भारतवासियो का !' 'भारत !' 'भारतवासियो का !' 'इन्कलाब जिन्दाबाद ।' 'इन्कलाब जिन्दाबाद।' 'महात्मा गाधी की जय।' 'पजाब केसरी की जय।'*

(गाने का समवेत स्वर)

माँ उर मे वह आग लगा दे,
शीतलता शोणित की हर ले।
रग-रग मे पौरुष-बल भर दे,
धधक एक जिसकी इस गीले
यौवन को ज्वालामय कर दे।

(घोड़े की टाप···पुलिस का स्वर)

गोरा थानेदार . ठहरो ! टुम लोग कहाँ जा रहा है ?

नेता १ : साइमन को वापिस करने।

गोरा थानेदार : टुम आगे नही बढ सकता। लौट जाओ।

नेता १ : हम आगे जायेंगे। हमे कोई नही रोक सकता।

गोरा थानेदार : कोई नही रोक सकटा ? हम देखेगा, तुम कैसे आगे बढटा है। ठहरो, मैं अब भी कहटा हूँ, टुम चले जाओ।

जनता : *हम नही जायेंगे, नही जायेंगे। साइमन जायेगा।*

गोरा थानेदार : अच्छा, टुम ऐसे नही जायेगा। सिपाहियो, डंडे मार-

मारकर इन बागियो को भगा दो।

(घोडो की टाप। शोर। नारे)

जनता • (पिटती-पिटती चिल्लाती है) साइमन वापस चले जाओ ! महात्मा गाधी की जय ! इन्कलाब जिन्दा-बाद !

एक स्वर अरे-अरे, देखो, सिपाही कैसे डडे बरसा रहे है। ओऽह, लालाजी…लालाजी…

दूसरा स्वर अहा हा ! वे रायजादा कैसे उनके आगे आ गये है। डा० सत्यपाल भाग रहे है ! क्या बात है ?

पहला वह देखो, वह गोरा लालाजी पर डडे बरसा रहा है। लालाजी पर डडे ! ••

दूसरा . लालाजी पर डडे !

तीसरा पजाब की आत्मा पर डडे !

चौथा देश के अभिमान पर डडे ! (शोर बराबर हो रहा है, अब शान्त हो जाता है)

सूत्रधार सचमुच उस दिन पजाब की आत्मा पर डडे पडे। वह तडप उठी। उसी तडप मे से भगतसिंह आदि क्रातिकारियो का जन्म हुआ। उसी तडप मे से रावी के तट पर स्वाधीनता की वाणी बुलन्द हुई। उसी तडप मे से नई-नई घटनाओ का जन्म हुआ। लालाजी उन्ही चोटो की मार से चल बसे। उधर देश के एक कोने मे बारडोली मे करबन्दी का सत्याग्रह आन्दोलन उठा और सरदार पटेल के नेतृत्व मे सोलह आना सफल हुआ। इसी वर्ष सर्वदल-सम्मेलन ने डोमिनियन सरकार मागते हुए नेहरू-रिपोर्ट मजूर की। यह तय पाया कि यदि साल भर म डोमिनियन शासन न मिला तो भारत पूर्ण स्वतन्त्रता को अपना ध्येय बना लेगा।

इसके साथ-साथ सरकार आतंकवाद और साम्यवाद के भय से जनता का दमन करती रही। सन् १९२९ में मेरठ-षड्यन्त्र केस में ३२ मजदूर नेता और बंगाल तथा लाहौर के अनेक षड्यन्त्र केसों में देश के अनेक क्रान्तिकारी नौजवान जेल में बन्द कर दिये गए या फांसी पर चढ़ा दिये गये। इन्हीं नौजवानों में एक नौजवान यतीन्द्रनाथ दास 'राजनैतिक बंदियों से मनुष्यों जैसा व्यवहार करने की मांग करता हुआ' ६६ दिन की भूख हड़ताल करके चल बसा।

कवि पूर्ण यतीन्द्र यतीन्द्रनाथ के
गुन-गुन कर गुणगान,
तड़प उठते किसके नहिं प्राण।
न हो उठता है पागल कौन,
देखकर बटुक भगत की शान।
जानकर भी कि लाजपतराय,
हुए थे कैसे महितमान।
न होती सिंह शक्ति सचरित,
बताओ किस कृतघ्न हृद्धाम।

सूत्रधार ऐसे अवसर पर १९२९ के अन्त में लाहौर में रावी के तट पर पं० जवाहरलाल नेहरू के सभापतित्व में कांग्रेस का महत्वपूर्ण अधिवेशन शुरू हुआ। उसने डोमिनियन स्टेटस' मांगा था, पर वह नहीं मिला। तब अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार कांग्रेस ने पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी।

दृश्य तीन

(जय-नाद)

जनता महात्मा गाधी की जय ! इन्कलाब जिन्दाबाद ! वन्देमातरम् ! स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

(शोर बन्द होता है, गम्भीर स्वर उठता है)

जनता हम भारतीय प्रजाजन भी अन्य राष्ट्रों की भाँति अपना जन्म सिद्ध अधिकार माँगते है कि हम स्वतन्त्र होकर रहें। अपने परिश्रम का फल हम स्वय भोगें। हम यह भी मानते हैं कि यदि कोई सरकार अधिकार छीन लेती है और प्रजा को सताती है तो प्रजा को उस सरकार को बदल देने का या मिटा देने का भी अधिकार है। अंग्रेजी सरकार ने भारतवासियो की स्वतन्त्रता का अपहरण ही नही किया है, बल्कि उसका आधार भी गरीबो के रक्तशोषण पर ही है और उसने आर्थिक, राजनैतिक, सास्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भारतवर्ष का नाश कर दिया है। अत हमारा विश्वास है कि भारतवर्ष का अंग्रेजो से सम्बन्ध-विच्छेद करके स्वराज्य या स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेनी चाहिए···किन्तु हम यह भी मानते हैं कि हमे हिंसा के द्वारा स्वतन्त्रता नही मिलेगी। इसीलिए हम ब्रिटिश सरकार से यथासभव स्वेच्छापूर्वक किसी भी प्रकार का सहयोग न करने की तैयारी करेंगे और सविनय अवज्ञा एव करबन्दी तक के साज सजाएँगे। हम शपथ-पूर्वक सकल्प करते हैं कि पूर्ण स्वराज्य की स्थापना के हेतु काग्रेस समय-समय पर जो आज्ञाएँ देगी, उनका हम पालन करते रहेंगे।

सूत्रधार : इस प्रतिज्ञा का यह परिणाम हुआ कि कौंसिलें फिर

खाली हो गई। सत्याग्रह का भार गांधीजी पर आ पड़ा। उन्होंने अपनी योजना से तत्कालीन वायसराय को अवगत कराते हुए २ मार्च का ऐतिहासिक पत्र एक अंग्रेज के द्वारा भेजा। उसमें नमक कानून तोड़ने के आंदोलन का नेतृत्व करने की अभिलाषा प्रकट की गई थी और साथ ही उन प्रसिद्ध ११ शर्तों का भी उल्लेख था, जिनके पूरा होने पर सत्याग्रह बन्द हो सकता था। वे शर्तें थी

स्वर १　　*सम्पूर्ण मदिरा निषेध कर दो और विनिमय की दर घटाकर एक शिलिंग चार पैंस रख दो।*

स्वर २　　जमीन का लगान आधा कर दो और उस पर कौंसिलो का नियन्त्रण रखो।

स्वर ३　　नमक का कर उठा दो और सैनिक व्यय मे कम-से-कम ५० फीसदी कमी कर दो।

स्वर ४　　बड़ी-बड़ी नौकरियो का वेतन कम से-कम आधा कर दो और विदेशी कपड़े के आयात पर निषेध-कर लगा दो।

स्वर ५　　भारतीय समुद्र-तट केवल भारतीय जहाजो के लिए सुरक्षित रखने का कानून पास कर दो।

स्वर ६　　राजनैतिक कैदियो को छोड़ दो। मुकदमे वापस ले लो। निर्वासित भारतीयो को वापस आने दो और धारा १२४ तथा सन् १८१२ का तीसरा रेग्यूलेशन उठा दो।

स्वर ७　　खुफिया पुलिस उठा दो और जनता को फिर हथियार रखने के परवाने दो।

सूत्रधार　　लेकिन इस पत्र का जो जवाब मिला, उसके लिए गांधी जी को कहना पड़ा—'मैंने घुटने टेककर वायसराय से रोटी की याचना की थी, परन्तु उन्होंने उसके बदले मे

पत्थर दे दिया।' इसके बाद १२ मार्च १९३० को गाधीजी अपनी प्रसिद्ध डाडी यात्रा पर चल पडे। हाथ मे दण्ड, कमर से लटकती घडी, बडे-बडे पग — वह एक ऐतिहासिक भव्य दृश्य था और प्राचीन काल की राम तथा पाण्डवो के वन-गमन की याद ताजा कराता था। सेनानी का कदम फुर्ती से उठता था और कोटि-कोटि मानवो को प्रेरणा देता था। ऐसा लगता था मानो —

कवि

चल पडे जिधर दो डग पग मे
चल पडे कोटि पग उसी ओर,
पड गई जिधर भी एक दृष्टि
गड गये कोटि दृग उसी ओर।

सूत्रधार

२४ दिन के बाद ५ अप्रैल को सेनानी सागर-तट पर पहुँचा। मार्ग मे जनता दर्शनो के लिए उमडी पडती थी। वह उन्हें रचनात्मक कार्य का उपदेश देता हुआ आगे बढ रहा था। ६ अप्रैल १९३० को प्रात साढे आठ बजे समुद्र मे स्नान करके बच्चो के खिलवाड की भाँति नमक का टुकडा उठा लिया। ससार हँस पडा, परन्तु उसी क्षण उस नमक के ज़रा से टुकडे से एक प्रचड ज्वाला फूटी, जिसने सारे देश को पागल बना दिया। गाधी फिर धरसना की ओर बढा और ५ मई को गिरफ्तार कर अज्ञात अवधि के लिए जेल मे डाल दिया गया। अब तो देश भर मे आन्दोलन फूट पडा और देखते-देखते उसने ऐसा विशाल रूप धारण किया कि सरकार काँप उठी। शराब की दुकानो पर और विदेशी वस्त्रो पर पिकेटिंग होने लगी। स्थान-स्थान पर नमक बनने लगा। स्वयसेवक पागलो की तरह

प्रतिज्ञा-पत्रो पर हस्ताक्षर करते और आग म कूद पडते…

दृश्य चार

(नार उठा है)

स्वयसेवक (पहले एक फिर सामूहिक स्वर) राष्ट्रीय महासभा ने भारतीय स्वाधीनता के लिए सविनय अवज्ञा का जो आन्दोलन शुरू किया है उसम मैं शरीक होना चाहता हूँ।

स्वयसेवक २ मैं कांग्रेस के शान्त एव उचित उपायो से भारत के पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के ध्येय को स्वीकार करता हूँ।

स्वयसेवक ३ मैं जेल जाने को तैयार हूँ और इस आन्दोलन म और भी जो कष्ट और सजाएँ मुझे दी जाएँगी, उन्हें मैं सहर्ष सहन करूँगा।

स्वयसेवक ४ जेल जाने की हालत मे मैं कांग्रेस-कोष से अपने परिवार के निर्वाह के लिए कोई आर्थिक सहायता नही माँगूँगा।

स्वयसेवक ५ मैं आन्दोलन के सचालको की आज्ञाओ का निर्विवाद रूप से पालन करूँगा।

सूत्रधार और इस प्रतिज्ञा का उन्होंने पूर्णतया पालन किया। सरकार के भीषण दमन को उन्होंने हँसते-हँसते सहा। उन दृश्यो को देखकर विदेशी सम्वाददाता काँप उठे। कभी-कभी तो वे दृश्य इतने दु खद हो जाते थे कि उन्हें आँखें फेर लेनी पडती थी। सचमुच स्वयसेवको मे इतना अनुशासन था कि मालूम होता था कि इन लोगो ने गाधीजी के अहिंसा धर्म को घोलकर पी लिया था।…

दृश्य पाँच

सिपाही	तुम्हारे हाथ मे क्या है ?
स्वयसेवक	नमक ।
सिपाही	नमक ! तुम नमक नही उठा सकते । यह विद्रोह है ।
स्वयसेवक	जी हाँ, मैं जानता हूँ कि यह विद्रोह है और आप भी जान लीजिये कि मैं विद्रोही हूँ ।
सिपाही	विद्रोही ! बहुत बढ-बढकर बातें करते हो ! लाओ, नमक मुझे दो ।
स्वयसेवक	. नही, नमक तुम्हे नही मिल सकता ।
सिपाही	कैसे नही मिल सकता । लाओ, इधर दो । लाओ । नही सुनते ! तो मुझे जबरदस्ती करनी पडेगी ! ठहर...
	(छीनता है)
स्वयसेवक	(हाथ छुडाता हुआ) नही दूँगा, नही दूँगा । प्राण दूँगा, पर नमक नही दूँगा ।
सिपाही	(जोर लगाता हुआ) प्राण दे देगा ! कैसे दे देगा ? तुझे नमक देना होगा ।
स्वयसेवक	(उसी तरह) मुट्ठी टूट जायगी, पर खुलेगी नही । आज मेरे देश का सर्वस्व इस एक मुट्ठी नमक मे छिपा हुआ है ।
	(भीड बढती है)
एक स्वर	अरे अरे ! क्या है ?
दूसरा स्वर	सिपाही नमक छीन रहा है ।
नारी स्वर	क्या ! क्या सिपाही नमक छीन रहा है ? अरे, इसकी कलाई खून से भर गई और वह हँस रहा है !
दूसरी नारी स्वर	तो देखते क्या हो, सब खाडी मे कूद पडो और नमक खोदना शुरू कर दो । देखें, किस किससे छीनता है !

किस किसका खून बहाता है !

पुरुषों का समवेत स्वर : हाँ-हाँ, आओ । महात्मा गांधी की जय ! आओ ..

नारियाँ : हाँ-हाँ चलो, महात्मा गांधी की जय !

(शोर, खुदाई का स्वर)

सूत्रधार : बस एक ओर से पुरुष और दूसरी ओर से स्त्रियाँ खाड़ी में उतर पड़ीं और नमक खोदने लगीं। पुलिस चकित-सी पीछे हट गई, पर सब कहीं यह नहीं हुआ। स्वयं-सेवकों पर बेहद मार पड़ी, परन्तु दमन का प्रत्येक नया हुक्म सत्याग्रह के लिए एक नवीन अवसर देता था। किसान करबन्दी की हलचल मचाने लगे। व्यापारी ब्रिटिश माल के बहिष्कार के लिए संगठन करने लगे। स्वयंसेविकाएँ शराब और विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना देकर लाठी की मार सहने लगीं। यह अद्भुत क्रान्ति थी। जो नारी आज तक घर के दरवाजे से नहीं निकली थी, वह बर्बर सत्ता का सामना करने के लिए एकदम रणभूमि में आ खड़ी हुई। स्वयंसेवक ऐसी नारियों को घर से ले आते थे और सन्ध्या को छोड़ आते थे। एक दिन एक नववधू को घर छोड़ आने वाला स्वयंसेवक भूल गया। वह भूखी-प्यासी तमाम दिन काम करती रही। आखिर सन्ध्या को जब उसकी अन्तिम साथिन को लेने उसका पति आया तो साथिन ने पूछा .

दृश्य छः

: क्यों बहन, तुम आज घर नहीं जाओगी ?

: जी, आज कोई बुलाने ही नहीं आया ।

साथिन — ओहो, वे भूल गए! कैसी बात हुई! अच्छा, तुम हमारे साथ चलो। तांगा है, तुम्हें छोड़ते चलेंगे, नहीं तो तुम्हारे घर वाले दुखी होंगे। (पति से) जी, यह बहन भी हमारे साथ चलेंगी।

पति — हाँ-हाँ, क्या डर है! बैठा लो। रास्ते में छोड़ते चलेंगे।

साथिन — जी हाँ, यही मैं कहती थी। आओ बहन, बैठो। घर जानती हो न?

नववधू — जी, पहचानती तो हूँ। (तांगा चलता है)

साथिन — कौन-सा मोहल्ला है?

नववधू — जी, रामगंज।

साथिन — रामगंज! वह तो यह आ गया। गली कौन-सी है?

नववधू — इमली वाली।

पति — बड़ी लम्बी गली है। यहीं से शुरू होती है। हाँ, घर किधर है?

नववधू — जी, वह दिखाई देता है, वह ··

साथिन — वह पीलेवाला?

नववधू — जी।

साथिन — देखिए जी, पीलेवाले मकान के आगे रोक लीजिये।

पति — जी, यह लीजिए। (तांगा रुकता है)

नववधू — जी-जी, यह मेरा घर नहीं है।

पति — नहीं है।

साथिन — अजी, बेचारी भूल गई। कभी घर से निकलने का काम ही क्या पड़ा होगा।

पति — अच्छा जी, आगे चलो। (तांगा चलता है) (आहिस्ता) न जाने महात्मा गांधी ने क्या जादू कर दिया है! (जोर से) पर अब घर देखती चलो।

साथिन — हाँ, बहू ! जरा ध्यान से देखती चलो।

नववधू — जी हाँ, देख रही हूँ, वह ··वह देखिये ··

साथिन — वह बुरजीवाला ?

नववधू — जी हाँ।

साथिन — अजी, उस बुरजीवाले के मकान के सामने रोक लीजिये।

पति — उसके ! अच्छा···(रोककर) लो भाई, ठीक है न, देख लो।

नववधू — जी-जी·· यह तो···।

साथिन — क्या यह भी नही ?

पति — बोलो महात्मा गाधी की जय ! अब कहिये ··

सूत्रधार — बेचारे न जाने कहाँ-कहाँ टकराये। किसी तरह पति का नाम जानकर मकान का पता लगाया। तो यह था गाधी जी का जादू ! इन्ही अशिक्षित, असूर्यपश्या चिरवदिनी नारियो ने जलूस निकाले। धरने दिए। लाठिया खाईं और जेल गईं। इन्होने अपने पतियो, पुत्रो, भाइयो को हँसते हसते इस धर्म-युद्ध मे भेजा और जो जरा भी डगमगाया तो राजपूतनियो की तरह आग बबूला हो उठी। एक युवक समय से पहले जेल से लौट आया। उसकी माँ ने देखा तो अचरज से भर उठी। पूछा

दृश्य सात

तुम आ गये बेटा ! पर तुम्हे तो छ महीने की सजा हुई थी।

हाँ माँ, हुई थी। पर वे लोग मुझे बहुत बुरी तरह मारते थे। देखो तो, सारे बदन पर नील पड गई है।

मॉं	· यह तो पहले ही जानते थे। क्या तू मार के डर से आया है ?
बेटा	: नही माँ, मैं भागकर नही आया।
माँ	. फिर ?
बेटा	माँ, मैं अब जेल नही जाऊँगा।
माँ	· मैं पूछ रही हूँ, तू आया कैसे ? क्या तूने माफी मागी है ? (सगीत—क्रोध और व्यग्रता) तू बोलता क्यो नही ? क्या तूने माफी माँगी है ? बता ! (स्वर मे विषाद, क्रोध—सगीत) तू गरदन हिलाता है। तूने माफी माँगी है। तूने माफी माँगी है। (तीव्रता)
बेटा	· (कांपकर) माँ, माँ··
माँ	मोहन (व्यथा)
बेटा	· माँ, मैं, क्या करू ? (विवशता···करुणा)
माँ	तो तू मार नही खा सकता ? तू देश के लिए, गाधीजी के लिए, मार नहीं खा सकता ? तू कायर है। तू मेरा बेटा होकर कायर निकला। तूने ··तूने मुझे किसी को मुँह दिखाने लायक नही रक्खा। (बेहद क्रोध)।
बेटा	: माँ, तू मुझे माफ कर दे।
माँ	. मैं तुझे माफ कर दूँ ! · हाँ, मैं तुझे माफ कर सकती हू, पर तुझे प्रायश्चित्त करना होगा। तुझे फिर सत्याग्रह करके जेल जाना होगा। मार सहनी होगी।
सूत्रधार	: इधर नारी शक्ति का रूप लेकर भारत के रगमच पर आ रही थी। उधर किसान राष्ट्रीय झडो को सलामी देने के लिए एकत्र होने लगे, मानो अपने आचरण से वे दिखाने लगे कि हम ब्रिटिश सत्ता का नही, बल्कि कांग्रेस का हुक्म मानेंगे। भारत का नक्शा चार-पाँच वर्षों म बदल गया और इस युद्ध मे निर्मित आत्म-तेज

का प्रकाश सारी दुनिया मे फैल गया। ससार के सब विचारशील लोग हिन्दुस्तान को इस अपूर्व क्रान्ति की ओर भौचक होकर देखने लगे। एक ओर आर्डिनेंस-राज्य था, दूसरी ओर उन आर्डिनेन्सो को तोडने का व्यवस्थित और निश्चित प्रयत्न। लगभग एक लाख व्यक्ति होठो पर मुस्कान और हृदय मे यह प्रार्थना लिये जेल गये।

कवि : यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रो बार भी। तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान मे लाऊ कभी। हे ईश, भारतवर्ष मे शत बार मेरा जन्म हो, कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।

सूत्रधार : इस आन्दोलन के कारण नारी जागी। किसान जागे। धार्मिक बन्धन ढीले हुए। खादी ने वर्गों और सर्व-साधारण के बीच की शोचनीय खाई को बहुत कुछ पाटा। श्रम का सम्मान बढा। मानव की एकता बढ़ी। जैसे-जैसे आन्दोलन बढा, विदेशी वस्त्रो का आयात घटा। जिन इलाको मे करबन्दी हुई, वहाँ समूचे गाँव को घेर कर भयकर अत्याचार हुए तो किसान हिजरत कर गये। पूछने पर वे यही कहते थे—'गाँधीजी जेल मे है तो हम घरो मे कैसे रह सकते है ?' वे बडे अपूर्व दिन थे। हरएक घर कांग्रेस का दफ्तर और हरएक व्यक्ति देश के झण्डे को प्रणाम करके झुकता था।

कवि—

झंडा ऊँचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
सदा शक्ति सरसाने वाला, प्रेम सुधा बरसाने वाला,
वीरो को हरषाने वाला, मातृ-भूमि का तन मन सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में,
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाये भय संकट सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
इस झण्डे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
आओ, प्यारे वीरो! आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये,
विश्व-विजय करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा॥

सूत्रधार : परन्तु इन दिनों जो अपूर्व बात हुई, वह थी सीमा प्रान्त के पठानों का सत्याग्रह आन्दोलन में शामिल होना। वर्षों से एक नई शक्ति खान अब्दुल गफ्फार खाँ के रूप में खूँखार पठानों को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ा रही थी। वे अपने को खुदाई खिदमतगार कहते थे, पर अंग्रेज सरकार बन्दूक वाले पठान से इतना नहीं डरती थी, जितना खुदाई खिदमतगार से। उन लोगों ने इस आन्दोलन में जिस बहादुरी से भाग लिया, वह जहाँ आश्चर्यजनक थी, वहाँ प्रशंसा के योग्य भी थी। उन पर गोलियाँ बरसती थीं और वे ऐसे शांत रहते थे, जैसे फूल बरस रहे हों। पेशावर-हत्याकांड की दर्दनाक पर गौरवमयी कहानी हमारे स्वाधीनता-संग्राम का एक उज्ज्वल पक्ष है। इन जैसे बलिदानों का परिणाम था कि शक्तिशाली सरकार को एक बागी और अर्ध-नग्न फकीर से समझौता करने को विवश होना पड़ा।

५ मार्च सन् १९३१ को जो गांधी-इर्विन पैक्ट हुआ, उसकी मुख्य बातें थीं :

(स्वर उठते हैं)

स्वर १　: कांग्रेस सत्याग्रह स्थगित कर देगी।

स्वर २　: सरकार समस्त राजबन्दियों को रिहा कर देगी।

स्वर ३　: जो लोग अपने व्यवहार के लिए नमक तैयार करेंगे, सरकार उन्हें उसे बनाने से न रोकेगी।

स्वर ४　: शासन-सुधारों की योजना पर आगे जो विचार होगा, उसमें कांग्रेस के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

स्वर ५　: विदेशी माल और शराब आदि के व्यवहार को रोकने के लिए शांत पिकेटिंग हो सकेगी।

स्वर ६　: सत्याग्रह के सम्बन्ध में जो आर्डिनेन्स प्रचारित हुए थे, वे सरकार वापिस ले लेगी।

सूत्रधार　: समझौता क्या हुआ, नवयुवकों के आक्रोश के बावजूद, जो भगतसिंह और उसके साथियों को फांसी देने के कारण उमड रहा था, देश में हर्ष की लहर दौड गई; पर वह स्थायी न हो सकी। लार्ड इर्विन के बाद लार्ड विलिंगडन उनका पूरा-पूरा पालन न कर सके। फिर गांधीजी गोलमेज कान्फ्रेंस में कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए। इससे कुछ राजनैतिक लाभ तो न हुआ, पर इंग्लैण्ड की जनता ने भारत के हृदय, उस नंगे फकीर को देखा, जो शाही महल छोडकर गरीबों के केन्द्र लोस्टर के यतीमखाने में ठहरा था। उसी यतीमखाने में जब उसका जन्म दिन आया तो वहां के बच्चे खुशी से पागल हो उठे

दृश्य आठ

बालक १ ; क्यो भाई, क्या वे यहा आयेंगे ?
बालक २ : वे हमारे साथ भोजन करने नही आयेंगे ?
बालक ३ : मैंने उन्हें सिरील की अगली खिड़की मे से देखा था।
बालक २ : वे जिराल के घर गये थे।
बालक ३ : जब वे मेरे घर आये थे तब मैंने उनको अपने सभी खिलोने दिखलाए थे।
बालक १ मैं उन्हें मि० गांधी कहता हूँ।
बालक ३ : मैं उन्हें *काका गांधी कहता हूँ।*
बालक २ : सो भाई, हम उन्हें कुछ भेजें।
बालिका १ : हम उन्हें खिलौने का कुत्ता भेजें।
बालिका २ : सफेद छोटा कुत्ता। क्यों ?
बालिका १ : हाँ, वही सफेद छोटा कुत्ता।
बालक १ : हम लोग उन्हें एक जोडा जते क्यो न भेजें ?
बालक २ : हाँ, उनके नगे पैरो को सर्दी लगनी होगी।
बालक ३ : और वे कमीज भी तो नही पहनते।
बालिका १ : हाँ-हाँ, मैं उन्हें एक गरम स्वेटर भेजूंगी।
बालिका २ और मैं जाँघिया।
सूत्रधार इन बच्चो का निर्मल स्नेह पाकर गरीब भारत के प्रतिनिधि गाधीजी को निस्सन्देह शान्ति मिली होगी, परन्तु जिस गरीबी को इन बच्चो ने समझा, उसे अधिकारी न समझ सके। गाधीजी निराश लौटे, उधर भारत मे तो उनके पीछे ही अत्याचार का बाजार फिर गरम हो चुका था। उन्होंने परिषद् मे कहा था, 'कांग्रेस पूर्ण स्वतन्त्रता चाहती है। वह सेना, वैदेशिक नीति और अर्थ-विभाग पर भारतीयो का अधिकार चाहती है, पर

ब्रिटेन से सम्बन्ध कट करके नहीं, बल्कि मित्र के रूप मे।' वायसराय ने इसका उत्तर कांग्रेस को जेल मे ठूँसकर दिया और जब गांधीजी ने शाति की भिक्षा मांगी तो उन्हें भी यरवदा मन्दिर मे पहुँचा दिया गया। सत्याग्रह-समर फिर देशव्यापी हुआ। फिर वही जलूस, जलसे, पिकेटिंग, झडा अभिवादन, फिर वहीं सामूहिक गिरफ्तारी, कुर्की, लाठी चार्ज और गोलीबारी। इस बार पहले से भी अधिक व्यक्ति जेल गये। उन्होने जैसे वायसराय से कहा

परवाह अब किसे है इस जेल और दमन की,
एक खेल हो गया है फांसी पै झूल जाना।

सूत्रधार · इन्ही दिनो कांग्रेस के अधिवेशन का अवसर आ पहुँचा, पर कांग्रेस तो गैरकानूनी थी। सरकार किसी भी शर्त पर उसकी बैठक नहीं होने देना चाहती थी। एक ओर शक्तिशाली साम्राज्य और दूसरी ओर अत्याचारो से पिसे हुए विद्रोही। सम्मेलन के मनोनीत सभापति मालवीयजी बन्दी कर लिए गए थे। परन्तु ५०० प्रतिनिधि दिल्ली के घटाघर के पास इकट्ठे हुए। श्री रणछोड़दास उसके सभापति बने। उन्होंने कांग्रेस की रिपोर्ट स्वीकार की और चार प्रस्ताव पास किए

दृश्य नौ

सभापति आप रिपोर्ट स्वीकार कर चुके हैं। अब मैं चार प्रस्ताव आपके सामने रखता हूँ। पहला प्रस्ताव यह है—'राष्ट्रीय महासभा का यह अधिवेशन इस बात की फिर पुष्टि करता है कि पूर्ण स्वाधीनता ही कांग्रेस का लक्ष्य है।' चूँकि समय कम है, मैं इन प्रस्तावों पर कुछ

नही बोलूंगा। क्या आप इसे स्वीकार करते हैं ?

प्रतिनिधि : हमे स्वीकार है।

सभापति : कोई विरोध ?···कोई नही। प्रस्ताव स्वीकृत। दूसरा प्रस्ताव यह है—'राष्ट्रीय महासभा का यह दिल्ली अधिवेशन सविनय अवज्ञा के फिर से जारी होने का हार्दिक समर्थन करता है!' क्या आप इसे स्वीकार करते हैं ?

प्रतिनिधि : स्वीकार है।

सभापति : विरोध! ···नही···दूसरा प्रस्ताव पास। तीसरा प्रस्ताव सुनिये—'राष्ट्रीय महासभा का यह दिल्ली अधिवेशन गाधीजी के आह्वान पर राष्ट्र ने जो सुन्दर जवाब दिया है, उसके लिए उसे बधाई देता है और महात्माजी के नेतृत्व मे पूर्ण विश्वास प्रकट करता है।' इसका कोई विरोध करता है ?

प्रतिनिधि : कोई नही।

सभापति : यह भी पास हुआ। चौथा प्रस्ताव इस प्रकार है—'राष्ट्रीय महासभा का यह दिल्ली अधिवेशन अहिंसा मे अपने विश्वास की फिर से पुष्टि करता है और कांग्रेस को, खासकर सीमाप्रान्त के बहादुर पठानो को, अधिकारियो की ओर से अधिक से अधिक उत्तेजना की करतूतें की जाने पर भी अहिंसात्मक रहने पर बधाई देता है।'

प्रतिनिधि : हमे मजूर है।

प्रतिनिधि १ : क्या बात है ? पुलिस कही दिखाई नही देती ?

प्रतिनिधि २ : वह हमे नई दिल्ली मे खोज रही है। (हँसी) लो, वह वन्देमातरम् शुरू हो गया। हमारा अधिवेशन समाप्त हो गया। अब आती रहे पुलिस !

(वन्देमातरम् गीत का स्वर)

सभापति : मैं इस अधिवेशन को समाप्त घोषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि अगले वर्ष हम और भी शानदार परिस्थितियों में मिलेंगे। वन्दे मातरम्!

प्रतिनिधि : वन्देमातरम्! इन्कलाब ज़िन्दाबाद! महात्मा गाधी की जय!

एक प्रतिनिधि : लो, वह आ गई पुलिस! (हँसकर) साँप तो निकल गया, अब लाठी पीटा करो!

(घोड़ों की टाप)

पुलिस थानेदार : कहाँ हैं प्रतिनिधि? कहाँ हैं वे कांग्रेसी बागी?

एक स्वर : जी, हमें तो पता ही नहीं।

थानेदार : क्या यहाँ कोई जलसा हुआ था?

वही स्वर : जी हाँ, कुछ लोग एक घंटे से कुछ पढ़ रहे थे और गा भी रहे थे।

थानेदार : ओफ, ये बागी! ये लोग बड़े शैतान हैं। चूना लगा गये। इनको जीतना बड़ा मुश्किल है। सिपाहियो, इन लोगों को पकड़ लो, इन्होंने क्यों नहीं खबर दी?

वही स्वर : हमें पकड़ लो।

दूसरा : हाँ-हाँ, जितने चाहे पकड़ लो। सब तैयार हैं। (हँसी, नारे) वन्दे मातरम्, महात्मा गाधी की जय! इन्कलाब ज़िन्दाबाद!

(शोर, पकड़ धकड़, फिर शाति)

सूत्रधार : इस प्रकार यह युद्ध चल रहा था कि साम्प्रदायिक निर्णय आ पहुँचा। उसमें अछूतों को हिन्दुओं से अलग कर दिया गया था। इस पर गाधीजी ने लम्बे पत्र-व्यवहार के बाद २० सितम्बर सन् १९३२ को आमरण अनशन शुरू किया और दोनों दलों के समझौते और स्वीकृति

के बाद ही इसे तोडा। इस व्रत से उन्होने हिन्दूजाति का अग-भग होने से बचा लिया। प्रसिद्ध पूना-पैक्ट के बाद देश का ध्यान हरिजन-आन्दोलन की ओर खिचा। इधर गाँधीजी ने कांग्रेस मे गुप्त प्रवृत्तिया बढती देखकर सत्याग्रह-आन्दोलन बन्द कर दिया। इसके स्थान पर व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया, पर १६ जनवरी सन् १६३४ को अचानक बिहार मे विनाशकारी भूकम्प आ जाने के कारण देश का ध्यान सत्याग्रह से हटकर भूकम्प-पीडित जनता की सहायता की ओर लग गया। इस पर अप्रैल सन् १६३४ मे गाँधीजी ने सत्याग्रह को पूर्णरूप से स्थगित करके काग्रेस के नेताओ को कौंसिल-प्रवेश की स्वीकृति दे दी और स्वय हरिजनो के उद्धार के लिए देश मे घूमते रहे मानो उन्होने कहा—'जो स्वतन्त्रता तुम माँगते हो, वही तुम जब तक दूसरों को न दोगे तब तक सत्याग्रह के पावन मत्र के अधिकारी नही हो सकोगे।' इसी पर कवि उन्हें सम्बोधित कर पुकार उठा ·

कवि : तुम काल-चक्र के रक्त सने दशनो को कर से पकड सुदृढ
मानव को दानव के मुँह से ला रहे खीच बाहर बढ-बढ।
पिसती कराहती जगती के प्राणो मे भरते अभयदान,
अधमरे देखते हैं तुमको किसने आकर यह किया त्राण।
पद सुदृढ, सुदृढ कर सपुट से तुम काल-चक्रकी चाल रोक
नित महाकाल की छाती पर लिखने करुणा के पुण्य श्लोक ॥

पंचम अंक

'भारत छाडो'

कवि : सत्य भले ही जगती तल मे दिखे लटकता सूली पर,
और दिखे अन्याय शान से डटा हुआ सिंहासन पर।
सूली का प्रिय सखा सत्य वह तो इस भावी का,
पथ पलटा देगा क्षण भर मे होगा पूजित घर-घर।
सदा खडे भगवान रहेगे तिमिराच्छन्न गगन मे,
अपने प्यारो को बल देने जन मे और विजन मे।

सूत्रधार : इन शब्दो के साथ डा० राजेन्द्रप्रसाद ने अक्तूबर सन् १९३४ मे बम्बई कांग्रेस के सभापति पद से दिये हुए अपने भाषण को समाप्त किया। उन्होने देश को बताया कि *सत्याग्रह मे पराजय का कोई स्थान नही है। सत्याग्रह तो स्वय एक भारी विजय है।* फिर भी युवको का एक दल तत्कालीन नीति से असन्तुष्ट था। उसने मई १९३४ मे समाजवादी दल की स्थापना की। इधर सत्याग्रह स्थगित हो चुका था और काग्रेस स्वतन्त्रता का युद्ध कौसिलो मे जाकर लडना चाहती थी। इसलिए वह इस अधिवेशन के समाप्त होते ही केन्द्रीय धारासभा के चुनाव मे कूद पडी। लोगो ने एक बार फिर यह महसूस किया, जैसे उनमे जीवन का सचार हो रहा है, इन चुनावो मे :

पहला स्वर : सरकार के विरोध के बावजूद जनमत की अपूर्व विजय हुई।

दूसरा स्वर : स्थान-स्थान सरकार-परस्त लोगों की जमानतें जब्त हो गईं।

तीसरा स्वर : जनता के प्रतिनिधियों ने बार-बार सरकार के प्रतिक्रियावादी प्रस्तावों को ठुकरा दिया।

चौथा स्वर : उन्होंने रेलवे बजट को नामंजूर कर दिया।

पहला स्वर : उन्होंने सालाना बजट को भी मंजूर नहीं किया।

दूसरा स्वर : उन्होंने भारत और के ब्रिटेन बीच हुए तिजारती समझौते को समाप्त करने की मांग की।

तीसरा स्वर : उन्होंने नजरबन्दों को छोड़ने और दमनकारी कानूनों को भंग कर देने का प्रस्ताव किया।

सूत्रधार : जनता के प्रतिनिधि इस प्रकार अन्दर घुसकर सरकार का नाकों चने चबा रहे थे; परन्तु फिर भी सरकार का दमन चक्र पहले की तरह पूरी तेजी से घूमता रहा। ऐसे समय में अपनी पत्नी कमला नेहरू की मृत्यु के बाद, यूरोप से लौटने पर सन् १९३६ में पं० जवाहरलाल नेहरू ने देश का नेतृत्व संभाला और दमन के बावजूद सन् १९३५ के ऐक्ट के अधीन धारासभाओं के चुनावों में भाग लेने का निश्चय किया। चुनाव के घोषणापत्र में और बातों के साथ साथ इन बातों को विशेष रूप से पूरा कराने की प्रतिज्ञा की गई थी :

पहला स्वर : लगान में काफी कमी की जायगी।

दूसरा स्वर : देहाती कर्ज-भार घटा दिया जायगा।

तीसरा स्वर : दमनकारी कानून समाप्त कर दिये जायेंगे।

चौथा स्वर : राजनैतिक बन्दी और नजरबन्द रिहा कर दिये जायेंगे।

पांचवां स्वर — सविनय आज्ञा भग आदोलन के दौरान मे सरकार ने जो जमीन जायदाद बेची या जब्त की हो, वह वापस कर दी जायगी।

छठा स्वर — मिल मजदूरो के लिए केवल आठ घटे दैनिक काम होगा।

सातवां स्वर — उन्हें जीवन निर्वाह के लिए काफी वेतन दिया जायगा।

आठवां स्वर — नशे की चीजो का निषेध होगा।

नवां स्वर — बेकारी मिटाने का प्रयत्न किया जायगा।

सूत्रधार — उस दिन यह भी स्पष्ट कर दिया गया था कि हम लोग धारासभाओ मे नये विधान और सरकार से सहयोग करने के लिए नही, बल्कि उनसे लडाई लडने के लिए जा रहे है। इन चुनावो का परिणाम यह हुआ कि देश म एक सिरे से दूसरे सिरे तक राजनैतिक जागृति का तूफान आ गया एक क्रान्ति शुरू हो गई। सरकार के अनेक बन्धनो के बावजूद लोग दल बना-बनाकर गाते बजाते पोलिग बूथो पर जाते थे और महात्मा गांधी को वोट देते थे।

दृश्य एक

भीड — (समवेत स्वर) महात्मा गांधी की जय! इन्कलाब जिन्दाबाद! इन्कलाब जिन्दाबाद! भारतमाता की जय हो! भारतमाता की जय हो!

झडा ऊंचा रहे हमारा

विजयी विश्व तिरगा प्यारा, झडा ऊंचा रहे हमारा।

सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेमसुधा सरसानेवाला,

वीरो को हरषानेवाला, मातृभूमि का तन मन सारा,

झडा ऊंचा रहे हमारा।

माहात्मा गांधी की जय ! भारतमाता की जय !
इन्कलाब जिन्दाबाद !

पहला स्वर : अच्छा, भाइयो ! अब एक-एक करके अन्दर चलो और अपनी-अपनी राय दो। याद रखना आजादी का बक्स पीला है।

दूसरा स्वर : हमें खूब याद है। हम आजादी को नही भूल सकते।

एक वृद्ध : (जाते-जाते) हमे तो भइया, गांधी महात्मा का नाम याद है। उसे ही याद रखेंगे। (अवकाश) क्यो बाबू जी, पर्ची कहाँ पड़ेगी ?

चुनाव अफसर : यही पडेगी, तुम किसे वोट दोगे ?

वृद्ध : गांधी महात्मा को।

चुनाव अफसर : गांधी महात्मा तो उम्मेदवार नही हैं।

वृद्ध : नही है ! कैसे नही हैं ? सारे मुल्क में उनके नाम की जय बोली जा रही है। हमारे तो वे ही राजा हैं। हम पर्ची उन्ही के बकस में डालेंगे।

चुनाव अफसर : बाबा, गांधी महात्मा चुनाव नही लड़ रहे हैं। उनकी ओर से प० श्रीराम हैं। वे कांग्रेस के उम्मीदवार हैं।

वृद्ध : ना बाबूजी, मैं तुम्हारे भुलावे में नही आने का ! मैं सिरीराम-विरीराम किसी को न जानूं ! मेरी परची तो गांधी महात्मा के बक्स मे डाल दो।

चुनाव अफसर : बाबा, तुम तो समझते नही। लो, यह परची उधर बक्स रखा है, डाल आओ।

वृद्ध : पर कौन-सा है, यह तो बताओ।

चुनाव अफसर : (क्रोध) दिमाग खा लिया। अजीब मूर्ख है। बाबा, वह पीला बक्स कांग्रेस का है और लाल…

वृद्ध : बस-बस, पीला ही चाहिए। वही आजादी का बकस है। वही गांधी महात्मा का बक्स है। बोल महात्मा

गाँधी की जय !

सूत्रधार : यह अकेला एक दृश्य नही था। तब देश के कोने-कोने मे ऐसे ही दृश्य देखने को मिलते थे। परिणाम यह हुआ कि जिस कांग्रेस को सरकार ने मरा हुआ समझ लिया था, उसने प्रान्तीय धारासभाओ की १५८५ सीटो मे से ७११ पर कब्जा कर लिया और ६ प्रान्तो मे तो उसका स्पष्ट बहुमत हो गया। शेष प्रान्तो मे भी उनके बिना शासन चलाना असम्भव था। फिर भी ये लोग पद-ग्रहण से पहले सरकार से यह आश्वासन चाहते थे कि वह इनके दैनिक कार्यों मे कोई हस्तक्षेप न करेगी। पहले तो सरकार झिझकी, परन्तु महात्मा गाधी भी दृढ रहे और अन्त मे सरकार को झुकना पडा। तब काग्रेस ने युक्तप्रान्त, बिहार, बम्बई, उडीसा, मध्यप्रान्त, मद्रास—इन छ प्रान्तो मे, जुलाई सन् १९३७ मे अपने मत्रि-मण्डल बना लिये। बाद मे आसाम और सीमाप्रान्त भी इनके साथ आ मिले। इस प्रकार बगाल, पजाब और सिंध को छोडकर सारे ब्रिटिश भारत मे जनता का राज्य स्थापित हो गया। सरकारी भवन 'वन्देमातरम्' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के स्वर-घोष से गूँज उठे

पहला स्वर जनता मे हर्ष की लहर दौड गई।

दूसरा स्वर वर्षों से बिछडे राजबन्दी और जलावतन अपने-अपने घरो को लौटे।

तीसरा स्वर हरिजनो पर लगे हुए प्रतिबन्ध टूटने लगे।

चौथा स्वर मादक द्रव्यो के निषेध का स्वर गूँज उठा।

पांचवां स्वर किसानो ने सुख की साँस ली। उन्हे हर प्रकार की सहायता मिलने लगी।

छठा स्वर : शिक्षा का प्रचार तेजी से बढा।

सातवाँ स्वर . घरेलू उद्योग-धन्धो का विकास होने लगा।

आठवाँ स्वर · बड़े उद्योगो के लिए नेशनल प्लानिंग कमेटी बनाई गई।

सूत्रधार : अब तक जो बगावत करते रहे थे, उनको इस योग्यता से शासन करते देखकर सब चकित रह गये। लार्ड लिनलियगो तक को कहना पडा कि इन लोगो ने अपने कार्य का सचालन बडी सफलतापूर्वक किया; परन्तु जहाँ एक ओर सफलता थी, वहाँ दूसरी ओर असफलताएँ भी थी। एक ओर मुस्लिम लीग से सघर्ष बढ़ता जा रहा था, दूसरी ओर १९३९ मे, त्रिपुरी-अधिवेशन के अवसर पर, काग्रेस स्वय फूट के भँवर मे फँस गई। सुभाषचन्द्र बोस काग्रेस छोडकर चले गये उन्होने 'फारवर्ड ब्लाक' की स्थापना की। इन्ही दिनो राजकोट के प्रश्न को लेकर गाधीजी ने उपवास किया, इस वर्ष की सबसे बडी घटना, जिसने विश्व का रूप ही पलट दिया, द्वितीय महायुद्ध की थी।

पहला स्वर · गत बारह वर्षों से जिस विश्व-युद्ध के बादल आकाश मे मडरा रहे थे, वही पहली सितम्बर को बरस पड़े।

दूसरा स्वर . हिटलर ने पिछले महायुद्ध का बदला लेने के लिए पोलैंड पर आक्रमण कर दिया।

तीसरा स्वर : फिर तो एक के बाद एक देश युद्ध की लपटों में कूद पडा।

चौथा स्वर . भारत के वायसराय ने तीन सितम्बर को भारत को भी उस ज्वाला मे झोंक दिया।

पाचवाँ स्वर : दूसरे स्वाधीन उपनिवेशो की तरह किसी ने उसकी राय लेने की चिन्ता नही की।

सूत्रधार : महात्मा गाधी युद्ध में अपना नैतिक सहयोग देने को

तैयार थे; परन्तु साथ ही उन्होंने युद्ध में भारत की हैसियत और भविष्य में उसका स्थान स्पष्ट करने की माँग की।

पहला स्वर युद्ध-उद्देश्यों की घोषणा करो।

दूसरा स्वर किसी बाहरी प्रभाव से मुक्त विधान-परिषद् का आयोजन करो।

तीसरा स्वर भारत को एक स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित करो।

सूत्रधार वायसराय ने इस माँग का अपमानजनक उत्तर देते हुए कहा कि आवश्यकता हुई तो सरकार कुछ चुने हुए नेताओं से सलाह-मशविरा करने को प्रस्तुत होगी। इस पर मन्त्रिमण्डलों ने अपने पदों से इस्तीफे दे दिए। फिर भी सरकार से बातें चलती रहीं; लेकिन जब वायसराय और भारत-मन्त्री ने जनता की ओर ध्यान नहीं दिया तो गाधीजी ने, १५ सितम्बर सन् १६४० को, व्यक्तिगत सत्याग्रह छेड़ने का निश्चय किया। देश एक बार फिर त्याग और बलिदान के नारों से गूँज उठा। १६ अक्तूबर सन् १६४० को एक बार फिर संग्राम की रणभेरी बज उठी

दृश्य दो

समवेत स्वर महात्मा गाधी की जय! भारतमाता की जय! इन्क़लाब जिन्दाबाद!

एक स्वर : युद्ध में न देंगे एक पाई, न जाएगा एक भी भाई।

समवेत स्वर युद्ध में न देंगे एक पाई, न जाएगा एक भी भाई।

सत्याग्रही : जन या धन से ब्रिटेन के युद्ध-प्रयत्न में सहायता देना गलत है। युद्ध का एकमात्र उपचार युद्ध-मात्र का अहिंसात्मक प्रतिरोध से मुकाबला करना है।

एक स्वर : ये तो प्रतिज्ञा दोहराये जा रहे हैं। कुछ करते नही।

दूसरा स्वर : यह युद्ध का नैतिक विरोध है भाई, और यह विशुद्ध अहिंसा से उत्पन्न हुआ है। इसलिए इस युद्ध के पहले सैनिक श्री विनोबा भावे थे। गाधीजी के बाद अहिंसा को समझनेवाले वे ही हैं।

पहला स्वर : ठीक है, युद्ध-काल मे गाधीजी प्रदर्शनादि करके सरकार को तग करना नही चाहते। सचमुच गाधीजी बड़े विलक्षण व्यक्ति हैं...। लो वह पुलिस आ गई।

(पुलिस का प्रवेश)

सत्याग्रही : जन या धन से ब्रिटेन के युद्ध-प्रयत्न मे सहायता देना गलत है। युद्ध का एकमात्र उपचार युद्ध-मात्र का अहिंसात्मक प्रतिरोधसे मुकाबला करना है। जन या धन...

थानेदार : मैं आपको गिरफ्तार करता हूँ। नीचे आइये।

सत्याग्रही : मैं तैयार हूँ, चलिये।

भीड़ : (नारे लगाती है) महात्मा गाधी की जय! इन्कलाब जिन्दाबाद! भारतमाता की जय!

सत्याग्रही : भाइयो! महात्माजी की आज्ञा है कि आप कोई प्रदर्शन न करें। शान्ति से घर लौट जाएँ। चलिये, थानेदार साहब, हम चलें। कुछ नही होगा।

सूत्रधार : और कही कुछ नही हुआ। फिर भी दमन-चक्र तेजी से घूमने लगा। लगभग ५००० व्यक्ति जेल मे ठूस दिए गए और २ लाख से अधिक जुर्माना किया गया। इधर युद्ध का रूप पलटने लगा। २२ जून सन् १९४२ को जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया और प्रशान्त महासागर मे जापानियो ने युद्ध छेड दिया। तब सरकार और जनता दोनो ने परिस्थिति पर फिर विचार किया। परिणामस्वरूप सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया। सर-

कार ने सत्याग्रहियों को छोड दिया और सर स्टैफर्ड क्रिप्स को समझौते के लिए भेजा। वे ये प्रस्ताव लेकर आये

पहला स्वर : युद्ध समाप्त होने पर नवीन शासन-विधान निर्माण करने के लिए एक निर्वाचन सस्था बनेगी।

दूसरा स्वर : उसमे देशी रियासतें भी भाग लेंगी।

तीसरा स्वर . कोई प्रान्त नये विधान को स्वीकार न करे तो उसे ऐसा करने का अधिकार होगा।

चौथा स्वर . सरकार और सस्था मे एक सन्धि होगी, जिनके अनुसार अल्पसख्यकों की रक्षा के लिए व्यवस्था की जायेगी।

पाचवां स्वर : युद्ध काल मे सम्पूर्ण सैनिक, नैतिक और आर्थिक साधनो को सघटित करने की जिम्मेदारी युद्ध काल के लिए विस्तारित शासन परिषद् पर होगी।

सूत्रधार इन प्रस्तावो के प्रकाशित होते ही देश की आत्मा को गहरा धक्का लगा, विशेषकर गाधीजी को बहुत कष्ट पहुँचा। वे अस्वीकार कर दिये गए। भारत और ब्रिटेन मे कटुता बढ़ने लगी। गांधीजी अपने पत्र 'हरिजन' मे कठिन-से-कठिन और कटु-से-कटु भाषा प्रयुक्त करने लगे। २६ अप्रैल सन् १९४३ के लेख मे उन्होंने कहा

स्वर : भारत के लिए चाहे इसका कुछ भी फल हो, उसकी और ब्रिटेन की सुरक्षा इसी मे है कि अग्रेज व्यवस्था और शान्तिपूर्वक समय रहते भारत से चले जायें।

सूत्रधार · मई मे उन्होंने कहा ·

स्वर : मैं कहा करता था कि ग्रेट ब्रिटेन को मेरा नैतिक समर्थन प्राप्त है, पर अब यह कहते बडा दु ख होता है कि आज उसे नैतिक समर्थन देने से मेरा दिल इन्कार करता है। एका लाने की सारी कोशिशें बेकार गई तब

सहज ही मुझे यह तर्क मिला कि जब तक इस देश मे अग्रेजी हुकूमत रहेगी तब तक सच्चा एका न रहेगा।

सूत्रधार : देश ने तब स्पष्ट अनुभव किया कि गांधीजी शीघ्र ही कोई आन्दोलन शुरू करनेवाले है। उनसे पूछने पर उन्होने बताया :

स्वर : यह एक ऐसा आन्दोलन होगा कि जिसका अस्तित्व एव महत्त्व ससार अनुभव करेगा। सम्भव है कि यह आदोलन ब्रिटिश सेना की हलचलो मे बाधा न पहुँचा सके, परन्तु यह तो निश्चित है कि इसकी ओर अग्रेजो का ध्यान आकृष्ट होकर ही रहेगा।

सूत्रधार ७ जून को वे बोले

स्वर अब मैं प्रतीक्षा नही कर सकता। जिस तैयारी के लिए मैं प्रार्थना तथा प्रयत्न करता रहा हूँ, उसका अवसर शायद कभी न आवे और इसी बीच मुझे वे ज्वालाएँ घेर ले और निगल जायें, जो हमको भयभीत कर रही है। इसी कारण मैंने निश्चय किया है कि कुछ खतरे सिर पर उठाकर भी, जो अनिवार्यत आएगे ही, मुझे जनता को दासत्व का प्रतिशोध करने के लिए अवश्य ही कहना चाहिए।

सूत्रधार : २६ जून को उन्होने कहा

स्वर : हिन्दुस्तान मे भयकर ज्वालामुखी फूटेगा। तुम लोग उसके साक्षी रहना और जब वह समीप आ जाय तो उसमे कूद पडना।

सूत्रधार : गांधीजी उन दिनो एक अवतार और पैगम्बर की प्रेरक शक्ति से बोल रहे थे। उनकी प्रत्येक सांस पर देश की भुजाए फडकती थी। आखिर ८ अगस्त आ पहुँची। बम्बई मे देश के नेता अन्तिम निर्णय के लिए इकट्ठे

हुए। 'भारत छोड़ो' का नारा प्रस्ताव के रूप में देश के सामने स्वीकृति के लिए आया। उसमें विश्व-युद्ध और फासिस्टवाद के खतरे की चर्चा थी, स्वतन्त्रता न मिलने पर सत्याग्रह की चर्चा थी और गांधीजी द्वारा मित्र-राष्ट्रों से पत्र-व्यवहार करके उचित शर्तों पर समझौता करने की चर्चा भी थी। गांधीजी उसी दिन राजनीति के एक निम्न धरातल से बहुत ऊपर उठकर पददलित मानवता के उद्धारक के रूप में बोले

स्वर — ईश्वर मुझसे पूछेगा कि जब दुनिया में चारों ओर अग्नि भड़क रही थी, शान्ति की लपटें प्रचंड होकर उठ रही थीं, हिंसा का साम्राज्य था तो तूने अपने उस महामन्त्र अर्थात् शांति के पाठ को दुनिया के सामने क्यों न रखा? क्यों न अंधेरे में उजाले का सन्देश दिया, असत्य के वातावरण में सत्य का नाम लिया?

सूत्रधार — जनता को सम्बोधित करते हुए महात्मा ने कहा

स्वर — हम एक सल्तनत का मुकाबला करने जा रहे हैं और हमारी लड़ाई बिलकुल सीधी लड़ाई होगी। इस बारे में आप किसी भ्रम में न रहें। दिल में कोई उलझन न रखें। लुक-छिपकर कोई काम न करें। जो लुक छिपकर कोई काम करते हैं, उन्हें पछताना पड़ता है। हम ऐसी निकम्मी हरकत कभी नहीं करेंगे। हम ओछे हथियारों से काम नहीं लेंगे। सत्याग्रही मरने के लिए बाहर जाय, जीने के लिए नहीं। राष्ट्र का उद्धार केवल उसी अवस्था में होगा, जबकि लोग मृत्यु को ढूंढने और उसका सामना करने के लिए बाहर निकलेंगे। करेंगे या मरेंगे।

सूत्रधार — इस बात के बावजूद कि एक के बाद एक सभी

प्रवक्ताओ ने पहले सरकार से समझौते पर जोर दिया, सरकार ने एक दूसरा रुख अपनाया। उसने पौ फटने से पहले ही दमन-चक्र चला दिया। सहसा देश के इस कोने से उस कोने तक गिरफ्तारियो का ताँता लग गया।

दृश्य तीन

(भीड का कोलाहल)

भीड — माहात्मा गाँधी की जय! इन्कलाब जिन्दाबाद!

एक स्वर — क्या बात है? कैसा जलूस है?

जनता प० स्वर — तुम्हें पता नही, गाँधीजी गिरफ्तार हो गये।

जनता दू० स्वर — जवाहरलाल गिरफ्तार हो गये।

जनता ती०स्वर — मौलाना आजाद सीखचो मे बन्द है।

जनता — अग्रेजो! भारत छोड दो!

एक व्यक्ति — अग्रेजो! भारत ··

भीड — छोड दो!

सूत्रधार — जनता का रोष झरने की तरह आप ही आप उबल उठा। सारा देश एक बहुत बडा जेलखाना बन गया। अत्याचार के काले धुएँ ने सारे वातावरण को गन्दा कर दिया। चारो ओर हाहाकार, चीत्कार, बरबादी, त्राहि त्राहि मच गई। कवि ने कुछ शब्दो म उसका सुन्दर चित्रण किया

कवि — युग युग से जकडा जन-समाज,
व्याकुल हो बन्धन भूल गया।
पीडा से पराधीन बलि की क्रीडा मे क्रन्दन भूल गया।
झरना भय्या को साथ लिये निकला चढकर चट्टानों पर,
कोमल काया की याद न कर झट कूद पडा पाषाणो पर।

उसको इसकी परवाह न थी क्या छूट गया, क्या फूट गया,
उन्मुक्त उछलता जाता था यह सोच कि बन्धन टूट गया।

सूत्रधार — उस जमाने की सरकार की नींव हिल उठी। भय और घबराहट के कारण शासकों की बुरी हालत थी। उन्हें अपने चारों ओर आन्दोलन की आग फैलती नजर आती थी। बहुतों के मस्तिष्क विकृत हो गये थे। वे चिल्लाते थे

दृश्य चार

डिप्टी — (सन्निपात में) मुझे छोड दो···मुझे छोड दो·· वह आ रहा है वह···वह देखो। मेरी पिस्तौल कहाँ है···मेरी पिस्तौल लाओ ··

नर्स — शान्त रहिये, डिप्टी साहब! शात रहिए, यहा कोई नही है।

डिप्टी — (उसी तरह) वह देखो वह मुझे पिस्तौल दिखा रहा है! वह मुझे मार रहा है! वह···वह उसके हाथ मे तिरगा झण्डा है। वह उसे मेरी अदालत पर फहराएगा। देखो···देखो···वह कितना निडर है। वह उतरा नही। ऊपर चढ गया। उसके साथ एक और बालक है। उसे पकडो ··उसे पकडो···(चीखता है)

नर्स — आप क्या कह रहे हैं! यहाँ कोई बालक नहीं है। कही कुछ नही है। आप चुपचाप लेटे रहिये।

डिप्टी — (बिना सुने) उसे पकडो···उसे गोली मार दो···हा··· धाँय धाँय···हाँ और चलाओ! ठें···ठें···ठें, पर वह नही गिरता! वह हँसता है ठहर···अरे, यह कौन? यह ·· यह तो मेरा बेटा! मेरा बेटा! सुधीर···सुधीर···तू है·· तू झण्डा लहराता है (धीमा होता हुआ स्वर)!

तू···तू···

सूत्रधार — और तो और कभी-कभी अदभुत दृश्य देखने को मिलता था कि इस हाहाकार के बीच भी हँसी आ जाती थी। एक बार कुछ सिपाही एक फरार की तलाश मे जा रहे थे कि रास्ते मे रात पड गई। अधेरे मे क्या देखते हैं कि खेत मे एक व्यक्ति गाधी टोपी पहने खडा है।

दृश्य पांच

एक सिपाही — वह, वह देखो कौन है ?

दूसरा सिपाही — जरूर यह विद्रोही है। जरूर यह कोई अड्डा है।

पहला सिपाही — मैं अभी पता लगाता हू। (पुकारकर) कौन है ?

दूसरा सिपाही — वह कौन है ? बोलता क्यो नही ?

तीसरा सिपाही — बिलकुल नही बोलता। बडे दुष्ट हैं ये लोग !

पहला सिपाही — मैं अभी इसे ठीक करता हूँ। अभी गोली से उडाता हूँ।

(फायर होता है)

दूसरा सिपाही — यह···यह···यह तो ··ऐसे ही खडा है !

पहला सिपाही — बडा निडर है जरूर यहाँ कोई गिरोह है।

तीसरा सिपाही — अरे · अरे भागो ··यह तो इधर आ रहा है···भागो ! (भागना)

पहला सिपाही — यहाँ···यहाँ—इस खेत मे छिप जाओ।

दूसरा सिपाही — अरे, इसमे तो पानी दिया हुआ है। जाडे की रात मे मैं···

तीसरा सिपाही — चुप ··चुप ··उन्हे निकल जाने दो। जान बच जायगी तो जाडे को भी देख लेंगे।

(चिडियो का स्वर)

पहला सिपाही — ओह, सवेरा हो गया। अब तो वे चले गये होगे।

दूसरा सिपाही — हाँ, अब क्या बैठे होगे ! आओ, इस जाडे से निकलो।

के लिए तैयार हूँ और यदि वह चाहती है कि कांग्रेस की ओर से मैं कोई प्रस्ताव उसके सामने रखूँ तो मुझे कार्य-समिति के पास भेज दिया जाय।" परन्तु वासराय ने कुछ भी सुनने से इन्कार कर दिया। तब दुखी होकर गाधीजी ने ९ फरवरी १९४३ से २१ दिन का अनशन शुरू कर दिया। २१ फरवरी को तो उनके बचने की आशा ही नही थी। उस समय कट्टर-से कट्टर गाधी-विरोधी भी व्याकुल हो उठे थे।

एक बालक — पापा ··पापा ··अखबारवाला कहता है, गाधीजी की हालत बहुत खराब है।

पापा — क्या 'क्या ' कौन कहता है ? अखबार वाला ? हूँ ·· सब झूठ है, झूठ। भाग यहा से। गाधीजी ' गाधीजी ने भी तो···लेकिन लेकिन पता तो लगाना चाहिए··· किससे पूछूं 'हाँ रेडियोहै। अगर गाधीजी कोभगवान न करे कुछ हो गया तो रेडियो अवश्य सूचना देगा (रेडियो खोलता है। पत्नी आती है)

पत्नी — अजी, अपने गाधीजी के बारे में कुछ सुना ?

पापा — वही तो मैं भी देख रहा हूँ। अभी रेडियो से ठीक पता लग जाता है। (रेडियो से गीत का स्वर उठता है) ओहो, यहाँ तो गाना हो रहा है ! गाधीजी मर गये और ये गा रहे हैं !

पत्नी — सरकार तो सचमुच बडा जुल्म कर रही है। कुछ भी हो गाधीजी महापुरुष हैं।

पापा — लेकिन यह तो गाय जा रहे हैं। मैं कहता हूँ, यह बन्द क्यो नही होता ? मैं इसे तोड दूँगा। उफ।

पत्नी — बडे कम्बख्त हैं। ठीक नौ बजे ही खबरें सुनायेंगे। इतने बडे आदमी के लिए भी नही रुक सकते।

(गाना बन्द होता है, स्वर उठता है)

स्वर — यह आल इंडिया रेडियो है। इस समय रात के नौ बजे हैं। अब आप हिन्दुस्तानी मे खबरें सुनिये! आज गांधीजी दिन-भर बेचैन से रहे। दोपहर को ४ बजे उनकी हालत खतरनाक हो गई और जी मिचलाने की बीमारी के कारण वे प्राय बेहोश हो गये। उनकी नब्ज इतनी हल्की हो गई कि उसे प्राय पहचानना कठिन था। बाद मे वे नीबू के मीठे रस के साथ पानी पी सकने मे समर्थ हो सके। अब वे खतरे से बाहर हैं।

पापा — ओह, भगवान! तुम्हारा शुक्र है! लाख बार शुक्र है!

पत्नी — भगवान! तुम बहुत बडे हो! तुम सचमुच बडे हो!

सूत्रधार — और जब ३ मार्च को गांधीजी ने अपना उपवास तोडा तो बावजूद सरकार की पाबन्दियो के देश मे हर्ष की लहर दौड गई। इधर विश्व मे घटनाक्रम भी तेजी से बदलने लगा। सन् १९४३ के अन्त मे लार्ड लिनलिथगो के स्थान पर लार्ड वेवल वायसराय बने। गांधीजी ने उनसे भी पत्र-व्यवहार जारी रखा, परन्तु कोई फल न निकला। २२ फरवरी सन् १९४४ को माता कस्तूरबा जेल मे ही चल बसी। गांधीजी पर यह दूसरी चोट थी। १५ अगस्त सन् १९४२ को गांधीजी के निजी मत्री श्री महादेव देसाई अचानक चल बसे थे। मई के शुरू मे उनका भी स्वास्थ्य खराब हो गया और उन्हें ६ मई सन् १९४४ को सवेरे ६ बजे रिहा कर दिया गया। इसी बीच भारत की पूर्वी सीमा पर एक नया प्रकाश चमक रहा था। वह प्रकाश सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द सेना का प्रकाश था।

एक स्वर	सुभाषचन्द्र बोस १५-१-४१ को भारत से निकल भागे थे।
दूसरा स्वर	५ ७ ४३ को *उन्होने आजाद हिन्द सेना के सगठन की* घोषणा की।
तीसरा स्वर	२१-१०-४३ को स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार *की स्थापना की।*
चौथा स्वर	२३ १२-४३ को बाकायदा युद्ध शुरू कर दिया।
पाँचवाँ स्वर	३० १२-४३ को पोर्ट ब्लेयर पर भारत का तिरगा झडा फहराने लगा।
छठवाँ स्वर	२१-३-४४ को आजाद सेना ने भारतभूमि पर पैर रखा।
सातवाँ स्वर	और २१-५-४४ को इम्फाल का घेरा डाल दिया।
सूत्रधार	*वह एक अद्भुत सेना थी। उसका ध्येय था*
सब	आजादी या मौत।
सूत्रधार	उसका नेता *था*—
सब	सुभाषचन्द्र बोस।
सूत्रधार	उसका युद्ध घोष था—
सब	दिल्ली चलो।
सूत्रधार	उसका झडा था—
सब	तिरगा।
सूत्रधार	उसका अभिवादन था—
सब	जयहिन्द।
सूत्रधार	उसका नारा था —
सब	*आजाद हिन्द* जिन्दाबाद।
सूत्रधार	उसका निशान था—
सब	शेर के साथ टीपू सुल्तान का चित्र।
सूत्रधार	उसका राष्ट्र गान था—

सब · (गाते हैं)

सब सुख चैन की बरखा बरसे, भारत भाग्य है जागा।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा, द्राविड उत्कल बंगा।
चंचल सागर विंध्य हिमाचल, निर्मल जमुना गंगा।
तेरे नित गुण गायें, तुझ से हम जीवन पायें।
अब जब पायें आशा।
सूरज बनकर जग पर चमके, भारत नाम सोभागा।
जय हो, जय हो, जय हो, जय जय जय जय हो।

सूत्रधार और वे लड़ते थे देश के लिए। नेताजी ने उनसे कहा था—"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।" और वे खून देने को पागल थे। वे संख्या की परवाह न करके हजारों की सेना में कूद पड़ते थे। वे मर जाते थे, पर पीछे नहीं हटते थे।

दृश्य सात
(युद्ध)

कमांडर नेताजी की जय! बढ़े चलो। हमने दिल्ली पहुँचने की प्रतिज्ञा की है। लाल किला हमारी राह देख रहा है। शाबाश शाबाश! बढ़े चलो, नेताजी के नाम पर धब्बा न लगने पाए।

सिपाही उधर रफीक उधर देखो। दुश्मन की मशीनगन चुप हो रही है।

रफीक हाँ हाँ, आओ, इधर आओ, बड़ा अच्छा मौका है।

जीतसिंह यह क्या? क्या वे फिर ट्रकों में बैठ रहे हैं? आओ-आओ दौड़ो।

कमांडर शाबाश, शाबाश, मेरे बहादुर साथियो! दुश्मन भाग रहा है। जीत तुम्हारी है। शाबाश जयहिन्द बढ़े

चलो···बस···आह···ओफ···।

रफीक : यह क्या ' यह क्या हुआ···कमाडर के गोली लग गई।

जीतसिंह : कमाडर गिर गये ··कमाडर···

कमाडर : (दर्द) बढे चलो, बढे चलो, हिन्दुस्तान तुम्हारी ओर देख रहा है। नेताजी ने तुमसे खून माँगा है। वे तुम्हे आजादी देंगे। आजाद हिन्द जिन्दाबाद! जयहिन्द···

दूसरा कमाडर : शाबाश साथियो! तुम रुक क्यो गये? एक बहादुर साथी चल बसा। उसका सम्मान करो। आगे बढो। जीत तुम्हारी है नेताजी की जय! आजाद हिन्द जिन्दाबाद! उसे सोने दो। कही दुश्मन उसकी नींद भग न कर दे। दुश्मन को भगा दो।

सूत्रधार : वे बराबर इसी वीरता से लडे। देखने मे वे हार गये थे; परन्तु भारत को आजादी की राह पर उन्होंने कोसो आगे बढा दिया। तभी तो नेहरू ने कहा था—"जिस काम को कांग्रेस साठ वर्ष के अन्दर न कर सकी, उससे ज्यादा काम नेताजी ने तीन वर्ष मे कर दिखाया।" ठीक इन्ही दिनो जब आजाद हिन्द फौज भारतभूमि पर आजादी का युद्ध लड रही थी तब गाँधीजी श्री जिन्ना के साथ मिलकर हिन्दू-मुसलमान समस्या की गुत्थी सुलझा रहे थे; पर वे सफल न हो सके। घटनाएँ फिर तेजी से घूमने लगी।

पहला स्वर : ७ मई १९४५ को सहसा यूरोप का युद्ध समाप्त हो गया।

दूसरा स्वर . १० जुलाई १९४५ को इगलैंड मे मिली-जुली सरकार के स्थान पर मजदूर सरकार की स्थापना हुई।

तीसरा स्वर : जिस चर्चिल ने सकट-काल मे इगलैंड की रक्षा

उसी को शाति होने ही देश ने उखाड फेंका।
लार्ड वेवल इगलैण्ड गये और १४ जून को उन्होने दिल्ली रेडियो से ब्राडकास्ट किया—"समस्या का हल निकालने के लिये २५ जून से शिमला मे राजनैतिक नेताओ का सम्मेलन होगा और कांग्रेस कार्यसमिति के सब सदस्यो की रिहाई का आदेश दे दिया गया है।' और यही हुआ। १५ जून १९४५ को बिना किसी शर्त के कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य रिहा कर दिये गए। सघर्ष का युग समाप्त हो गया और सुलह-समझौते का युग प्रारम्भ हुआ, मानो घोर अधेरी रात के बाद पूर्व दिशा म प्रकाश की किरण चमक उठी। देश ने पुराने उत्साह से अपने प्रिय नेताओ का स्वागत किया और उन्हें विश्वास दिलाया कि वे सदा की तरह नौजवान हैं

सभव है, अथक प्रयत्नो से गति रुके हवा की पानी की,
है नही असम्भव फिर भी यह रुक जाये लहर जवानी की।

छठा अंक

[स्वाधीनता-सग्राम]

सूत्रधार : दूसरे महायुद्ध के बाद विश्व मे जो परिवर्तन हुए वे बहुत महत्त्वपूर्ण थे और उन्होंने हमारी आजादी की लडाई पर गहरे प्रभाव डाले। ब्रिटेन किसी-न-किसी तरह समझौते का इच्छुक था। भारत की बढती हुई शक्ति से लोहा लेने की ताक्त अब उसमे नही थी। इसलिए घटना-क्रम तेजी से बदलने लगा—

स्वर १ : १५ जून १६४५ को देश के नेता जेलो से रिहा कर दिये गये।

स्वर २ : २५ जून १६४५ को शिमला मे एक समझौता-कान्फ्रेंस बुलाई गई।

स्वर ३ : परन्तु उसका आधार साम्प्रदायिक था। इस कारण असफल हो गई।

स्वर ४ : २६ जुलाई १६४५ को ब्रिटेन मे मजदूर दल की सरकार बनी।

स्वर ५ : १५ अगस्त १६४५ को बादशाह ने नई पार्लमेंट का उद्घाटन करते हुए कहा—"भारतीय जनता से किये गये वायदो के अनुसार मेरी नई सरकार भारतीय नेताओ से मिलकर शीघ्र ही वहाँ पर स्वशासन

स्थापित करने के लिए शक्ति भर प्रयत्न करेगी।"

स्वर ७ — १६ सितम्बर १६४५ को लार्ड वेवल ने लन्दन से नये मिशन की घोषणा की।

स्वर ७ — लेकिन २१ सितम्बर १६४५ को राष्ट्रीय कांग्रेस ने उन सुधारों को भी नामजूर कर दिया।

सूत्रधार — इस प्रकार एक ओर तो समझौते का मार्ग ढूढा जा रहा था, दूसरी ओर उस समय की सरकार ने नेताजी की आजादी हिन्द सेना को लेकर लालकिले मे, जहाँ अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह के भाग्य का फैसला किया गया था, मुकदमों का एक सिलसिला शुरू कर दिया। सोई हुई जनता जाग उठी। सारे देश मे विरोध का तूफान उठ खड़ा हुआ। इसी मुकदमे मे श्री भूलाभाई देसाई के तर्कों ने भारत की कानूनी योग्यता की धाक विश्व भर मे बैठा दी। उन्होंने गम्भीर स्वर मे मानो भारत की वाणी को बुलन्द करते हुए जजो से पूछा

दृश्य एक

(न्यायालय मे)

स्वर — मी लार्ड, मैं पूछता हूँ कि वह कौन-सा कानून है जो एक स्वतन्त्र राज्य की स्वतन्त्र सेना के सैनिकों पर मुकदमा चलाने की आज्ञा देता है? वह कौन सा नियम है जो गुलामों को अपने जालिम स्वामियों के के विरुद्ध विद्रोह करने से रोकता है? वह कौन-सा विधान है जो आजादी की मांग को अपराध ठहराता है, जो गुलामी की जजीरों को तोड़ने वालो को अपराधी मानता है? ...मी लार्ड! यदि आप राजभक्ति

की बात कहते हैं तो उसमे रक्षा का प्रश्न भी आता है, लेकिन १६ फरवरी १९४२ को कर्नल हण्ट ने इन सब सैनिकों को जापानियों को सौप दिया था। मैं पूछता हूँ कि इस विश्वासघात के सामने राजभक्ति का प्रश्न कहाँ उठता है? और फिर देशभक्ति के प्रश्न को कैसे भुलाया जा सकता है? प्रत्येक देश-भक्त को अपने देश को स्वतन्त्र करने का अधिकार है। प्रत्येक राष्ट्र को अपनी स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करने का अधिकार है। उस जन्मजात अधिकार को ससार का कोई नियम, कोई कानून, कोई विधान नही छीन सकता। मी लार्ड! अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार विदेशी शासन मे रहनेवाली प्रजा को इस बात की आज्ञा है कि वह सगठित होकर शासको के विरुद्ध युद्ध करे और जहाँ तक हत्या का अपराध है मी लार्ड! जिस प्रकार जजो पर अभियुक्त को फाँसी देने के लिए बहकावा देने का अभियोग नही लगाया जा सकता, उसी तरह सशस्त्र सैनिकों पर, जिन्होने युद्ध की घोषणा कर दी है, इन बातो के लिए मुकदमा नही चलाया जा सकता है। इसलिए मी लार्ड! मेरा आपसे अनुरोध है कि ये अभियुक्त निर्दोष घोषित किए जाएँ।

(तालियाँ)

सूत्रधार — इन तर्कों ने देश के शासन के छक्के छुडा दिए। यद्यपि जजो ने पहले मुकदमे के तीनों वीरो को फाँसी की सजा दी। परन्तु देश के उठते हुए जोश के सामने सरकार को झुकना पडा और वे वीर छोड दिये गए। देश मे उनकी जयकार गूँजने लगी।

दृश्य दो

(जनता की अपार भीड)

(जय के नारे उठते है—'आजाद हिन्द सेना जिन्दाबाद', 'नेताजी की जय ?' कवि गाता रहता है।)

कवि : मैं बोलो किसकी जय बोलूं, जनता की या कि जवाहर की ?
या भूलाभाई देसाई से, कानूनी नर-नाहर की ?
या कहूँ समय की बलिहारी, जिसने यह कर दिखलाया है !
आजाद फौज केवीरो को, फांसी पर से लौटाया है !
ये तीन शेर छूटे कि मुझे, दे रहा साफ दिखलाई है !
भारतमाता गमगीन न हो, की वेला आई है।

सूत्रधार . कवि जिस मगल वेला को आते देख रहे थे वह अभी दूर थी, अभी देश को और बलिदान देने थे। ५ जनवरी १६४६ को ब्रिटेन ने भारत मे फिर एक शिष्टमडल भेजा। १० फरवरी तक देश मे घूमधाम कर वह लौट गया; परन्तु देश इन शिष्टमडलो से उकता उठा था। सेना मे भी विद्रोह का स्वर उठ रहा था। आखिर अत्याचार से पिसते हुए नौसैनिको ने २१ फरवरी १६४६ को विद्रोह का झडा बुलन्द कर दिया। उनकी मांगें थी

दृश्य तीन

स्वर १ : हमे अच्छा खाना दो।

स्वर २ : हमे पूरा राशन दो।

स्वर ३ : हमें गोरो के समान वेतन दो।

स्वर ४ : हमें गाली देने वाले अफसरों को दंड दो।

(जनता के स्वर)

स्वर १ : तुमने सुना, बम्बई और कराची में नौसैनिकों ने विद्रोह कर दिया है?

स्वर २ : हां, सुना है, उन्होंने हड़ताल करके मशीनगनों से ब्रिटिश फौज का सामना किया।

स्वर ३ : उन्होंने बन्दरगाहों पर कब्जा कर लिया है।

स्वर १ : आज़ादी का युद्ध अब शुरू हुआ है। अब सरकार को मालूम होगा।

स्वर २ : बेशक, देश उनके साथ है। देश उनकी मांगों का समर्थन करता है।

स्वर ३ : तो आओ, देश के कोने-कोने में मीटिंग करके हम उन्हें बता दें कि हम उनके साथ हैं।

स्वर ४ : निस्सन्देह उन्हें देश की सहानुभूति की आवश्यकता है।

(भीड़ का स्वर, गाना)

समवेत स्वर : तुम भी डटे रहो, साथी अब बाल नहीं बांका होगा,
डटे रहो इस मुक्ति युद्ध का एक नया साका होगा,
साथी जो अरमान तुम्हारा वह अरमान हमारा है,
जो है मान तुम्हारा साथी! वह अभिमान हमारा है,
एक बार जो झंडा ऊँचा किया—नहीं वह झुकने का,
तुम्हें अकेला जिसने समझा—वह अन्धा है या नादान,
खैर, शीघ्र वह समझ जायगा उमड़ रहा क्यों हिन्दुस्तान।

सूत्रधार : इस प्रकार देश में जैसे फिर तूफान उठने लगा। नेताओं ने बीच में पड़कर किसी तरह इसे शान्त किया, परन्तु यह केवल एक घटना नहीं थी। २३ फरवरी को जबलपुर की फौज और १५ मार्च को देहरादून की रेजीमेंट ने भी बगावत शुरू कर दी। इन दिनों

चलाना साधारण बात थी। देखते-देखते भीड़ उमड़ती, गोलियाँ चलती और मार्ग लाशों से पट जाते। अस्पताल में डाक्टरों और नर्सों की मुसीबत आ जाती। कभी-कभी तो घायलों की सेवा करते-करते वे भी गोली का शिकार हो जाते थे।

दृश्य चार

(घायलों का चीत्कार। कुछ घबराये स्वर उठते हैं)

मुक्ता — रजिया रजिया! तुम घबरा क्यों रही हो? क्या बात है?

रजिया — उन्होंने ''उन्होंने एक वर्ष के बच्चे को गोली मार दी।

मुक्ता — सच?

रजिया — हाँ मुक्ता! यह क्या हो रहा है? लाशों का कमरा ओवरलोड हो चुका है! डाक्टर घबरा रहे हैं!

मुक्ता — कितनी लाशें होंगी?

रजिया — सौ · शायद उससे भी ज्यादा! कौन गिन सकता है?

मुक्ता — वे सब मर चुके हैं?

रजिया — बिल्कुल अरे, वह देखो, क्लारा भागी आ रही है।

(क्लारा का भागते हुए आना।)

मुक्ता — क्लारा! क्या बात है?

रजिया — क्या हुआ, क्लारा! तुम बोलती क्यों नहीं, क्या हुआ?

क्लारा — (किसी तरह) वे पागल हो रहे हैं। उन्होंने उसे भी मार डाला।

मुक्ता — किसे?

क्लारा — छोटे डाक्टर को। वह एक बच्चे की लाश उठाकर ला रहा था। खिड़की तोड़कर गोली उसकी छाती में

लगी। वह गिर गया और देखते-देखते मर गया।

मुक्ता : मर गया!

क्लारा : हां, वह मर गया। गोरे चलती गाड़ियों से बेतहाशा गोलियां चला रहे हैं। सब कहीं आतंक छा रहा है। घायलों के चीत्कार से शून्य कांप रहा है।

रजिया : तो फिर यहां क्यों आई? चलो-चलो, उन्हें देखें…।

मुक्ता : हां, क्लारा, हमें उन्हें सँभालना चाहिए।

क्लारा : चलो मुक्ता…

सूत्रधार : *इस अवस्था में यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि भारतीय समाज का कोई वर्ग ऐसा नहीं रह गया था जो अंग्रेज़ी राज्य का साथ देने के लिए तैयार हो। स्वयं उन्होंने इस बात को समझ लिया था इसलिए जिन दिनों नाविकों का यह विद्रोह चल रहा था उन्हीं दिनों ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री ने भारतीय राजनैतिक गुत्थी को अन्तिम रूप से सुलझाने के लिए कैबिनट के प्रमुख मंत्रियों को एक मिशन हिन्दुस्तान भेजने की घोषणा की। मिशन से पूर्व भारत में एक और परिवर्तन हो चुका था। धारा सभा के चुनाव में एक बार फिर कांग्रेस की विजय हुई :*

स्वर १ : साधारण सीटों से कांग्रेस के विरोधियों को सब मिलाकर ५ प्रतिशत वोट भी नहीं मिले।

स्वर २ : कांग्रेस की पुरानी ८ धारा सभाओं में उसका बहुमत हो गया।

स्वर ३ : इन चुनावों ने मुस्लिम लीग के दावे को चूर-चूर कर दिया।

स्वर ४ : मुसलमानों ने मुस्लिम लीग को लगभग ७ लाख वोट दिए।

स्वर ५ : और उसके विरोधियों को लगभग १५ लाख।

चलाना साधारण बात थी। देखते-देखते भीड़ उमड़ती, गोलियाँ चलती और मार्ग लाशो से पट जाते। अस्पताल के डाक्टरों और नर्सों की मुसीबत आ जाती। कभी-कभी तो घायलों की सेवा करते-करते वे भी गोली का शिकार हो जाते थे।

दृश्य चार

(घायलो का चीत्कार। कुछ घबराये स्वर उठते हैं)

मुक्ता रजिया रजिया! तुम घबरा क्यो रही हो? क्या बात है?

रजिया उन्होने ··उन्होने एक वर्ष के बच्चे को गोली मार दी।

मुक्ता सच?

रजिया हाँ मुक्ता! यह क्या हो रहा है? लाशो का कमरा ओवरलोड हो चुका है! डाक्टर घबरा रहे हैं!

मुक्ता कितनी लाशें होगी?

रजिया सौ· शायद उससे भी ज्यादा! कौन गिन सकता है?

मुक्ता वे सब मर चुके हैं?

रजिया बिल्कुल अरे, वह देखो, क्लारा भागी आ रही है।

(क्लारा का भागते हुए आना।)

मुक्ता क्लारा! क्या बात है?

रजिया क्या हुआ, क्लारा! तुम बोलती क्यो नही, क्याहुआ?

क्लारा (किसी तरह) वे पागल हो रहे हैं। उन्होने उसे भी मार डाला।

मुक्ता : किसे?

क्लारा छोटे डाक्टर को। वह एक बच्चे की लाश उठाकर ल रहा था। खिड़की तोड़कर गोली उसकी छाती।

लगी। वह गिर गया और देखते-देखते मर गया।

मुक्ता : मर गया!

क्लारा : हां, वह मर गया। गोरे चलती गाड़ियों से बेतहाशा गोलियां चला रहे हैं। सब कहीं आतंक छा रहा है। घायलों के चीत्कार से शून्य कांप रहा है।

रजिया : तो फिर यहां क्यों आई? चलो-चलो, उन्हें देखें...।

मुक्ता : हां, क्लारा, हमें उन्हें संभालना चाहिए।

क्लारा : चलो मुक्ता...

सूत्रधार : इस अवस्था में यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि भारतीय समाज का कोई वर्ग ऐसा नहीं रह गया था जो अंग्रेज़ी राज्य का साथ देने के लिए तैयार हो। स्वयं उन्होंने इस बात को समझ लिया था इसलिए जिन दिनों नाविकों का यह विद्रोह चल रहा था उन्हीं दिनों ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री ने भारतीय राजनैतिक गुत्थी को अन्तिम रूप से सुलझाने के लिए कैबिनट के प्रमुख मंत्रियों को एक मिशन हिन्दुस्तान भेजने की घोषणा की। मिशन से पूर्व भारत में एक और परिवर्तन हो चुका था। धारा सभा के चुनाव में एक बार फिर कांग्रेस की विजय हुई:

स्वर १ : साधारण सीटों से कांग्रेस के विरोधियों को सब मिलाकर ५ प्रतिशत वोट भी नहीं मिले।

स्वर २ : कांग्रेस की पुरानी ८ धारा सभाओं में उसका बहुमत हो गया।

स्वर ३ : इन चुनावों ने मुस्लिम लीग के दावे को चूर-चूर कर दिया।

स्वर ४ : मुसलमानों ने मुस्लिम लीग को लगभग ७ लाख वोट दिए।

स्वर ५ : और उसके विरोधियों को लगभग १५ लाख।

स्वर ६ कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र मे देश को एक बार फिर आश्वासन दिया

स्वर ७ कि वह बिना धर्म, जाति, वर्ण और लिंगभेद के नागरिकों के बुनियादी अधिकारो की रक्षा करेगी।

स्वर ८ कि वह जनता की गरीबी को मिटाने का प्रयत्न करेगी।

स्वर ९ कि वह भूमि प्रथा मे सुधार और जमीन की उन्नति मे योग देगी।

स्वर १० कि वह सर्वसाधारण की शिक्षा और मजदूरो के हितो की रक्षा करेगी।

स्वर ११ कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे वह विश्व-व्यापी संघ शासन का समर्थन करेगी।

सूत्रधार *इसी समय मार्च १९४६ मे भारत मंत्री लार्ड पैथिक लारेंस के नेतृत्व म कैबिनट मिशन भारत आया और नेताओ से भारत के भविष्य पर चर्चा करता रहा।* १६ मई १९४६ को उसने अपनी योजना प्रकाशित कर दी। उसके अनुसार

स्वर १ एक अखिल भारतीय संयुक्त राष्ट्र होगा जिसम ब्रिटिश भारत तथा देशी राज्य शामिल होगे।

स्वर २ उसके अधीन विदेशी मामले, रक्षा और यातायात के विषय होगे।

स्वर ३ शेष सब विषय प्रान्तो और राज्यो के अधीन होगे।

स्वर ४ प्रान्तों को पृथक् समूह बनाने का अधिकार होगा।

स्वर ५ भारतीय राष्ट्र और प्रान्तों को १० वर्ष बाद और फिर प्रति दस वर्ष बाद विधान की शर्तों पर पुनर्विचार करने का अधिकार होगा।

स्वर ६ संयुक्त राष्ट्र म एक शासक परिषद् तथा एक व्यवस्थापिका परिषद होगी।

सूत्रधार : यद्यपि इस योजना से सब नेता सहमत नहीं हुए; परन्तु कुछ सशोधनो के साथ काग्रेस ने उसे स्वीकार करने का वचन दे दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत के जिन ८ प्रान्तो मे पहले काग्रेसी मन्त्रिमडल थे वे फिर ज्यो के त्यो सगठित हो गए। वायसराय ने अन्तरिम सरकार बनाने की घोषणा की। काग्रेस अपने साथ एक मुसलमान को रखना चाहती थी जिसको लीग ने स्वीकार नही किया। इसलिए लीग के बिना ही २ सितम्बर १९४६ को प० जवाहरलाल नेहरू ने अन्तरिम सरकार का नेतृत्व सँभाल लिया। कुछ दिन बाद लीग को भी आना पडा। ऐसा लगा मानो दुख की काली रात बीत गई है और सुख का सवेरा आने को है; परन्तु वह मात्र स्वप्न था। भारत को अभी और रक्त की होली खेलनी शेष थी :

स्वर १ : देश मे साम्प्रदायिक नेताओ के विषवमन के कारण समूचा वातावरण विषाक्त हो चुका था।

स्वर २ : १६ अगस्त १९४६ को बगाल मे जो 'सीधी कार्रवाई का दिन' मनाया गया उसने देश की शान्ति को अन्तिम रूप से भंग कर दिया।

स्वर ३ : देखते-देखते गुण्डो ने निर्दोष मनुष्यो के रक्त से होली खेलनी शुरू कर दी।

स्वर ४ . छुरेबाजी, आग, व्यभिचार, लूट, हत्या सब बातें साधारण हो गईं।

स्वर ५ : हरे-भरे चहचहाते प्रदेश वीरान हो गए।

स्वर ६ : सुन्दर और गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ फूँक दी गईं।

स्वर ७ : निर्दोष नारियो और भोले शिशुओं को आग मे झोंक दिया गया।

स्वर ८ : कलकत्ता और नोआखाली,

स्वर ९ : बिहार और गढ़मुक्तेश्वर,

स्वर १० : पंजाब, दिल्ली और सीमाप्रान्त,

स्वर ११ : एक के बाद एक सब इस भयानक पैशाचिकता का शिकार हो गये।

सूत्रधार : जहाँ एक ओर हैवानियत इस प्रकार नंगा नाच नाच रही थी और क्रिया तथा प्रतिक्रिया की चोट खाकर मानवता मरणासन्न थी, वहाँ प्रत्येक जाति में वे माई के लाल भी थे जो जीवन की अन्तिम घड़ी तक मानवता के पुजारी बने रहे। एक स्थान पर एक ब्राह्मण ने जो मुसलमानों की छाया से भी दूर रहता था, हमला होने पर उनकी जिस प्रकार रक्षा की वह मानवता के इतिहास की एक पवित्र कहानी है :

दृश्य पाँच

(गुण्डों का शोर उठता है।)

गुण्डे : हर हर महादेव। म्लेच्छों को नष्ट कर दो। उन्हें मार दो।

ब्राह्मण : तुम लोग कहाँ जा रहे हो?

गुण्डा १ : मुसलमानों को कत्ल करने।

ब्राह्मण : पर यहाँ कोई मुसलमान नहीं है।

गुण्डा २ : है क्यों नहीं? ये लोग कौन हैं?

ब्राह्मण : मेरे पड़ोसी।

गुण्डा १ : क्या मतलब?

ब्राह्मण : मतलब यह कि जब तक मैं जीवित हूँ, तुम उन लोगों को छू तक नहीं सकते।

गुण्डा २ : ब्राह्मण ! तुम हमारे पूज्य हो; लेकिन अगर तुम हमारे रास्ते से न हटे तो हम तुम्हें भी मार डालेंगे !

ब्राह्मण : तो मार डालो । मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ ।

गुण्डा २ : ब्राह्मण ! तुम जाति के साथ विश्वासघात कर रहे हो ।

ब्राह्मण : हो सकता है, लेकिन मानवता, जाति से बड़ी होती है । मैं उसके साथ विश्वासघात नहीं कर सकता ।

भीड़ : इसे हटा दो, इसे भी मार दो ।

गुण्डा १ : ठहरो भाइयो, ठहरो ! ब्राह्मण ! क्या तुम्हारा यही निश्चय है ?

ब्राह्मण : हां, मैं जीतेजी उन पर संकट नहीं आने दूंगा ।

गुण्डा ३ : तुम नहीं हटोगे ?

ब्राह्मण : नहीं भाई । मैं नहीं हटूंगा । तुम्हें ही हटना होगा । तुम्हें मानवता की रक्षा करनी होगी ।

सूत्रधार : और यही हुआ । गुंडे ब्राह्मण के साहस से पराजित होकर लौट गये । एक और स्थान पर मुसलमानों ने अपने एक हिन्दू पड़ोसी परिवार को कत्ल करना चाहा तो एक मुस्लिम युवती उनके सामने आ खड़ी हुई :

दृश्य छः

(शोर)

अल्ला हो अकबर ! काफिरों को कत्ल कर दो ।

गुण्डा १ : अरे-अरे ! वह कौन है ?

गुण्डा २ : अरे, वह तो कोई मुसलमान औरत है । वह यहाँ क्यों आई ? पूछो ।

गुण्डा १ : तुम कौन हो और यहाँ क्यों आई हो ?

युवती : मैं तुम्हारी हमराही हूँ और अपने पड़ोसी की मदद

करने आई हूँ। मैं तुमसे दरख्वास्त करती हूँ कि तुम इन्हे कुछ मत कहो।

गुण्डा — (हँसकर) तो आप काफिरो की वकालत करने आई हैं। जाओ जाओ, घर मे बैठो। तुम्हारा इस तरह बाहर निकलना ठीक नही है।

युवती — क्या ठीक है क्या नही, यह मैं जानती हूँ। आप यहाँ से लौट जाइये।

गुण्डा १ — हम काफिरो को कत्ल करके लौटेंगे।

युवती — यहाँ कोई काफिर नही है। ये मेरे पडोसी हैं और पडोसी की हिफाजत हजरत के हुक्म के मुआफिक मेरा फर्जअव्वल है।

गुण्डा २ — लडकी, ज्यादा बक बक मत करो। सामने से हट जाओ।

युवती — मैं नही हट सकती। अगर तुम लोग एक कदम भी आगे बढे तो मैं कपडे उतारकर यही लेट जाऊँगी।

सूत्रधार — इस बहादुर युवती के सामने ये गुण्डे अधिक न ठहर सके और लौट गए। एक तीसरे स्थान पर एक सरदारजी ने न केवल अपने पडोसी को अपने घर मे शरण दी, बल्कि अपने सब परिवार को लेकर उसका घर लूट लाये और उसे सौंप दिया। उन जैसे माई के लालो ने ही उन दिनो मिटती हुई मानवता को जीवन दान दिया। और इन सबके ऊपर थे महात्मा गाधी जो अपनी जीवन सन्ध्या मे कराहती हुई मानवता की पुकार सुनकर अकेले ही दावानल मे घुसते चले गये। उन्होने जातियो के खोये हुए विश्वास और सद्भाव को वापस लाने के लिये प्राणो की बाजी लगा दी। नोआ-खाली की यात्रा ससार की एक ऐसी यात्रा है जिसकी

कोई तुलना नही है। नगे पैर, हाथ मे लकडी थामे टैगोर के 'एकला चलोरे' गीत की ध्वनि पर एक-एक कदम उठाते हुए वे गाव गाव घूमते थे। एक ओर इस प्रकार दावानल सुलग रहा था, दूसरी ओर घटनाएँ तेजी से पलट रही थी :

स्वर १ : १२ नवम्बर सन् १६४७ को महामना मालवीयजी साम्प्रदायिक उत्पातो से दुखी होकर चल बसे।

स्वर २ : ६ दिसम्बर सन् १६४६ को ब्रिटिश सरकार ने एक घोषणा द्वारा मुस्लिम लीग को विधान परिषद् से बाहर रहने की छूट दे दी।

स्वर ३ : ६ दिसम्बर को विधान सभा का अधिवेशन आरम्भ हुआ।

स्वर ४ : २० फरवरी १६४७ को प्रधान मन्त्री मि० एटली ने जून सन् १६४८ तक भारत को स्वतन्त्रता देने की घोषणा की :

स्वर ५ लार्ड वेवल असफल होकर लौट गए और उनके स्थान पर लार्ड माउण्टबेटन वायसराय बनकर आए।

सूत्रधार : लार्ड माउण्टबेटन ने यहाँ आकर स्थिति का गम्भीरता-पूर्वक अध्ययन किया तो उन्हे निश्चय हो गया कि भारत जून सन् १६४८ तक स्वतन्त्रता की प्रतीक्षा नही कर सकेगा। चारो ओर से विध्वसक शक्तियाँ सिर उठा रही थी और पाकिस्तान की माँग प्रबल हो रही थी। इसलिए वे लन्दन गए और ३ जून को लौटकर उन्होने घोषणा की :

स्वर १ : भारत १५ अगस्त सन् १६४७ को एक स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित किया जावेगा।

स्वर २ : मुस्लिम लीग को पाकिस्तान दे दिया जावेगा।

सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।
वन्देमातरम्।

(तालियों की गड़गड़ाहट)

राजेन्द्र बाबू — इतिहास के इस अहम मौके पर जब वर्षों के र
जद्दोजहद के बाद हम अपने देश के शासन की
अपने हाथों में लेने जा रहे हैं, हमें उस पर
परमात्मा को याद करना चाहिए जो मनुष्यों ‹
का भाग्य-विधाता है। हम उन अनेकानेक, ज्ञ
अज्ञातों, पुरुषों और स्त्रियों के प्रति श्रद्धाजंलि
करते हैं जिन्होंने इस दिन की प्राप्ति के ि
न्योछावर कर दिए···यह उनकी तपस्या अ
का फल है जो हम यह दिन देख रहे हैं। हा
श्रद्धा और भक्ति का उपहार महात्मा गांधी
भेंट करें। तीस वर्षों से वह हमारे पथ प्रदर्शक
मात्र आशा और उत्साह की ज्योति बने र
उन्होंने हमारे हाथों में सत्य और अहिंसा का ब
अस्त्र दिया जिसके जरिए बिना हथियार उठा
स्वराज्य का अनमोल रत्न, इतने कम दाम में ा
देश व यहाँ के करोड़ों आदमियों के लिए हा
लिया (तालियाँ)

एक स्वर — अब सब सदस्य और आमन्त्रित व्यक्ति स्वत
लिए प्राण देने वाली हुतात्माओं की स्मृ
होंगे।

(दो क्षण का मौन)

वही स्वर — अब प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू प्र
की स्वीकृति के लिए प्रस्ताव करेंगे।

प० नेहरू . एक अरसा गुजर चुका, जब कभी हमने अपने भाग्य का निपटारा करने का निश्चय किया था और अब समय आया है जबकि हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेंगे। पूर्ण रूप मे नही, फिर भी काफी बडे हिस्से मे। ठीक आधी रात के समय, जबकि दुनिया सोती है, भारत नई जिन्दगी की जागृति प्राप्त करेगा।···ऐसे गम्भीर अवसर के लिए यह सर्वथा अनुकूल ही है कि आज हम भारत तथा जनता की सेवा और उससे भी बडे मानव-हित के प्रति अपने को अर्पित करने की प्रतिज्ञा करें···
(तालिया, शोर, घडी मे बारह बजने का स्वर, बारह घण्टे बजते हैं)

समवेत स्वर : इस शुभ साइत मे हिन्दवासियो ने त्याग और तप से स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है। मैं जो इस विधान परिषद का एक सदस्य हू, अपने को बडी नम्रता से हिन्द और हिन्दवासियो की सेवा के लिए अर्पण करता हू ताकि यह प्राचीन देश ससार मे अपनी उचित और गौरवपूर्ण जगह पा ले और ससार मे शान्ति स्थापना करने और मानवजाति के कल्याण मे अपनी पूरी शक्ति लगाकर खुशी खुसी हाथ बटा सकें।

(तालियां, हर्ष)

राजेन्द्र बाबू . मैं प्रस्ताव करता हू कि वायसराय महोदय को यह सूचित कर दिया जाय कि भारत की विधान सभा ने भारत के शासन का भार सभाल लिया है।

(जोर की तालियां, हर्ष)

हंसा मेहता : इस पवित्र और महान् अवसर पर मैं भारत की नारियो की ओर से यह राष्ट्रध्वज भेंट करती हू। करोडो नारियो ने मुझे ऐसा करने को कहा है। और यह

सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् !
वन्देमातरम् !

(तालियों की गड़गड़ाहट)

राजेन्द्र बाबू — इतिहास के इस अहम मौके पर जब वर्षों के संघर्ष और जद्दोजहद के बाद हम अपने देश के शासन की बागडोर अपने हाथों में लेने जा रहे हैं, हमें उस परम पिता परमात्मा को याद करना चाहिए जो मनुष्यों और देशों का भाग्य-विधाता है। हम उन अनेकानेक, ज्ञात और अज्ञातों, पुरुषों और स्त्रियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिन्होंने इस दिन की प्राप्ति के लिए प्राण न्योछावर कर दिए···यह उनकी तपस्या और त्याग का फल है जो हम यह दिन देख रहे हैं। हम अपनी श्रद्धा और भक्ति का उपहार महात्मा गांधी को भी भेंट करें। तीस वर्षों से वह हमारे पथ-प्रदर्शक व एक-मात्र आशा और उत्साह की ज्योति बने रहे हैं। उन्होंने हमारे हाथों में सत्य और अहिंसा का वह अचूक अस्त्र दिया जिसके जरिए बिना हथियार उठाए हमने स्वराज्य का अनमोल रत्न, इतने कम दाम में इतने बड़े देश व यहाँ के करोड़ों आदमियों के लिए हासिल कर लिया··· (तालियाँ)

एक स्वर — अब सब सदस्य और आमन्त्रित व्यक्ति स्वतन्त्रता के लिए प्राण देने वाली हुतात्माओं की स्मृति में मौन होंगे।

(दो क्षण का मौन)

वही स्वर — अब प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू प्रतिज्ञा-पत्र की स्वीकृति के लिए प्रस्ताव करेंगे।

प० नेहरू : एक अरसा गुजर चुका, जब कभी हमने अपने भाग्य का निपटारा करने का निश्चय किया था और अब समय आया है जबकि हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेंगे। पूर्ण रूप मे नहीं, फिर भी काफी बडे हिस्से मे। ठीक आधी रात के समय, जबकि दुनिया सोती है, भारत नई जिन्दगी की जागृति प्राप्त करेगा।...ऐसे गम्भीर अवसर के लिए यह सर्वथा अनुकूल ही है कि आज हम भारत तथा जनता की सेवा और उससे भी बडे मानव-हित के प्रति अपने को अर्पित करने की प्रतिज्ञा करें...
(तालिया, शोर, घडी मे बारह बजने का स्वर, बारह घण्टे बजते हैं)

समवेत स्वर : इस शुभ साइत मे हिन्दवासियो ने त्याग और तप से स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है। मैं जो इस विधान परिषद का एक सदस्य हूं, अपने को बडी नम्रता से हिन्द और हिन्दवासियो की सेवा के लिए अर्पण करता हू ताकि यह प्राचीन देश ससार मे अपनी उचित और गौरवपूर्ण जगह पा ले और ससार मे शान्ति स्थापना करने और मानवजाति के कल्याण मे अपनी पूरी शक्ति लगाकर खुशी-खुशी हाथ बटा सकें।

(तालियां, हर्ष)

राजेन्द्र बाबू : मैं प्रस्ताव करता हूं कि वायसराय महोदय को यह सूचित कर दिया जाय कि भारत की विधान सभा ने

उचित ही है कि जो झंडा इस भवन पर फहराया जाए वह भारत की भेंट हो।

(तालियाँ, हर्ष)

सूत्रधार . इसके बाद 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा' और 'जनगणमन' गाए गए और विधान सभा का वह महान और असाधारण अधिवेशन समाप्त हो गया। और उधर स्वातन्त्र्य सूर्य का दर्शन होते ही विभाजन की कसक के बावजूद देश भर मे उमग की लहर दौड गई। स्थान-स्थान पर सभाएँ हुई, बच्चो मे मिठाइयाँ बँटी, दरिद्रो को भोजन कराया गया, रात्रि को नगर विद्युत् बल्वो से, ग्राम तेल दीपो से जगमगा उठे। 'महात्मा गाधी की जय' तो अणु-अणु मे गूज रही थी और भारत का तिरगा राष्ट्रध्वज आकाश मे ऊँचा लहरा रहा था।

(हर्ष के स्वर उठते रहते हैं)

इस प्रकार भारत स्वातन्त्र्य-सग्राम का अन्त हुआ, उसे वह स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई जिसके लिए दो शताब्दी से उसकी सन्तान निरन्तर जूझ रही थी।

कवि : मुक्त पवन मे साँस ले रहे हैं अब भारतवासी।
पूरब मे प्रकाश फैला है स्वर्णिम उषा प्रकाशी,
भारतवर्ष स्वतन्त्र हुआ है गाओ नया तराना।
नया एशिया जागा है अब बदला नया जमाना।

०